शशि प्रकाशन

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रोमिशा मिश्रा

सम्पादक

चंद्रेश

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रोमिशा मिश्रा

शशि प्रकाशन

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

(व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

संपादक

चन्द्रेश

प्रोमिशा मिश्रा

शशि प्रकाशन

ISBN : 978-93-92691-44-7
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
© लेखिका : प्रोमिशा मिश्रा

पहिल संस्करण (पेपरबैक) : 2023 ई.

मूल्य : 400.00 रुपया

प्रकाशक
शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ, वाया-बलुआ बाजार
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)
फ़ोन : 9015323779 / 9818443451
ई-मेल : shashi.prakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.shashiprakashan.com

आवरण चित्र : रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
टाइपसेटिंग : बुलबुल मिश्रा

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

RAM BHAROS KAPARI BHRAMAR : Vyaktitwa Ewam Krititwa
Edited by Chandresh, Written by Promisha Mishra
Published by Shashi Prakashan
Village-Kalikapur, Post-Lakshminia, Via-Balua Bazar, District-Supaul-854339 (Bihar)
Price : ` 400.00

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

तरबोरासँ प्रभावित, इन्द्रधनुषी सातो रंगक प्रतिच्छविकेँ अपनामे समेटने-बटोरने राम भरोस कापड़ि' भ्रमर'क वैविध्य साहित्य जनसमाजसँ जुड़ल अछि। हिनक रचना जन-जनसँ प्रभावित ओ परिवेशगत समय आ समाजसँ सम्बन्ध बनबैत अछि। हिनक दृष्टि शोषित-पीड़ित समाज दिस टकटकी लगौने सत्यानुभूति करबैत अछि। जनसमाजक हृदयक करुणा, पीड़ा, दया, प्रेम आदिकेँ उभारि क' जनसंवेदनाकेँ मानवीय मूल्यबोधक संवाहक भ' जगबैत अछि।

जीवन-संघर्षमे जूझैत चलैत चढ़ैत-बढ़ैत कोनो रचनाकारक आत्मसजगता जँ मौलिक विचारधारामे कलात्मक ढंगे स्वाभाविक यथार्थबोधक उपस्थितिबोध अपन रचनामे प्रस्फुटित क' दैत अछि तँ ओहन रचनाकार युग आ समयक अतिक्रमण क' अपन एकटा फूट इतिहास रचि नवताबोधक सनेस बिलहि दैत अछि। अपन समय आ युगक अतिक्रमण क' हवाक विरोधमे चलि क' संकटापन्न स्थितिसँ जूझैत संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारब अबस्से सजग ओ सचढ़ रचनाकारक दायित्वबोध थिक। बहुआयामी व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी भ्रमरक साहित्यिक अवदान विशेषे अछि। ओ सदाबहार लेखक छथि जे रचनाकेँ सदाजीवी बना क' ओहिमे अपन कलात्मकताक संग अपन वैविध्यपूर्ण विवेककेँ झोंकि पझाइत चिनगीकेँ लहका दैत छथि। जेँ ओ सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक छथि तेँ ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिएँ साहित्यिक, राजनैतिक आ विचारधाराकेँ एकसंग इंगित करैत छथि। देखब, परेखब आ स्पष्टत: इमानदारीपूर्वक काज करब अबस्से एकटा चुनौती ठाढ़ करैत छथि। रामभरोस कापड़ि' भ्रमर' अबस्से एहि चुनौतीकेँ स्वीकारैत अपन कलमक लोहा मनबैत छथि। लोक चेतनाक रचनाकार भ्रमर पाठककेँ समय आ संस्कृतिकेँ बुझयबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। एहि हेतु हिनक रचना अबस्से परम्पराकेँ नव रूपमे परिभाषित करैत वर्तमानक दुरुक्खा पर भविष्यसँ अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि। साहित्य आ संस्कृतिसँ सम्बन्ध हिनका छात्रवस्थाहिसँ जागल। हिनक

पहिल प्रकाशित रचना 'इमानदार बालक' जे 1964 ई मे मिथिला मिहिरक नेनाभुटकाक चौपाड़िमे आयल अछि। तकर बाद पीठियाठोक आठ गोट गीतक संकलन 'जवानीक दिन' 1965 ई मे प्रकाशित भेल।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जन्म 2008 साल साओन 22 गतेक' प्रमाणपत्रक अनुसारें बघचौड़ा, जिला-धनुषा, जनकपुर अंचल, गाबिस बघचौड़ा, वार्ड नं-1 मे भेल।

बघचौड़ा गामक नाम पड़ल हेतैक जे एतय बाघ चराउर करैत छलैक। एहि ठामक जमीन कोह-कहबैत छलैक जे अढ़ाइ-तीन किलोमीटर दूरी धरि छल। हिनक जन्म सुसम्पन्न परिवारमे भेल रहनि। गाम बघचौड़ा की कही, परोपट्टामे सभसँ धनीक घरमे। हिनक बाबूजीकेँ अग्गह-विग्गह जमीन, लाखक लाख लगानी, जमीन्दारोकेँ कर्ज दैत छलथिन। गामसँ बाहर सटले खेत रहनि। गोरहासँ ल' क' कोह धरि। बड़द खड़कै छल तँ ओतहि ऊपर होइत छल। एहि बीचमे आनक जमीन नहि छल। अपने खेतमे लीख। अपने खेतक आरिसँ पानि पटाओल जाइत छल। पटौनी प्रकृति पर निर्भर छल। चूरे पहाड़क पृष्ठभूमि जे पहाड़ 25-30 किमीसँ बेसी नहि होयत। पहिने 900 बीघा बान्ह छलैक। आब 300 बीघाक छैक जे बान्हि क' पटाओल जाइत छलैक। ओना आब बान्हक औचित्य समाप्त भ' गेलैक। गहराइवला बोरिंग धँसाओल गेल छैक, मुदा तैयो उपयुक्त तेना भ' क' नहि छैक। आब पाइप गाड़िक क' प्लग लगाक' मोटरसँ जल टानैत छैक। अर्थात् ढेकुलसँ एक बीघा धरि पटौनी कयल जाइत छैक जाहिमे एक समयमे 5000 सँ 6000 टाका धरि लगैत रहैक, आब हजार लागिए जाइत छैक। धान, गहूम, तोरी, सरिसो आदि मुख्य उपजा छैक। बघचौड़ाक पूब अरहरी नदी जकर चौड़ाइ 25सँ 30 फीट आ गहराइ बेस छैक। गाममे हिनक पिताक स्थिति-पात जेँ पूर्णत: सफल रहनि तेँ अधिकारी नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। कोनो दोकान-दौरी एहन नहि जे हिनक नाम उचरला पर केओ पाइ माँगय। सभकेँ हिनक पिता पर भरोस छलनि। ओ बघचौड़ा गाम पंचायतक तीन खेप प्रधान रहलथि। ओना ओ गामक मुखिया आ तकर बाद वैह पद भ' गेल प्रधान पंच। ओ गामक पंचैती करथि। हिनके बाबू राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय बघचौड़ा खोललथि। ओ स्कूलमे अध्यक्ष भेलाह वा कही तँ सर्वेसर्वा यैह रहथि। एहीमे मैथिलीक नेपालक प्रतिष्ठित पत्रकार ओ साहित्यकार श्रीश्याम सुन्दर कापड़ि 'शशि' शिक्षक रहथि आ राजविराज कॉलेजमे प्राध्यापक भेलथि। ओना वर्तमान समयमे आर आर कैम्पस, जनकपुरमे छथि। हिनक बाबूजीक बाद हिनक जेठ भाय सुकुमार कापड़ि अध्यक्ष भेलाह आ तकर बाद राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' दस वर्ष लगभग एहि पदकेँ सम्हारलनि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' घरैसी (घरैया) शिक्षा प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल

गुरु मधुकरही निवासी गणेश लाल, जे धरती पर भट्ठासँ ककहरा लिखेने छलाह। अ आ सँ व्यावहारिक गणित धरि। तकर बाद निम्न माध्यमिक विद्यालय बेलहीमे वर्ग 1 सँ 3 धरि पढ़लनि। ओहि विद्यालयक नाम एखन थिक माध्यमिक विद्यालय बेलही, जे बघचौड़ासँ 2 किमी अछि। पयरे आबाजाही। बहुत कठिनसँ गेनाइ-अयनाइ। बहादुर पकड़िक' ल' जानि। पार्टी आ कचरा, करचीक कलम, बोड़ा ओछाक' बैसब आदि। वर्ग 4 सँ मैट्रिक अर्थात् एसएलसी सरस्वती मा बि जनकपुर, साल 2025।

एकटा बात स्पष्ट क' देब उचित होयत जे 12 वर्षक अवस्थामे भगवान पट्टी (मानसिन्ह पट्टी, ग्राम विसक अन्तर्गत) दलतीया देवीक संग विवाह भेलनि। पाँचम सन्तानमे तीन गोट पुत्र आ दूटा पुत्री छनि। ईहो कहब अनर्गल नहि होयत जे हिनक जन्म जाहि केओट परिवारमे भेल रहनि ताहिमे पढ़ाइ पर ओतेक जोर नहि छल। मुदा, भ्रमर आइ.ए. अर्थात् प्रवीणता प्रमाणपत्रसँ उत्तीर्ण कयलनि। ओ बघचौड़ामे जे पढ़ाइ प्रारम्भ कयने छलाह से कन्हाइ साहु नामक व्यक्तिसँ। ओएह सम्पन्न वर्गक ओहिठाम पढ़बैत छलाह। ओ जनकपुर जे अयलाह से युगल किशोर लाल प्रेरणासँ। वैह हिनक बाबूजीकेँ प्रेरित क' पढ़ौनीक लेल जनकपुर जेबाक हेतु कहलनि। जेँ जनकपुरमे जगह-जमीन रहनि, एखनो छनि तेँ जनकपुरमे पढ़लनि। दोसर, डॉ. धीरेन्द्र सन अभिभावक भेटलनि आ हुनकेसँ प्रभावित भ' अपन रचना-संसार बनौलनि।

ओ बच्चेसँ हिन्दी पढ़ैत छलाह। पत्र-पत्रिका पढ़लोपरान्त हिनका भेलनि जे हमहुँ लिखि सकैत छी। खासक' लिखबाक अनुभूति ओहि समयक लोकप्रिय उपन्यासकार कुशवाहाकान्त, गुलशन नन्दा आ कर्नल रंजीतक जासूसी उपन्यास सभ पढ़िक' लगलनि। गोविन्द सिंहक 'पपिहरा बाजय आधी रात' विशेष नीक लगैत छलनि। बालक, पराग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नर-नारी पत्रिका पटना आदिक पाठक ओ रहथि। हिनक लेखनमे विशेषक' यौनसँ सम्बन्धित नर-नारी प्रभावित कयलक आ आयल। पूर्वक रचनाकेँ देखिक' हिनका नारी मनोभावक विशेषज्ञ कहल जा सकैत अछि।

ईहो कहि देब उचित होयत जे भ्रमर नेनावस्थेसँ चन्सगर रहथि। जहिना पढाइमे तहिना धौंस जगयबामे। कही तँ Hero अर्थात् Healthy, Educated, rich and organisation. कहब जे पढ़िते छलाह से अबस्से। जनकपुर अयलाक बाद ओ अपन भैयाक संग कोनो नव सिनेमाकेँ प्रथम पालीमे देखिते छलाह। डॉ. धीरेन्द्रक नेपाल अयलाक बाद एक नम्बरक शिष्य भ्रमर रहथि। डॉ. धीरेन्द्र जँ नहि रहितथि तँ भ्रमर नहि रहितथि। दुनू अगले-बगलमे रहैत छलाह। ओहुना डॉ. धीरेन्द्रक जीवनमे

शिष्योपशिष्य ढेर-ढाकी छनि मुदा, भ्रमर आ भुवनेश्वर पाथेय महत्वपूर्ण रहलनि। सर्वहारा वर्गक प्रतिनिधित्वकेँ ओ चिन्हलनि।

मैथिली साहित्य परिषद्क गठन भेल तँ सचिव भेलाह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'। विद्यापति पर्व समारोह जानकी मन्दिरक प्रांगणमे मनाओल गेल। मातृका प्रसाद कोइराला (पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल) मुख्य अतिथि रहथि।

हिनका दहिना कपार पर चोटक चिह्न छनि। आम ओ रखैत छलाह। सतघरा खेल खेलाइत छलाह। आम लूटबाक लेल दौगलनि तँ एहि क्रममे टाटमे लागिक' कपार फूटलनि। ओ ओहि समयमे चतुर्थ वर्गक छात्र छलाह। तत्क्षण ओ बुझबो ने कयलनि जे कपार फूटि गेल अछि।

1968-69मे हिनका अपन जेठ भाय सुकुमार कापड़िक धनुष-तीरसँ हिनक आँखिमे तीर लागल। मायक मानता छठि माइक अर्घ्य छनि जे आइयो देल जा रहल अछि। सूपमे सभ वस्तु-जात द' क'। ओ आनो कतेको मानता केने रहथिन।

स्वास्थ्य तँ यैह रहनि जे बच्चामे बेस मोटगर-डटगर वा कहीं तँ भोकना बिलाड़ रहथि। भैंसक दूध, घीक आ मीठा छुच्छे खाथि। सन्नूकमे गूड़क चेकी आ सौंसे टारामे बरकायल घीक भेटनि से बेस पाबथि। डॉ. आर एल सिन्हा गणितक प्राध्यापक कहने रहनि हिनका जे आब'वला समयमे गाड़ी पर तोरा लादि क' ल' जाय पड़त। हिनक बाबूक भट्ठी सुरक्षित रहनि आ खूब पीबथि। मुदा, हुनक निधन 84 वर्षक अवस्थामे भेलनि। ओहि परिवेशमे रहितो भ्रमर कहियो मद्यकेँ हाथ नहि लगौलनि। ओना तेना भ' क' चाह-पान वा कही तँ दू टुक सुपारियो ने पबैत छथि। एहि वातावरण आ परिवेशसँ अपनाकेँ फराक रखने छथि।

हिनक प्रिय संगी केओ नहि रहनि। खासक' एहि स्तरक। ओना छात्रजीवनमे मुजफ्फरपुरक कामेश्वर प्रसाद अबस्से दस-पन्द्रह वर्षक मीत रहनि।

ओ जहिया एमए कयलनि आ डॉ. धीरेन्द्रक कृपापात्र रहथि तँ ओ चाहितथि तँ गुरुक कृपा-फलसँ मैथिली विषयक प्राध्यापक रहितथि। मुदा, ओ एहि सेवाकेँ नकारलनि आ पत्रकारिता दिस ढुकलाह। तकर कारण छल जे आर्थिक सम्पन्नता। जेँ कोनो अभाव नहि खटकलनि तेँ नोकरीक विचार मोनमे नहि अयलनि। ओ मनमौजी प्रकृतिक रहथि तेँ स्वतंत्र जीवन-यापन करैत रहल छथि।

2026-27 सालमे ओ वैदेही साप्ताहिक कार्यालय प्रतिनिधि रूपमे उभरलाह। 2049 सालसँ कान्तिपुर राष्ट्रीय दैनिक पत्रक जनकपुर, संवाददाता शुरूक 5 वर्ष धरि रहलाह। प्रकाशक-सम्पादक भ' ओ मैथिली 'अर्चना' पत्रिका प्रकाशित कयल। तकर बाद 'अंजुली' नेपाली मासिक आ मैथिलीमे द्वैमासिक 'आंजुर' प्रकाशित कयल।

2039 साल कार्तिक 4 गतेसँ 'गामघर' प्रकाशित भेल जे नेपालसँ प्रकाशित पहिल आ एकमात्र, समाचारपत्र साप्ताहिक अछि। जकर प्रकाशन आइयो भ' रहल अछि। 'सुप्रभात' जे नेपाली दैनिक तकर आरम्भिक सम्पादक यैह रहथि। 'जनकपुर एक्सप्रेस' दैनिक अखबारक सम्पादन-प्रकाशन 2055 सँ यैह करैत छथि।

पचास वर्षक इतिहासमे नेपाल सरकारक पहिल बेर साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पद पर राजनीतिक नियुक्ति जे से नेपाल भरिमे 2021-22मे भेल अछि से रामभरोस कापड़ि भ्रमरकेँ बनाओल गेल। तहिना प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नेपाल सरकार द्वारा जे पहिल बेर मैथिली साहित्यकार भेल से हिनके नाम एहि खातामे दर्ज छनि।

नेपालमे 12 Aspect मे भ्रमर पहिल छथि।

1. पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा प्रतिष्ठान पुरस्कार 50,000 टाकाक हिनका देल गेलनि।
   ओ एहि लेल 2052सँ पुरस्कृत छथि।
2. 'नहि आब नहि' हिनक पहिल प्रेम काव्य छनि जे त्रिक् भाषामे प्रकाशित भेल अछि।
3. मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित नेपालक पहिल कथाकारक पोथी अछि 'तोरा संगे जेबौ रे कुजबा'।
4. नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित गोष्ठीमे 2048 सालक पुरस्कार पाँच हजार टाकाक 'शूली पर टांगल इजोत'केँ भेटल अछि।
5. कोनो नेपालीय नाटक 'एकटा आओर वसन्त' नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे मंचित भेल अछि। एहि पोथीक तीनटा संस्करण भ' चुकल अछि।
6. अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोहमे एहि नाटककेँ द्वितीय पुरस्कारसँ प्रकाशित कयल गेल अछि।
7. 2067 सालमे हिनका 'पहिल लोक साझा संस्कृति पुरुष' मैथिली साहित्यकार केँ भेटल।
8. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समितिसँ भेटल।
9. शेखर सम्मान भेटलनि। ई पुरस्कार शेखर प्रकाशनक देन थिक।
10. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान' भेटल छनि।
11. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा मुम्बईमे 'मिथिला रत्न' सम्मानसँ सम्मानित छथि।

12. 2069 क' विद्यापति पुरस्कार प्राप्त कयने छथि 2 लाख टाकाक।
13. 'पार्वती सम्मान' सिसोदिया सर्लाही द्वारा भेटल छनि।

एहिना आर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित भेल अछि। सम्मानक बोझ तरओ स्वयं दबल छथि। हिनका आब जे सम्मान भेटैत छनि से हिनक उपलब्धि अबस्से थिक। मुदा, हमरा लगैत अछि जे आब हिनका लेल सम्मान बोझ परक आँटी थिक। लेखकक संग हिनक सम्पादनमे रुचि रहलनि अछि। सम्पादकक सन्धिविच्छेद अछि सम+पादन्। यैह क्रिया सम्पादन कहबैत अछि। संस्कृत पदमे सम् उपसर्ग लागि क' सम्पादक शब्द बनैत अछि। कोनो लेखकक लिखल रचनाकेँ व्याकरणक दृष्टिसँ ठीक करब अर्थात् सभ पदकेँ सम् यानि ठीक करबाक क्रिया सम्पादन थिक। कोनो काजकेँ पूरा क' पाठकक सोझाँ आनब सम्पादकक काज थिक। ओना ओ 'गामघर'केँ समाचार पत्र बनौने छथि आ 'आंजुर'केँ साहित्यिक। मुदा, 'गामघरमे सेहो साहित्यिक रचना प्रकाशित भ' जाइत अछि। एकटा बात ई ध्यान रखबेक थिक जे साहित्य जँ पत्रकारितामे अबैत अछि तँ सोनमे सुगन्धि होइत अछि। तहिना जँ साहित्यमे पत्रकारिताक तत्व बेसिए घोंसिया जाइत अछि तँ गूड़ गोबर होयबाक सम्भावना बेस बढ़ि जाइत अछि। कारण साहित्यमे पत्रकारिता आबि क' बेसी सूचनात्मक आ तात्कालिक बना दैत अछि जखन कि साहित्य पत्रकारितामे आबि क' अनुभूत सत्यकेँ जगजियारक' मानवीयगुण ओ दृष्टिकोणक आधार पर कही तँ पाठकक अन्तर्मनकेँ अबस्से बेसिए स्तर धरिकेँ झकझोरि दैत अछि।

भ्रमर कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, लोकसाहित्यक आ लोकसंस्कृति, साक्षात्कार, यात्रा संस्करण, निबन्ध, डायरी, शोध विषयक आदि लिखलनि। हमरा जनैत ओ मूलत: कवि आ तकर बाद कथाकार छथि। ओ बहुविधवादी छथि तँ स्वाभाविक अछि जे विभिन्न विधामे हिनक रचना दम-खमक संग आयल अछि। हेनरी डेविड थोरो कहने छथि, 'सभसँ पैघ कलाकार वैह होइत अछि जे अपन जिनगीकेँ कलाक विषय बना लैत अछि'। भ्रमर यैह काज कयने छथि। ओ स्पष्टत: लिखने छथि— *जीवन एकटा गति छैक / गतिक संग मनुक्ख आगाँ बढ़ैत अछि / संकल्पित ठाम धरि जाएब* (नहि, आब नहि—अर्चना, वर्ष-8 कार्तिक 2087)। हिनक पोथी 'नहि, आब नहि' पहिने कुमार अभिनन्दनक नामसँ 'अर्चना' 24 पृष्ठमेप्रकाशित भेल। दीर्घ कविताक ई पोथी अछि। ओना हिनक पहिल पोथी कविता संग्रह 'बन्न कोठरी औनाइत धुआँ' अछि जे 2021 सालमे आयल अछि।

हिनक वैविध्य विषयक लेखनक उद्देश्य रहल अछि :

1. विभिन्न विधाकेँ सुपुष्ट करब।

2. सामाजिक व्यवस्थाकेँ बदलबाक प्रयास करब।
3. इमानदारीपूर्वक अपन बातकेँ राखब।
4. ओ जेँ अपन वर्गक विरल लोक छथि तेँ सर्वहारा वर्गक बातकेँ ध्वनित करब। अर्थात मूल्यबोधक संवाहक बनब।
5. तथाकथित वर्ग द्वारा जे चक्रव्यूहक घेरा बनाओल गेल अछि तकरा अपन लेखनीबलें तोड़ब। कही तँ कमजोर आ बेबस वर्गक बात उठायब।
6. एहन पैघ लकीर घीचब जकरा केओ लेखनबलेँ छोट नहि क' सकय।
7. दृश्य आ ध्वनिक सेहो एकटा अर्थ होइत अछि। एहि दिस ध्यान तेना भ' क' नहि जाइत अछि। तेँ एकर सार्थक महत्ता उपस्थापित करब।
8. पठन, लेखन, प्रकाशन आ वितरण दिस सचेष्ट भ' नव पीढ़ीकेँ भविष्यक बाट देखायब।
9. लेखनक हेतु भाषा ओ शैलीमे नव-नव सम्भावनाकेँ खोजब।
10. नव पीढ़ीक निर्माण करब जे आत्म सजग भ' जनसमाजमे नव चेतना-जगबय।

ओ प्राय: बेसिए विधामे हाथ अजमौलनि। एतेक दूर धरि जे समकालीन कविताक सशक्त हस्ताक्षर होइतो ओ गीत, गजल आदिक संग 'पिरामिड' जे नव विधा थिक सेहो लिखलनि। कथा, उपन्यास, निबन्ध आदि लिखितो ओ नाटक लिखबाक दिस अग्रसरित भेलाह। प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नाटक महोत्सवक बात उठल आ एकटा वरिष्ठ नाटककारक नाटक अस्वीकृत भ' गेल तँ मात्र सात दिनक अभ्यन्तर तत्कालीन उपकुलपति डॉ. ईश्वर बरालक आग्रह पर 'एकटा आर वसन्त' नाटक लिखायल आ मंचित भेल। एही नाटक पर फिल्म बनि नेपाल टेलिविजनसँ प्रसारित भेल।

ओ छोट-छोट नाटक प्राय: घंटा, आध घंटा धरिक लिखैत छथि। 'नेताजी आबि रहल छथि', 'आ बौधू बाजि उठल', 'सूली पर इजोत' आदि बेस चर्चित-प्रशंसित भेल। 'लोकनाट्य जट-जटिन' (2064 साल), 'भैया अएलै अपन सोराज' (2067 साल) आदि दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानक मंच पर बेस जमल अछि। जनकपुरधाम आ आनो ठाम जेना पटना आदिमे हिनक नाटक मंचित भेल अछि। रंगमंचसँ जुड़ब आ रंगभाषा अर्जित करब श्रमसाध्य आ समय साध्य दुनू अछि।

ओ कैकटा पोथीक सम्पादन दक्षतापूर्वक कयने छथि। जेना 'लावाक धान' (2050 साल), 'गामघर'क 2046क कार्तिक मासक आठम वार्षिक विशेषांक मथुरानन्द चौधरी माथुर लिखित 'त्रिशूली' सम्पूर्ण खण्डकाव्य जे 187 पृष्ठमे आबद्ध

अछि। 'गाम घर'मे तँ कैकटा वार्षिक अंक 'संस्कृति विशेषांक' वर्ष-4, अंक-1, कातिक 2042, अक्टू-नवं- 1985, मू. 25 टाका, नेपालक मैथिली पत्रकारिता 2044 साल आदि अछि। 'महाकवि विद्यापति आ नेपाल', 'लोकनायक सहलेस' दू खण्ड, 'लोकगाथा नायक दीनाभद्री' (2070 साल) आदि बेस चर्चित-प्रशंसित अछि।

नाटकक सम्बन्धमे एतेक तँ कहले जायत जे कथा, कविता, निबन्धादि जकाँ एके सुरमे कखनो नाटक नहि लिखल जाय तँ नीक। कारण, एहन नाटक लिखब नाटकक क्षमताक सौन्दर्यकेँ क्षति पहुँचायब थिक। कही तँ- 1. थियेटर एक्टिविस्ट 2. नियमित नाटक देखब 3. रंगममचक आवश्यकतानुकूल नाटकक शिल्प, भाषा, पात्रक चरित्र चित्रण, संवाद अदायगी, विषय- वस्तु आ बुनावटि आदि पर ध्यान केन्द्रित करब थिक।4. दृश्य संयोजनकेँ बुझब 5. पात्रक अन्तर्द्वन्द्व आ बाह्य चरित्र-चित्रणकेँ ध्यान राखब 6. शब्दक मितव्ययिता 7. मंचीय प्रदर्शन आदि विशेष महत्व रखैत अछि। नाटककार भ्रमर एहि सभ बातकेँ नीक जकाँ जनैत-बुझैत नाटक लिखैत छथि। संगहि गीतक परिकल्पना सेहो करैत छथि। ओना तँ ओ प्रारम्भसँ नाटकक मंचन आ सिनेमा भरपूर देखथि। ओ एतिहासिक नाटक 'रानी चन्द्रावती' 2045 सालमे लिखलनि। मुदा, नाटक दिस हिनक बढ़ैत रूझान हिनका प्रगति आ प्रयोगपरक नाटक लिखबाक हेतु बेस आकृष्ट कयलक। ओ गौरसँ टेलीविजन पर होइत टेलीफिल्म सभकेँ देखथि। अधुनातन दृष्टिएँ ओ नाटक लिखबा दिस प्रवृत्त भेलाह। कारण छलनि हिनक जिद्दपना। ओ जिद्दपनाक फलस्वरूप कैकटा नाटक लिखने छथि। किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि। ततबे नहि, मंचक खगताकेँ देखैत नाट्यमंचन हेतु अपन रुचि लैत कैकटा संस्थासँ सम्बद्ध भेलाह। एतेक दूर धरि जे एहि लेल ओ संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारलनि। अपने तँ नाटक लिखि क' प्रकाशित करबे करथि जे आनोकेँ नाटक लिखबाक हेतु प्रेरित क' प्रकाशित कयलनि।

ओ प्रेमपरक अभिव्यक्ति विभिन्न विधामे बेस कयलनि। मुदा, ओ जखन काठमाण्डूमे पदासीन भेलाह तँ हिनक रचनामे एकटा नव स्तर आयल। ओ अभिव्यक्तिमे मात्र करुणा आ दया-भाव उपजयबला प्रसंगे धरि सीमित नहि रहि मानवीय संवेदनाकेँ बेस जगजियार कयलनि। यैह Turning Point (मोड़) जे समयानुकूल अनुभूत सत्यकेँ प्रतिपादित करबामे भेल। ओ जे बात अपन कथाक माध्यमे कहैयो चाहलनि, मुदा पूर्णत: कहि नहि सकलाह से मानवीय सरोकारकेँ आरो घनीभूत करैत, मानवताक

पक्षमे ठाढ़ होइत, देश-दुनियाक आ खासक' नेपालक परिस्थितिगत परिवेशक उद्घाटन क्रममे मानवीय मूल्यवत्ताकेँ समक्ष रखैत 'घरमुहाँ' उपन्यास ल' अयलाह। एकटा बात ईहो कहब स्वयंसिद्ध अछि जे रचना हिनका पियरगर लगलनि, लगबे कयलनि ताहि पर आनो विधामे कलम चलौलनि। 'शूली पर टांगल इजोत' निस्सन्देह अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपरक नीक कवितामे परिगणित होयत तँ ताहि पर नाटक अछि।

ओ मोनोड्रामा सेहो लिखलनि। टी स्टॉलवाली मुनियाँक व्यथा-कथा ओ दू गोट विधामे लिखलनि। ई सत्य अछि जे मनोभावकेँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु जँ सम्पूर्ण आकार कोनो एकटा विधामे प्राप्त नहि भ' सकैत छैक तँ आनो-आन विधामे रचनाकारक रचना होयब स्वभाविके अछि। ताहिमे भ्रमर ? ओ अपन रचनाकेँ चमकयबा हेतु आन विधामे तँ उपयोग करबे कयलनि जे प्रचार-प्रसारक दृष्टिएँ आन भाषाकेँ सेहो चुनलनि। कही तँ आनो भाषामे अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ पचौलनि। बहुभाषाविद् भ्रमरक योगदान नेपाली, भोजपुरी आदिमे सेहो अछि।

हिनक अन्वेषणपरक दृष्टि जाहि कोनो कारणेँ वन-प्रान्तर वा स्थल-विशेषकेँ देखि-सुनिक' लिखबाक हेतु बाध्य कयलकनि। ओ एहि लेल रने-बने बौआयल छथि। लुम्बिनीक गौतम बुद्धक स्थलसँ ल' क' दीनाभद्री, सलहेस आदि लोकगाथापरक स्थल धरि घुरि आयल छथि। ओहिना मोन अछि जे राजा सलहेसक फुलवाड़ीमे फुलाइत ओ हारम फूल जे असमयमे देखने छलाह। ओना ई फूल स्थानीय भाषामे हारम कहल जाइत अछि, मुदा ई थिक आकिड। ओहि फूलकेँ देखिते ओ पहिने अचम्भित भेलाह आ तकर बाद लौकैत मनुहार पर अतिरिक्त प्रसन्ताक लहरि दौड़ि आयल छलनि। सहजता आ जिज्ञासा दुनू भाव देखायल छल जेना नेनपनक कोनो कल्पित वस्तु भेटि गेल होनि।

ओ चिक्कन फोटोग्राफर छथि। हुनका फोटोग्राफी करबामे बेस रुचि छनि। नव-नव वस्तुकेँ देखब, नव-नव स्थानक परिभ्रमण करब, नव-नव विषय-वस्तुकेँ उठायब वा कही तँ नवताक पक्षधर ओ जिज्ञासु रहल छथि। ठीकसँ बिटिआयब तँ हिनक रचनाकेँ पढ़िते बुझि जायब जँ आलेखक संगहि फोटो सभ-प्रामाणिक, यथार्थपरक आ विश्वसनीय थिक।

ओ ढेर-ढाकी किताब जहिना लिखैत छथि से लगभग पचास धरि होयबा पर हेतनि। तहिना ओ ढेर-ढाकी पोथी कीनैत छथि, संग्रहित करैत छथि, पढ़ैत छथि। ओ स्वयं मानक साहित्यकार छथि। मुदा, जँ कतहु कोनो सन्देह होइत छनि तँ कोनो ने कोनो प्रकारें ताकि-हेरिक' वा सुयोग्य आ तद्विषयक विद्वानगणसँ सम्पर्क क' अपन कलमकेँ साधैत छथि। प्रयास रहैत छनि जे शोधपरक प्रवृत्ति होअय। 'राजकमलक

कथा साहित्यमे नारी' विषयक पोथी छनि। प्राय: ओ एहि पर शोधग्रन्थ लिखबाक प्रयास कयने छथि। जेंकि हिनका डाक्टरी उपाधिक ततेक आवश्यकता नहि बुझयलनि, ओना ई मानद उपाधि एकटा संस्थासँ भेटलो छनि जाहि संस्थाप्रदत पर कतिपय जन अपन नामक पाछाँमे डॉ. लगबितो छथि। ओ अपन शोध प्रबन्ध नियमत: प्रस्तुत नहि कयलनि तेँ की? कतिपय जन तँ हिनक नामक पाछाँ 'डाक्टर' लगबिते छथि।

एकटा बात ई कहि देब आवश्यक अछि जे किनको सुसकेमे गुणानुवाद करी वा भर्त्सना करी तँ ओहि व्यक्तिकेँ ने हित होइत अछि आ ने अहित। सवाल विश्वसनीयताक अछि। जेँ भ्रमर कर्मरत छथि तेँ ढेर-ढाकी हीत-मीत छनि तँ बेस शत्रुकेँ सेहो पोसने छथि। मुदा, ओ अपन पथसँ अखनो टससँ मस नहि होइत छथि। ओ अपन कर्म करैत रहैत छथि। लेखन-कर्मकेँ साधना बुझि ओ अडिग छथि। ओ जनैत-बुझैत छथि जे लिखल आखर मूल्यवान होइते अछि। समय मूल्यांकन करबे करत।

ओ कखनो अपनाकेँ कमतर क' नहि आँकैत छथि। पहिरन-ओढ़नसँ ल' क' रहन-सहन ओ लेखन-कर्म धरिमे कतहुसँ कोनो समझौता नहि करैत छथि। ओ बोन-झाड़सँ गुलाबकेँ चुनि लैत छथि आ घास-पात, काँट धरिकेँ बेकछाक' फराक रखैत छथि। जाहि रचनाकारमे हिनका प्रतिभा बुझाइत छनि, किछु करबाक ऊहि बुझाइत छनि तनिका भरपूर मदति करिते छथि।

ओ स्वयंमे एकटा आन्दोलन छथि। हिनक रचनाकाल जाहि राजशाही शासन-कालमे भेल, लिखबा पर संयमित रहय पड़ैत छल ताहि अवधिमे सेहो बेस लिखलनि। आइ नव प्रजातांत्रिक युगमे सेहो खूब लिखि रहल छथि। ढेर-ढाकी किताब लिखिये लेब कोनो खास विशेषता नहि रखैत अछि। जेंकि गुणात्मक दृष्टिएँ ओ किछु रचना देलनि अछि जाहि बलें ओ समादृत छथि, रहबे करताह। हमरो जे हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वकेँ मूल्यांकित करबाक सुअवसर भेटल अछि से आब हिनक सद्य: प्रकाशित पोथी 'मिथिलाक लोकजीवन: लोक संदर्भ' पोथीक विमोचनक सुअवसर पर भेटल अछि। एहि तिथि 08-05-2022 क' वेलकम, जनकपुरधाम (नेपाल)मे ई आलेख पढ़ैत हम अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत छी। प्रभावशाली आ प्रासंगिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पूर्ण पचास वर्ष की, रचनाकाल 58 वर्षक परिदृश्यकेँ मूल्यांकित करब ततेक सहज नहि अछि। तेँ हिनक सम्पूर्ण सहित्यिक साधना ओ जीवन-कर्मसँ सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक ढंगे एकटा छोट-छीन आलेखमे गुम्फित क' लेब ततेक सोझ आ सरल नहि अछि। ई हम मानैत गछैत छी जे हिनक रचनाकर्म पर जाहि ढंगसँ ईमानदारी आ वास्तविकताक संग आलोचना-प्रत्यालोचना होयबाक चाही से नहि भ' सकल अछि। जखन कि हिनक रचना-कर्म उपेक्षित रहल

अछि सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। पैघसँ पैघ साहित्यकार हिनक रचना पर वा कही तँ पोथी पर कलम चलौने छथि। किछु जनक नजरिमे ओ खटकितो छथि तँ कतिपय भद्रजनक आँखिमे बसलो छथि। साहित्य आ साहित्येतर दुनू कोटिक ओ रचना कयने छथि। किछु फरमाइशी रचना सेहो छनि। दवाबमे लिखल गेल फरमाइशी रचना जँ कखनो क' अपन मूल्यबोध निर्धारित करितो अछि तँ बेसिये एहन रचना हलुकबितो अछि। मुदा, मुक्त भ' आत्मसात रचना जँ कागत पर उतरैत अछि तँ निस्सन्देह फलदायी बनैत अछि। हड़बड़ी-धड़फड़ीमे लेखक बनबाक लौलें फेसबुकिया रचनाकारसभमे बेसिये साहित्यिक घातक बनैत अछि। जेंकि हिनक रचना मूल्यबोधक कसौटी पर सही उतरैत अछि तेँ आइयो हिनक रचनात्मक जड़ि आरो गहींर अछि आ जमीनसँ जुड़ल टिकल अछि। सहमति-असहमतिक सन्धिबिन्दु पर ठाढ़ भ्रमर अपन राचनाबलें कही तँ रचनात्मक परिदृश्यकेँ उभारबामे सक्षम छथि। कालान्तरमे हिनक कर्म-धर्म अबस्से भविष्यक पीढ़ीसँ आत्मीय सम्बन्ध बनौने राखत आ समयक संग संवाद स्थापित करैत रहत। कतिपय जनकेँ भविष्यमे विश्वासो नहि होयत जे एहन सक्रिय रचनाकार एतेक काज क' क्रान्तिक लौ जगा देने छथि। ओ जेँ जीवट छथि तेँ हिनक आत्मकथा देखबाक लिलसा हमरा जगले अछि।

रहल एहि पुस्तकक प्रसंग तँ ई त्रि.वि.वि.,नेपालक मैथिली विषयमे एम.ए.क हेतु प्रोमिशा मिश्रा द्वारा लिखित शोध पत्रक संशोधित परिबर्द्धित रूप थिक जे शोधार्थीक आग्रहपर कयल गेल अछि। एहि शोध पत्रक मूल ढाँचामे कोनो खास परिवर्तन नहि कयल गेल अछि। मात्र लेखिकाक शोधपत्रमे आयल भ्रमरजीक साहित्यिक योगदानकेँ आर फरिच्छ करबाक हेतु परिशिष्टमे हुनक रचना कौशलकेँ पुष्टि करयबला आलेख सबकेँ समाबेश कयल गेल अछि। संगहि हुनका प्राप्त सम्मान आ हुनक कृतिसबक छायाचित्रसब सेहो फूटसँ राखल गेल छैक। हमरा विश्वास अछि जे एहिसँ श्री रामभरोस कापड़ि' भ्रमर'क व्यक्तित्व एवं कृतित्वक बारेमे जिज्ञासुलोकनिकेँ जनबामे ई सहायक सिद्ध भ' सकैछ।

अन्तमे हम शोधार्थी प्रोमिशाजीक प्रति आभारी छी जे ओ हमरापर विश्वास कयलनि आ हमरा ई दायित्व निर्वाहक अवसर देलनि।

—चन्द्रेश

मौलागंज, दरभंगा-846004 (बिहार)

आभार

जखन हम त्रि.वि.वि., मैथिली केन्द्रीय विभागक स्नातकोत्तर एम.ए.,दोसर वर्षक छात्रा रही तँ दशम पत्रक हेतु राम भरोस कापड़ि भ्रमरक कृतित्व-व्यक्तित्व पर शोधपत्र लिखबाक अवसर भेटल रहए। तहिया तँ जे किछु सामग्री सोझाँ आएल तकरा एकटा निर्धारित तिथि पर विभागमे जमा तँ क' देने रही आ सफलो भेलहुँ। मुदा, एहि बीच हुनका सम्बन्धमे अध्ययन सामग्री आ आओर कतेको महत्त्वपूर्ण सूचनासब प्राप्त होइत रहल। तखन लागल जे एकटा अलग पुस्तक भ्रमरजीक कृतित्व, व्यक्तित्व पर अयबाक चाही। यद्यपि एहि पुस्तकमे पूर्व शोधक कतेको प्रसंग संशोधित, परिवर्द्धित रूपमे आयल जरूर अछि, मुदा एहि पुस्तकक अपन अलग पहिचान छैक।

हमर एहि पुस्तककेँ पूर्ण आकार देबाक श्रेय मैथिली साहित्यक जानल मानल साहित्यकार, समीक्षक चन्द्रेशजीक छन्हि, जे हमर अनुरोधकेँ सहज स्वीकार क' हमरा अनुगृहित कयलनि अछि। तहिना श्री रामभरोस कापड़ि' भ्रमर' हमर जिज्ञासा पर निरन्तर विषयगत जानकारी उपलब्ध करा हमरा उत्साहित करैत रहलाह, हम हुनका प्रति सेहो आभार व्यक्त कर' चाहैत छियनि। तहिना हमर शोध निर्देशक मैथिलीक सह-प्राध्यापक डा. श्यामा कुमार महतो आ बाह्य परीक्षक प्रा. डा. पशुपति नाथ झा प्रति हम चिरऋणी छी। संगहि हमरा सहयोग कयनिहार गुरुवर्ग सब, सहकर्मी बहिनसब, अपन माय-बाबू जीवनसंगी श्री आकाश ठाकुर आ बेटी आयुधी ठाकुर प्रति सेहो आभार।

हमरा विश्वास अछि जे भ्रमरजी पर छोटोछीन आकारमे आयल ई जानकारी जिज्ञासु अनुसन्धातालोकनिक हेतु आधार सामग्रीक रूपमे अवश्य सहायक सिद्ध होयतनि।

—प्रोमिशा मिश्रा

अनुक्रम

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना V
आभार XVI

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जीवनी तथा व्यक्तित्व 19
भाषा, साहित्य, संस्कृति दिस 26
भ्रमरक साहित्यिक यात्रा 32
भ्रमरक कृतिक विश्लेषण 39
भ्रमरक साहित्यिक प्रवृत्ति 50
साहित्य समीक्षकक नजरिमे भ्रमरक कृति 57
लोकजीवनपर समेकित आलोक 57
देहसँ धरती दिस 60
दिशा-बोध करबैत 'सीमाक आर-पार' 67
संवेनशील मोनकेँ छुबैत 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' 73
जीवनक यथार्थ आ यथार्थक त्रासदी 'एंटीवायरस 80
भ्रमरक नाटक : भैया अएलै अपन सोराज : विहगंम दृष्टि 89
जीवन-मूल्यक पक्षमे ठाढ़ 'भ्रमर'क गजल 97
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ' : प्रभाव आ प्रतिक्रिया 102
चीनक प्राचीरकेँ टपैत मैथिलीक यात्रा साहित्य 105
सम्पादन : पत्र-पत्रिका 109
अपन इतिहास अपने बनबैत 'आँगन' 109
संघर्ष-चेतनामे फलित 'आंजुर' 121
उपसंहार आ निष्कर्ष 128
सन्दर्भ-सूची 130
अनुसन्धान : भक्तपुरक दरबार क्षेत्रमे एखनो तिरहुतिया संगीतक ताल सुनि पड़ैछ 132

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जीवनी तथा व्यक्तित्व

जन्म आ जन्म स्थान

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जन्म 2008 साल श्रावणमे धनुषा जिल्लाक तत्कालीन बघचौरा गाउँ पालिका वार्ड नम्बर 4मे भेल छल। सम्प्रति ओ बघचौरा संगहि जनकपुरधाम उपमहानगर पालिका वार्ड नम्बर 1 शिवपथमे रहैत छथि आ एहिठाम रहि अध्ययन अनुसन्धानमे लागल रहैत छथि। ओ त्रिभुवन विश्व विद्यालय अर्न्तगत रामस्वरुप रामसागर बहुमुखी क्याम्पससँ मैथिली विषयमे स्नातकोत्तर कयने छथि।

वंशावली

↓

मनोरथी कापड़ि

↓

मिठुलाल कापड़ि

↓

रामगुलाम कापडि

↓

सुकुमार कापड़ि | रामभरोस कापड़ि

↓

रामनारायण कापड़ि | प्रदीपकुमार कापड़ि 'गुडु' | प्रमीला कुमारी | संदीप कुमार कापड़ि 'छोटू

स्रोत : रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर' संगक अन्तर्वार्ता

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पारिवारिक अबस्था

श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' (पूर्व सदस्य, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, वरिष्ठ साहित्यकार तथा पत्रकार)क जन्म धनुषा जिल्लाक साविक बघचौड़ा गाउँ पालिका 4 सम्प्रति हंसपुर नगरपालिका 2, बघचौड़ा पूर्वटोलमे एकगोट सम्पन्न परिवारमे भेल छलनि। पिता स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ माय स्वर्गीया दुखनी देवीक छोट सन्तानक रूपमे जन्म ग्रहण कयने भ्रमरकेँ एकगोट भैया, एकगोट दीदी आ एक गोट बहिन छनि। दीदीकेँ 86-87 वर्षक लकझकमे,किछु मास पूर्व देहावसान भ' गेलनि। पिता रामगुलाम कापड़ि बघचौड़ामे मात्र नहि परोपट्टामे प्रतिष्ठित समाजसेवीक रूपमे चिन्हल जाइत छलाह। ओ तत्कालीन बघचौड़ा गाउँ पंचायतकेँ लगातार तीन बेर प्रधानपंच निर्वाचित भेल छलाह। पचासो बिगहा खेत, फूलवारी, पोखरि, ईनार सहित बघचौरा आ जनकपुरधाममे सुविधा सम्पन्न पक्की घर छलनि। हुनका गामवासीसभ आदरसँ 'अधिकारी' मालिक कहि क' सम्बोधन करैत छलनि।

भ्रमरक बाल्यकाल

धनुषा जिलाक बघचौड़ा गाममे विक्रम सम्वत जन्म 2008 साल श्रावणमे जन्म ग्रहण कयने भ्रमरकेँ प्रारम्भिक शिक्षा गामेमे भेल छलनि। गामेमे एकटा सम्पन्न गिरहत कन्हाइ साहुक दलानपर खुजल मधुकरही निवासी गणेशलाल कर्णक चटिसारमे हुनका दुनू भाईकेँ जबरदस्ती पठाओल गेल रहन्हि। आनाकानी कयलापर नोकर बहादुरकेँ कहि पाठशालामे गेला तँ मुदा कोनो बहन्ने जल्दीए आबि गेल। ई क्रम किछु दिन चललै। एकर कारण रहैक मायक दुलार, खान पीन, खेल-धूप। आ जखन मन लाग' लगलैक तँ पाछाँ घूमिक' नहि देखलक। गुरुजीबला खाँति, बिटगरहाँ आदि जे भूइयाँसँ होइत पाटी-दुआइत धरि चलल। तकरा बाद पंचायते मिडिल इस्कूल यादव मिडिल इस्कूलमे नाम लिखाओल गेल आ तखन ओतहि पढ़ैत तीन क्लासक बाद आगाँ पढ़बाक लेल जनकपुरक सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखाओल गेलनि। तकरा बाद ओत्तहिसँ मैट्रिक आ रारा बहुमुखी कैम्पससँ एम.ए। बाल्यकालहिसँ पढ़य-लिखयमे होशियार तथा वाकपटु भेलाक कारणे हुनका सभगोटे बेस प्रेम करैत छलनि। आर्थिक, सामाजिक आ शैक्षिक रूपसँ हुनक परिवार समाजमे श्रेष्ठ छल तेँ हुनक बाल्यकाल सुखमय छलनि। अध्ययनक क्रममे जनकपुर अयलाह आ अपन स्टेशनसँ उत्तर अवस्थित पुस्तैनी घरमे रहि अध्ययन करए लगलाह। घरसँ खाद्य सामग्री अबैत छलनि आ भानस बनेबालेल भनसिया सेहो राखल गेल छलनि।

भ्रमरक शिक्षा

सबसँ पहिने गामक चटिसारमे अ-आ-इ-ई-ए सँ ल' खाँति बिटगरहाँ सब सिखलनि, पढ़लनि। तकरा बाद पंचायतेके बेल्ही मिडिल इस्कूलमे तीन कक्षा धरि पढ़लाह। तकरा बाद गाममे आयल एकटा ग्राम विकास अधिकारीक उत्प्रेरणासँ बाबूजी हिनका दुनू भाइकेँ जनकपुर सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखा देलकनि। जनकपुरमे अपने पक्की मकान छलनि। एकटा भनसियाक संग ओ जनकपुरके आवासपर रहि सरस्वती माध्यमिक विद्यालयसँ एसएलसी धरिक शिक्षा प्राप्त कयलनि आ प्रवीणता प्रमाणपत्र (आई.ए.), स्नातक (बी.ए.) आ स्नातकोत्तर (एम.ए.) धरिक अध्ययन रामस्वरुप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस, जनकपुरधामसँ प्राप्त कयलनि। डा. धीरेन्द्रक सद्प्रयाससँ राराब क्याम्पसमे शुरू भेल मैथिली स्नातकोत्तर विषयक ओ पहिल बैचक छात्र छलाह आ प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर उतीर्ण कयने छलाह।

स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ दुखनी देवीक तेसर सन्तानक रूपमे जन्मग्रहण कयने भ्रमरके भैयाक नाम छनि सुकुमार कापड़ि, दिदीक छलनि दाया देवी (जनिक हालेमे स्वर्गवास भ' गेलनि) आ बहिनके सोनावत्ती देवी। भ्रमरक विवाह किशोरावस्थामे धनुषा जिल्लाक भगवानपटी गाममे दलतीया देवी संग भेल छलनि। हुनका तीन गोट पुत्र आ दू गोट पुत्री छनि। जेठ पुत्र रामनारायण कापड़ि 'जनकपुर एक्सप्रेस'क सम्पादक छथि आ राजनीतिमे सेहो संलग्न छथि तँ माझिल प्रदीप कापड़ि नेपाल खाद्य संस्थानमे कार्यरत छथि। छोट संदीप कापड़ि उच्च कोटिक कम्युटरक ग्राफिक एक्सपर्ट छथि आ अपने व्यवसाय करैत छथि। दुनू बेटीक विवाह भ' गेल छनि।

साहित्यमे अयबाक प्रेरणा

सरस्वती हाई स्कूलमे अध्ययनरत रहल समय हुनका सम्पर्क भेलनि डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' संग। जे हुनक घरक पड़ोसेमे भाड़ा ल' रहैत छलाह आ राराब क्याम्पसमे अध्यापन करैत छलाह। डा. धीरेन्द्रक सम्पर्कमे अयलाक पश्चात हुनक आकर्षण साहित्य दिस भेलनि। यद्यपि पत्र-पत्रिका, साहित्यिक उपन्यास तथा कथा कविता आदि पढ़बाक रुचि हुनकामे पहिनहिसँ छलनि। ओ हिन्दीक पुस्तक, पत्र-पत्रिका पढ़बामे रुचि रखैत छलाह। पछाति डा. धीरेन्द्रक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखय लगलाह। हुनक पहिल रचना बालकथा अछि—ईमानदार बालक। ई कथा तत्कालीन समयमे प्रतिष्ठित मैथिली साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'मे 1964 ई. मे प्रकाशित भेल छल। तहिया हुनक उमेर 12 वर्ष मात्र छल। तहिएसँ ओ अपन नामक पाछाँ 'भ्रमर' लिखब शुरू कयलनि।[1]

1. अजय अनुरागी : लोकान्तर डटकम : अनलाईन पत्रिका। प्रकाशन :कार्त्तिक 2, 2076

व्यावसायिक जीवन

त्रिभुवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पसके रूपमे रहल रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस, जनकपुरसँ मैथिली विषयमे प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर (एम ए) कयने छलाह भ्रमर। मुदा, ओ सरकारी सेवामे नहि गेलाह। त्रि.वि.वि. मैथिली शिक्षण विभागक तत्कालीन अध्यक्ष डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' हुनका बेर बेर प्राध्यापन पेशामे अएबाक वास्ते आग्रह कयने छलाह, मुदा ओ विश्वविद्यालय सेवामे जयबाक अपेक्षा पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखन, अध्ययन, अनुसंधान आ यात्रामे रमल रहबाक निर्णय कयलनि। आर्थिक रूपसँ सबल तथा व्यवहारसँ स्वच्छन्द विचारक भेलाक कारणे ओ स्वतन्त्र पेशा अर्थात् पत्रकारिता आ स्वतन्त्र लेखन विधा चुनलनि।

भ्रमर 2026-027 सालमे वैदेही साप्ताहिकके कार्यालय प्रतिनिधिक रूपमे पत्रकारिता प्रारम्भ कयने छलाह। 2046 सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्चात देशमे बहुदलीय प्रजातन्त्र स्थापना भेल। निजी क्षेत्रसँ सेहो ब्रोडसिट पत्र-पत्रिकासभक प्रकाशन शुरू भेल। राजधानीसँ प्रकाशित एहि पत्र-पत्रिकामध्य कान्तिपुर पब्लिकेशनकेँ कान्तिपुर दैनिक सेहो छल। भ्रमर 2049 सालसँ कान्तिपुरके जनकपुर संवाददाताक रूपमे काम कयलनि। कान्तिपुर प्रकाशन भेलाक शुरूक 5 वर्ष धरि ओ एहि पत्रिकाक जनकपुर समाचारदाताक रूपमे काज कयलनि।

कान्तिपुर राष्ट्रीय दैनिकसँ पहिनहि ओ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्थापित भ' चुकल छलाह। प्रकाशक सम्पादकके रूपमे हुनक पहिल पत्रिका मैथिलीमे छल जकर नाम छल—अर्चना (2030 साल)। तकरा बाद नेपाली मासिक अंजुली आ मैथिली द्वैमासिक आंजुर। विसं 2039 सालसँ हुनक सम्पादन आ प्रकाशनमे शुरू भेल छल 'गामघर' मैथिली साप्ताहिक जे आइ धरि निरन्तर प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। ई देशक पहिल मैथिली समाचार पत्र अछि जे करीब 39 वर्षसँ निरन्तर प्रकाशित भ' रहल अछि। एहि साप्ताहिक मार्फत मैथिली आ नेपालीक अनेको साहित्यकार आ पत्रकारक जन्म भेल अछि। स्थानीय नेपाली दैनिक सभ सुप्रभात (2054) के प्रारम्भिक सम्पादक सेहो ओएह छलाह। सम्प्रति जनकपुर एक्सप्रेस (2055) के सेहो प्रकाशन करैत छथि।

पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखन संगहि ओ नेपाल सरकारक साझा प्रकाशनक अध्यक्षक रूपमे सेहो काज कयने छथि। साझा प्रकाशनक इतिहासमे ओ पहिल मधेसी अध्यक्ष भेलाह। नेपाली भाषा आ नेपाली कर्मचारीसभक बोलबाला रहल साझा प्रकाशनकेँ ओ अपन एक वर्षक कार्यकालमे कायापलट क' देने छलाह। पहिल बेर

नेपाली बाहेकके दोसर भाषा मैथिलीक पुस्तक सेहो हुनके कार्यकालमे प्रकाशन भेल छल। नेपाली साहित्यकार सभक चित्रक संग मैथिलीक महाकवि विद्यापतिक चित्र सेहो प्रकाशित करौलनि। साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पदपर आसीन रहिते काल हुनका नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य नियुक्त कयल गेलनि। तकरा बाद ओ साझा प्रकाशनसँ राजिनामा द' प्राज्ञपरिषद सदस्यक रूपमे चारि वर्ष काज कयने छलाह। प्राज्ञके रूपमे ओ मैथिली लोक संस्कृति उपर उल्लेख्य काज कयलनि आ करबौलनि। हुनक सक्रियतामे सलहेस, दीनाभद्री, जट-जटिन सदृश्यक लोकनाट्यसभक विषयमे अध्ययन अनुसंधान, लेखन आ प्रकाशन भेल। जे अद्यावधि सुरक्षित अछि।

भ्रमर भाषा, साहित्य, संस्कृति संगहि साहित्यक प्रायः सम्पूर्ण विधामे धुरझार लिखैत आयल छथि। एकरा अतिरिक्त ओ उच्चकोटिक फोटोग्राफर आ चित्रकार सेहो छथि। एखन धरि भ्रमर द्वारा लिखल गेल मैथिली, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषाक करीब 50 गोट पुस्तक प्रकाशित भ' चुकल अछि। हुनक टटका पुस्तक अछि 'मिथिलाक लोक जीवन : लोक सन्दर्भ' जकर विमोचन जनकपुरमे भेल, जाहिमे पटनासँ डा. रमानन्द झा रमण, कोलकातासँ अशोकजी, दरभंगासँ डा. भीमनाथ झा, चन्द्रेश लगायत काठमाण्डूसँ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति गंगा प्रसाद उप्रेती आयल छलाह। हुनक लेखनी एखनहुँ चलिए रहल छनि।

मान-सम्मान

भ्रमर मैथिली संगहि नेपाली साहित्यक सेहो प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। साहित्यक प्रायः सम्पूर्ण विधामे ओ निरन्तर सृजनारत छथि। एहि कारणे ओ मैथिली आ नेपाली दुनू साहित्य दिसक पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त कयने छथि। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार-2052 (रु. 50000)सँ ओ पुरस्कृत छथि। तहिना विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान', शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 'शेखर सम्मान', नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुर द्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुम्बईद्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान प्राप्त कयने छथि तँ मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशन द्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार-2068 आ नेपाल सरकार द्वारा स्थापित विद्यापति पुरस्कार कोष द्वारा वर्ष 2069केँ मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार-2069 सेहो प्राप्त कयने छथि। 2 लाख राशिक उक्त पुरस्कार मैथिली साहित्यमे प्रदान कयल जायबला सर्वाधिक राशिक पुरस्कार अछि।

(2069), रायपुर (छत्तीसगढ़, भारत) द्वारा मिथिला विभूति सम्मान (2069) मैथिल समाज, रहिका (मधुबनी, बिहार, 8 अप्रिल 2018 ई.) नेवारी भाषा साहित्यक संस्था केशवलाल वाखं सिरपा कथा पुरस्कार (2070 जेठ 21 गते), 'घरमुँहा' उपन्यासक लेल रु. पचास हजारक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त (2071) लगायत दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त। एकरा संगहि हुनका पार्वती प्रतिष्ठान, सिसोटिया सर्लाही द्वारा 'पार्वती सम्मान' सहित दर्जनो सम्मान आ पुरस्कार प्राप्त छनि।

सामाजिक क्षेत्रमे सक्रियता

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क मुख्य परिचय एक गोट साहित्यकार आ कुशल पत्रकारक छनि, मुदा ओ सामाजिक आ राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो ओतबे सक्रिय छथि ताहि बातक जानकारी बहुत थोड़ लोककेँ छनि। साहित्यिक स्रष्टाक रूपमे ओ मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक सेवा क' रहल छथि तँ विभिन्न संघ-संस्थामे संलग्न रहि भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक संस्थागत विकासमे सहयोग क' रहल छथि। तहिना राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो हुनक अहम योगदान छनि। तत्कालीन कटरैत गाउँ पंचायतकेँ उपाध्यक्षक रूपमे निर्वाचित भ' ओ गाम पंचायतके विकास निर्माणमे अहम योगदान देने छलाह तँ अपन पुश्तैनी गाम बघचौड़ामे अवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयक व्यवस्थापन समितिक अध्यक्षके रूपमे ओ विद्यालयक शिक्षाक गुणस्तर बढ़ेबामे अहम योगदान देलनि।

ओ मैथिली साहित्य उत्सव, नेपालक अध्यक्ष, तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुरके अध्यक्ष, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान के अध्यक्ष, दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुरके सचिव, पत्रकार महासंघ, धनुषाक राष्ट्रीय पार्षद आदिक रूपमे सेहो उत्कृष्ट काज कयने छथि। काठमाण्डूमे आयोजित सार्क स्तरीय कवि-गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व सेहो कयने छलाह।

मधेस आन्दोलनमे योगदान :

पत्रकारिता संगहि ओ मधेश आ मधेशीक विचार, समस्या आ समस्या समाधानक उपाय आदि पर निरन्तर चिंतन-मनन करैत रहैत छथि। 2063 सालक मधेश आन्दोलनमे ओ अपन पत्रिका 'गामघर' तथा 'जनकपुर एक्सप्रेस' दैनिककेँ माध्यमसँ आन्दोलनक पक्षमे जनमत बनएबामे अहम योगदान देलनि। ओ स्वयं सेहो आन्दोलनक पक्षमे सड़कपर उतरलाह आ अधिकारविहीन सभक अधिकार सुनिश्चित करयबामे सक्रियता

देखौलनि। भारतीय मीडियामे जखन मधेश आन्दोलनकेँ अलग हयबाक आन्दोलन कहि प्रचारित कयल जा रहल छल, तखन एकर प्रतिवाद आ तथ्यकेँ स्पष्ट करबाक भार हुनका देल गेल छलनि। ओ एकटा टीमकेँ साथ ल' पटना गेलाह जत्त' अत्यन्त अल्प समयमे अपन स्थानीय सम्पर्कसूत्रक माध्यमसँ पत्रकारक आयोजन क' बातकेँ फरिछएबाक काज कयने छलाह। एहि सम्पूर्ण प्रक्रियामे ओहि समयक आन्दोलनक नेतृत्व क' रहल उपेन्द्रजीसँ निरन्तर सम्पर्कमे रहि पत्रकारक मार्फत एहि तथ्यकेँ स्थापित करबामे सफल रहलाह जे मधेश आन्दोलन विखण्डनके लेल नहि, राज्यके मूलधारामे एक नम्बरके नागरिकक हैसियतसँ अपन हिस्सेदारीक भ' रहल छल। परिणाम ई भेल जे अगिला दिनक पटनाक अखबार फरिछायल सत्यसँ भरल छल।

प्रथम मधेस आन्दोलनक अनुभव आ आन्दोलनक नामपर समाजमे पसरल साम्प्रदायिक द्वन्दकेँ आधार बना ओ एक गोट उपन्यास लिखलनि—घरमुँहा। जकर मुख्य विषयवस्तु मधेश आन्दोलन अछि। एहि उपन्यासक हिन्दी, भोजपुरी आ नेपाली भाषामे अनुवाद सेहो भ' चुकल अछि। आ अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशनाधीन अछि। एही उपन्यासपर हिनका पचास हजारक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार भेटल छन्हि।

रुचि आ स्वभाव

भ्रमर व्यक्तिगत जीवनमे नीक-निकुत खायबला आ ब्राण्डेड कपड़ा पहिरनिहार व्यक्ति छथि। आर्थिक रूपसँ सक्षम परिवारमे जन्मल भ्रमरकेँ बाल्यकालक ई सौख एखनहुँ विद्यमाने अछि। महग मोबाइल, कम्प्यूटर, कैमरा हुनक दोसर सौख थिक। कैमरामे नीक फोटो खिचब आ एहि फोटोसभकेँ सुरक्षित राखब हुनक विशेषता छनि। एकर अतिरिक्त ओ फिल्म निर्माण, फिल्म लेखन आदि कलामे सेहो निपुण छथि। अध्ययन आ भ्रमण करबामे सेहो विशेष रुचि रखैत छथि। भ्रमर जी नेपाल आ भारत संगहि चीनक सेहो भ्रमण कयने छथि। कही तँ ओ अध्ययन-लेखनमे प्रवीण, नीक-नीक पोथी आ पत्र-पत्रिकादिक संग्रहकर्ता आ अनुसंधानकर्ताक संगहि रचनाकारक निर्माता छथि।

भाषा, साहित्य, संस्कृति दिस

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' मैथिली साहित्य क्षितिजक तारा जकाँ छथि। मैथिली कविता, कथा, नाटक, उपन्यास, रिपोर्ताज, यात्रा, समीक्षा सहित साहित्यक प्राय: सम्पूर्ण विधामे करीब 4 दर्जनसँ बेसी पुस्तक प्रकाशित छनि। ओ विगत 5 दशकसँ साहित्य साधनामे लीन छथि। एकरा संगहि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे नियमित लेख रचना प्रकाशित करैत आबि रहल छथि। ओ नेपाली आ मैथिलीक वरिष्ठ पत्रकार सेहो छथि। अपन उत्कृष्ट लेखनीक माध्यमसँ ओ मैथिली साहित्यक संरक्षण, सम्बर्द्धनमे पैघ योगदान द' रहल छथि। मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिकेँ वैश्वीकरण करबामे सेहो हुनक अहम योगदान छनि। भ्रमरक कलमसँ मिथिलाक इतिहास, भूगोल, जीवन शैली आ कला संस्कृतिक विषय जगजियार भेल अछि। साहित्यिक पत्र-पत्रिका हो कि राष्ट्रीय तथा स्थानीय दैनिक, साप्ताहिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक वा विभिन्न अवसरसभपर प्रकाशित होबयबला स्मारिका, सभमे हुनक लेख रचना आ समीक्षा आदि देखल जा सकैछ। नेपालीय मैथिली साहित्यमे सभसँ अधिक पुस्तक प्रकाशन करबाक रेकर्ड सम्भवत: हुनके नाम होयबाक चाही।

प्रारम्भिक रुचि

हिनक बचपन जन्म स्थान बघचौरामे बितलन्हि। 2008 साल श्रावणमे पिता स्व. रामगुलाम कापड़ि आ माता स्व. दुखनी देवीक दोसर सन्तानक रूपमे हिनक जन्म भेलनि। धन-वीत्तमे कमी नहि छलनि, मुदा जाहि वर्ग आ समाजसँ आबद्ध छलाह, पढ़ब-लिखब कठिन मानल जाइत छलैक। तथापि पिता स्व. रामगुलाम कापड़ि ओइ परोपट्टामे पंच केँ रूपमे सम्मानित छलाह। कोनो झगड़ा नहि फरिछाइ तँ हुनके बजा लेल जाइत छलनि आ ओ समाधन करैत रहलाह। पढ़नाइक नाम पर ताहि समयक देहाती पढ़ाइ विटगरहाँ आदिमे निपुण छलाह। रामायण नियमित पढ़थि, खेत, खरिहान आ जन-बनक व्यवस्थापनमे कुशल छलाह। परोपट्टामे धान आ रुपैयाक लगानी चलैत

छलनि। स्वभाविक छैक नीक इज्जत छलनि।

से अपन धिया-पूताकेँ पढ़यबा लेल ओ उत्सुक रहथि। मुदा, दुनू बालक सुकुमार कापड़ि (जेठ भाय) आ भरोसी कापड़ि (तहिया इएह नाम रहनि) चटिया बनबाले तैयारे ने होथि। तखन घर पर बहादुर नामक एकटा पहाड़ी नोकर रहैक जे कान्हपर लादि दुनू भाइकेँ गुरुजीक चटिसारमे ल' जाइनि आ तखन नीचाँ माटिपर, तकरा बाद पाटी पर अ, आ, इ, ई सँ विटगरहाँ धरि सिखौने रहनि। चटिसारसँ निकलि बेलही स्कूलमे तीन वर्ग धरि पढ़लाह आ तखन जनकपुरक सरस्वती मा.वि.मे 4 कक्षामे नाम लिखाओल गेलनि। ओत्तहिसँ एस.एल.सी. आ जनकपुरक रा.रा.ब. कैम्पससँ मैथिलीमे एम.ए.क पढ़ाइ पूरा कयलनि।

एहि बीच रा.रा.ब. क्याम्पसमे हिन्दी, मैथिली पढ़एबाक हेतु भारतसँ प्रो. धीरेन्द्र आबि गेल रहथि आ संयोगसँ ओ हिनके मकानकेँ बगलमे रहैत छलाह। सम्पर्क भेलनि। बच्चेसँ ई पत्र-पत्रिका पढ़ैत छलाह बालक, पराग, चन्दामामा, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका आ मिथिला मिहिर। लिखबाक रुचि रहनि, भाषा निश्चय हिन्दी रहनि।

से एक दिन एकटा कथा लिखलनि ईमानदार बालक, हिन्दी मे। प्रो. धीरेन्द्र देखलकनि आ एकटा नमहर शिक्षा देलकनि— बाउ हम हिन्दी आ मैथिली दुनू विषयमे एम. ए. छी। मुदा, हिन्दीकेँ पार नहि पाबि सकलहुँ अछि। अहाँक मातृभाषा मैथिली अछि, ताहीमे लिखू।

भ्रमरजी संस्मरण सुनबैत भावुक होइत कहैत छथि—हमरा नहि बुझना गेल छल जे मैथिली कोनो भाषा होइछ आ हम सभ बजैत छी। हम कहने रहियनि— सर! हम केना लिखबै मैथिली। ओ कहलनि—जरूर लिखबै। अहाँ जे बजै छी सएह लिखू हम देखा देब कोना शुद्ध लिखल जाइछ।

तखन ईमानदार बालकक मैथिली अनुवाद कयलनि आ तकरा लाल कलमसँ प्रो. धीरेन्द्र जे रंगलनि से एक्को पंक्ति सदर नहि रहल। मुदा, सएह रंगलहा करेक्शन हुनका मैथिली प्रति चुनौती बुझयलनि जे हुनक बालमनपर कठोर प्रभाव छोड़लक आ ओ तकरा बाद पाछाँ नहि देखलनि। मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'मिथिला मिहिर'क नियमित लेखक बनलाह आ मैथिलीमे निकलैत कोनो पत्रिकामे हिनक रचना आदरसँ छापल जाए लागल। डा. मेघन प्रसाद अपन शोधग्रन्थ 'मैथिली कथा कोष' (1996)मे सभसँ बेसी कथा (58 कथा) लिखनिहारमे हुनको नाम शामिल कयने छन्हि।

सम्मान तथा पुरस्कार :

भ्रमर नेपाल आ भारतक प्रतिष्ठित सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थासभसँ बेर बेर सम्मानित आ पुरस्कृत भेल छथि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर सन् 1995 मे घोषित 50 हजार रुपियाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार प्राप्त कयनिहार ओ पहिल साहित्यकार छथि। एहि तरहें विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, 'आकृति' जनकपुरद्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषाद्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषदद्वारा 2059 सालक अन्तराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मानद्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन पटनाद्वारा 'शेखर सम्मान', मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डू)द्वारा 2063 सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त कयने छथि। नेपाल सरकारद्वारा गठित विद्यापति मैथिली पुरस्कार कोषद्वारा हुनका वर्ष 2068-69 सालक नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार प्रदान कयल गेल छल।

अपन साहित्यिक जीवनक एहि पचास वर्षमे ओ सम्मानो कम नहि पौलनि। नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानसँ पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार (2053 साल)मे रु. 50,000 टकाक संग भेटलनि। विद्यापति सेवा संस्थान (1996 ई.), मिथिला विभूति सम्मान देलकनि तँ अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, मुम्बईमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित कयल गेलाह। रायपुरमे मिथिला विभूति सम्मान, पटनाक चेतना समितिसँ यात्री चेतना पुरस्कार, शेखर प्रकाशनसँ शेखर सम्मान हिनक उपलब्धि रहलनि अछि।

नेपालमे विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार (2 लाख टाकाक संग) राष्ट्रपति हाथेँ भेटलनि, तँ नेवारी साहित्यक दू गोट महत्वपूर्ण संस्था नेपाल भाषा परिषद् आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा प्रतिष्ठान क्रमश: केशवलाल वाख सिरपा पुरस्कार आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कारसँ सम्मानित कयलकनि जे कोनो मैथिली भाषी साहित्यकारक हेतु पहिल छल। ई सभ पुरस्कार, सम्मान हिनक कर्मठता, संघर्ष ओ साहित्य साधनामे निरन्तर प्रतिबद्धतापूर्वक समर्पणक कारणे भेटलनि। किछुए दिन पूर्व नेपालक श्रेष्ठ समाचारपत्र 'गोरखापत्र' हिनक अन्तरवार्ता छपने छल तँ एकरे प्रकाशन युवामंच हिनक बचपनक प्रसंगकेँ विवरण सचित्र प्रकाशन कयलक। ई कोनो मैथिलक हेतु गौरवक विषय भ' सकैछ।

इएह अटूट लेखनक प्रभाव छैक जे चारि दर्जनसँ ऊपर पोथी द' मैथिलीक भण्डारकेँ भरलनि अछि। आ से विभिन्न विधामे। जे खगता देखलनि, ताहीमे भीरि

गेलाह। उपन्यासक खगता रहैक तँ मधेश आन्दोलनकेँ आधार बना घरमुँहा मौलिक उपन्यास लिखलनि, जकरा हालेमे पचास हजार टकाक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कारसँ पुरस्कृत कयल गेल। लगभग तैंतालिस वर्ष पूर्व नेपालक पहिल आधुनिक कविताक संग्रह **बन्न कोठरी : औनाइत धुआँ** (2029 साल) प्रकाशित कयलनि। तकरा बाद कविता, गीत, गजल आदिक आनो संग्रह समयक अन्तराल संग अबैत गेल— **मोमक पघलैत अधर**, (गीत गजल), **अप्पन अनचिन्हार** (1990 ई.), **अन्हरियाक चान** (गजल, 2013 ई.) प्रकाशित भेल। बिहारक मैथिली अकादमी हिनक पहिल कथा संग्रह **तोरा संगे जयबौ रे कुजबा** (1984 ई.) प्रकाशित कयलक जे कोनो नेपालीय मैथिली साहित्यकारक पहिल संग्रह छल। दोसर कथा-संग्रह **हुगली उपर बहैत गंगा** (2065 साल) आएल। नाटकमे हिनक अपन फूट स्थान छन्हि। कतेको नाटक मंचित भेल, प्रशंसित भेल। **रानी चन्द्रावती** प्रारंभिक नाटक अछि तँ एकटा आओर वसन्त अत्यन्त चर्चित नाटक रहल जे **वैदेही** दरभंगाक एकटा सम्पूर्ण अंकमे छपल 1994 ई. मे। **महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक** (2054 साल), **भैया अएलै अपन सोराज** (2067 साल) आएल।

किछु शोधपरक पुस्तक सेहो अछि— **राजकमलक कथा साहित्यमे नारी चरित्रक अध्ययन। ठेकान पर** (विचार संकलन), विविधात्मक सामग्रीक संग **समय सन्दर्भ**, विदेश यात्रापर चीन यात्राक प्रथम पुस्तक लिखलनि **चीन जे हम देखल** (2014 ई.) सन सन विविध विषयक पोथी प्रकाशन क' बहुतो नव नव तथ्यसँ अवगत करौलनि। साक्षात्कार संग्रह अहाँ जे कहलहुँ अनलाक बाद भ्रमरजी बहुतो मैथिली सेवकके एकठाम राखि हुनक चिंतन-विचारसँ मैथिली पाठक सभकेँ अवगत करौलथिन्ह।

हिनक अन्य पुस्तक छन्हि **मैथिली लोक नृत्य, भाव भंगिमा एवं स्वरूप** (2061 साल), **मैथिली पद्य संग्रह** (2051), **त्रिशूली** (मथुरानन्द चौधरी माथुर (2049), **नेपालक मैथिली पत्रिकारिता** (2044), **अन्तर्राष्टीय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल** (2065), **मैथिली नाटक संग्रह** (2067), **लावाक धान** (कविता संग्रह) सम्पादित पुस्तक सभ अछि। अन्यमे अंग्रेजीक **The cultural heritage of nepal** (2062), आजको **धुनषा** (2039), समयको अन्तराल पछयाउँदै नेपालीक रचना अछि।

अनुवादमे **नहि आब नहि** (मैथिलीक एक मात्र दीर्घ प्रेम काव्य)क हिन्दी मे **बस, अब नहीं** क' नामसँ गोपाल अश्क अनुवाद कयने छथि तँ नेपाली मे सुप्रसिद्ध

गद्य—पद्य लेखक मनुब्राजाकीक अनुवाद **भयो अव भयो** (1990 ई.) प्रकाशित अछि। तहिना **भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु** धर्मेन्द्र विह्वल द्वारा अनुवादित नाटक संग्रह अछि तँ **घरमुँहा** उपन्यासक भोजपुरीमे उमाशंकर द्विवेदी द्धारा कयल अनुवाद प्रकाशित अछि। **जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु** (2056) आ **तराइको फाँट देखि हिमालको काँख सम्म** (2067) नेपालीक मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आलेख संग्रह अछि।

हुनक **अरिपन** नामसँ गीति कैसेट बहार भ' गेल छन्हि, जाहिमे नव गोट गीत राखल गेल अछि। फिल्म बनओलनि **एकटा आओर वसन्त**। ई फिल्म नेपाल टेलिभिजनसँ प्रसारित भ' चुकल अछि होइत रहैत अछि।

ओ पूर्ण मौलिक लेखक छथि, पत्रकार छथि। पैतृक सम्पत्तिकेँ जोगा क' रखलनि, अपन अरजल भव्य भवन बना साहित्य साधनामे रत छथि। हिनक आवास भ्रमरकुंज जनकपुरक रेलवे स्टेशनसँ उत्तर सहजहि नजरि पर आबि जाइछ, जत्त साहित्य मनिषी लोकनिक निरन्तर आवाजाही लागल रहैत अछि।

अपन एकाकी लेखन-यात्राक कारणें बाधा, व्यवधान नहि अयलनि से बात नहि। स्वाभिमानी स्वभावक कारणें लल्लो-चप्पोमे नहि लागि पढ़ब आ लिखब धरिमे सीमित रहने किछु लोककेँ अखरैत रहलनि हिनक स्वभाव आ तेँ समय-समय पर भाड़ाक दूत सभकेँ ठाढ़ क' हिनक मान-मर्दनक जोगाड़ भिड़ाओल जाइत रहल, मुदा हिनक काजे एतेक विस्तृत आ गहिंर भ' गेल छैक जे ओ सभ विपरीत विचारक लोक उड़न-छू भ' जाइत रहल अछि आ भ्रमरजी अपन स्थानपर अडिगे नहि रहैत छथि बरु कद काठीक हिसाबेँ आर विस्तृत क्षेत्रमे स्थापित भ' जाइत छथि।

कहबाक अर्थ विरोध आ गोलैसीक घेरामे पड़बाक काज कयनिहार तखन देखिते रहि जाइत अछि जखन नेपाल सरकार हिनका जनकपुरसँ उठा क' एक्केबेर नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशनक गरिमामय पद अध्यक्षक आसन पर आसीन क' दैत छनि। कोनो मैथिल, कोनो मधेशी पहिल बेर एहि पद पर मनोनीत होइत छथि। ततबे नहि ओ अध्यक्ष पद पर रहितो नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे परिषद सदस्य नियुक्ति क' देल जाइत छथि नेपालक प्रधानमंत्री द्वारा। ई दुनू पद कोनो भाषा प्रेमीक हेतु, सौभाग्यक पद थिकै, जाहिपर भ्रमर छः वर्षसँ ऊपर आसीन भ' चुकलाह अछि। आ दुनू ठाम ओ मैथिलीक काज कयलनि। **साझा**मे मैथिली भाषाक पुस्तक प्रकाशनक काज शुरू कयलनि, प्रज्ञामे **आँगन** पत्रिकाक शुरुआतक संग मैथिली लोक संस्कृतिसँ सम्बद्ध अनेको महत्वपूर्ण गोष्ठी आ पुस्तक प्रकाशन कयलनि। जे **सलहेस, दीनाभद्री**, **जट जटिन**क रूपमे चर्चित प्रकाशन अछि। साझा प्रकाशनसँ बालकथा संग्रह **बगियाक गाछ** सँ मैथिली प्रकाशन शुरू भेल जे हिनके एकटा **आओर वसन्त एवं अन्य नाटक**, हिनके सम्पादनमे **विद्यापति आ नेपाल** ग्रन्थक प्रकाशन भेल। तदनुरूप नेपालक **मैथिली साहित्यक इतिहास**, **भगजोगनी**, **पैसा** आदि मैथिली रचनासभ आयल।

भ्रमर जी निरन्तर सधानारत् छथि। पत्रकारिता करैत छथि, मैथिली पत्र-पत्रिकाक अतिरिक्त एकटा दैनिक समाचारपत्र **जनकपुर एक्सप्रेस** डेढ़ दशकसँ नेपालीमे सेहो निकालैत छथि। अपन पत्र-पत्रिकाक हेतु निरन्तर लेखनक काज जारी रखितो बाहरी लेखनक हेतु आयल आग्रहकेँ प्राथमिकताक संग पूरा करबाक हेतु निरन्तर लेखनमे जुटल रहैत छथि। ओ मैथिली पत्र-पत्रिका भ' सकैछ, ओ काठमाण्डूक नेपाली पत्र-पत्रिका भ' सकैछ, तहिना काठमाण्डूसँ प्रकाशित होइत **द पब्लिक** मासिक हिन्दीक पत्रिका भ' सकैछ। हुनक लेखनी अविरल चलैत रहैत अछि।

ओ पूर्ण मौलिक लेखक छथि, पत्रकार छथि। पैतृक सम्पत्तिकेँ जोगा क' रखलनि, अपन अरजल भव्य भवन बना साहित्य साधनामे रत छथि। हिनक आवास भ्रमरकुंज जनकपुरक रेलवे स्टेशनसँ उत्तर सहजहि नजरि पर आबि जाइछ, जत्त साहित्य मनिषी लोकनिक निरन्तर आवाजाही लागल रहैत अछि।

अपन लेखनीक बलपर पायाक एहि पार ओहिपार समान रूपें समादृत भ्रमर अपन इतिहास स्वयं रचलनि अछि। अपन प्रकाशनक माध्यमसँ आनो साहित्यकारकेँ सोझाँ आनि नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ पुष्ट कयलनि अछि। हुनक मूल्यांकन जेना होयबाक चाही से संभव थिक नहि भेल हो, तकर कारण पूछलापर ओ महज मुस्किया दैत छथि, मुदा एकटा आरोप तँ लगिते छैक मैथिली मंच सभपर दस प्रतिशत लोकक कब्जा रहैत अछि, लर-जर रहैत अछि आ भ्रमर सन सेवक साहित्यकार कतौ कात क' देल जाइत छथि। मुदा, भ्रमर स्वयंकेँ हरतरहें सन्तुष्ट मानैत छथि—हमर उपलब्धि कोनो तरहेँ कम नहि, ई तँ सुधी समाजक मूल्यांकनेक कारण भ' सकल अछि ने तखन विभेद कथीक।

भ्रमरक साहित्यिक यात्रा

बालसाहित्य आ कविता, गीत सदृश्यक मुक्तक विधासँ शुरू भेल हुनक सृजन यात्रा समय सन्दर्भ संगहि विधागत रूपमे विस्तारित होइत गेल। विसं 2020/021 साल अर्थात् विगत 56 वर्षसँ ओ साहित्य सृजनमे क्रियाशील छथि। आरम्भक करीब 25 वर्ष अर्थात् 2046 साल धरि ओ मुख्यत: कविता, गीत, गजल, नाटक, कथा आदि लिखलनि। 2046 सालमे देशमे लोकतन्त्रक स्थापना भेलै तकरा बाद ओ कथा, अनुसंधान, यात्रा, उपन्यास सदृश्यक विधामे सेहो लिखय लगलाह। एहि तरहें भ्रमरक रचनासभक प्रथम चरण (2020/021 सालसँ 2046 सालधरिके प्रथम चरण आ 2046 सालसँ अद्यपर्यन्त दोसर चरणके रूपमे चित्रण कयल जा सकैछ।

प्रथम चरण : (2020/021-2046 सालधरि)

राम भरोस कापड़िक साहित्यिक यात्रा हाईस्कूलसँ शुरू होइत अछि। बाल्यकालहिसँ राजनीतिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक चेतनासँ भरल भ्रमरक रचनाशीलता चित्रकारक रूपमे शुरू भेल छल। स्कूलमे अध्ययन करैत काल ओ चिरै, आदमी, देवी-देवता, राजा, फूल, गाछ आदिक सुन्दर चित्र बनबैत छलाह। जहन ओ सरस्वती हाईस्कूलमे अध्ययनरत छलाह तखने हुनक भेंट डॉ. धीरेन्द्र संग भेल छलनि। डॉ. धीरेन्द्रक सानिध्यमे रहि क' ओ हिन्दी, मैथिली आ नेपाली साहित्यक चर्चित साहित्यकारसभक रचनासभ पढ़लनि। डॉ. धीरेन्द्र अपन शिष्यसभकेँ पहिने पढ़बाक, तकरा बाद मात्र लिखबाक सलाह दैत छलाह। सन् 1964मे हुनक पहिल रचना **ईमानदार बालक** नामक बालकथा पटनासँ प्रकाशित होबयवला तत्कालीन सर्वाधिक लोकप्रिय मैथिली पत्रिका **मिथिला मिहिर**मे प्रकाशित भेल छल। तकरा बाद कोलकात्तासँ प्रकाशित **आखर** नामक मैथिली पत्रिकाक सितम्बर+अक्टूबर 1968 के अंकमे हुनक '**अन्हरिया-इजोरिया**' नामक कविता प्रकाशित भेल छल।

अधिकांश साहित्य स्रष्टासभक सृजनाक आरम्भ बाल साहित्य आ कविता, गीत सदृश्यक कोमल (पद्यविधा)सँ भेल पर्याप्त उदाहरण हमरासभक समक्ष अछि। भ्रमरक सृजनाक श्रीगणेश बाल कथासँ भेल छलनि। हुनक दोसर प्रकाशित विधा छल कविता। साहित्यिक यात्राक क्रममे हुनकाद्वारा लिखल पहिल पुस्तक अछि— **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ** (कविता संग्रह)। जे विसं 2029 सालमे प्रकाशित भेल छल। तकराबाद 2036 सालमे '**नहि, आब नहि**' (दीर्घकविता), सन् 1983 मे '**मोमक पघलैत अधर**' (गीत-गजल संग्रह) सन् 1990 मे '**अप्पन अनचिन्हार**' (कविता संग्रह) प्रकाशित भेल छल तँ सन् 1990 मे **नहि आब नहि** दीर्घ कविताक नेपाली अनुवाद '**भयो अब भयो**' तथा '**बस अब नहीं**' (हिन्दी अनुवाद) सेहो प्रकाशित भेल छल। विसं 2070 मे '**अन्हरियाक चान**' (गजल संग्रह) प्रकाशित भेल छलनि।

दोसर चरण (2046 सालसँ अद्यपर्यन्त)

यद्यपि ओ शुरुएसँ पद्य संगहि गद्य रचनासभ सेहो करैत छलाह। मुदा, हुनक साहित्यिक जीवनके दोसर चरणमे पद्यसँ अधिक गद्य रचनाक प्रधानता देखल जाइत अछि। भारतके चर्चित सरकारी प्रकाशन मैथिली अकादमी पटनाद्वारा सन् 1984मे प्रकाशित '**तोरा संगे जएबौ रे कुजवा**' (कथा-संग्रह) हुनक पहिल गद्य ग्रन्थ अछि। वि सं 2065 सालमे हुनक दोसर कथा-संग्रह 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' प्रकाशित भेल छल। भ्रमरक करीब एक दर्जन नाटक सेहो प्रकाशित छनि। जाहिमे **रानी चन्द्रावती** (2045 साल), **एकटा आओर वसन्त** (2052 साल), **महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक** (2054 साल), **भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू** (नेपाली अनुवाद) 2064 साल, **भैया अएलै अपन सोराज** (नाटक) 2067 साल तथा ललित कला प्रतिष्ठानद्वारा प्रकाशित **सूलीपर इजोत एवं अन्य नाटक** प्रकाशित अछि।

मैथिली साहित्य, कला, संस्कृति, यात्रा, मिथिला चित्रकला, राजनीति आ पत्रकारिता भ्रमरक पसन्दीदा विषयवस्तु थिक। एहि विषयसभपर ओ गहन अध्ययन आ अनुसंधान सेहो कयने छथि। अनुसंधानक क्षेत्रमे हुनक **जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू** (2056 साल), **राजकमलक कथासाहित्यमे नारी** (2064 साल), **लोकनाट्य : जट-जटिन** (2064 साल) **Cultural Heritage of Janakpur** : (2062 साल), **मैथिली लोकसंस्कृति** (आलेख संग्रह) 2066 साल, **तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म** (यात्रा आलेख

संग्रह), (प्रकाशक : साझा प्रकाशन, 2067)। **मैथिली लोक संस्कृति : विविध आयाम** (प्रकाशक : नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, 2018 ई.) **मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस** प्रकाशक (भोर सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था, 2017 ई.) हुनक अनुसंधानमूलक कीर्तिसभ अछि।

हुनकाद्वारा लिखित **जनकपुर लोकचित्र** (2046 साल), **समयको अन्तराल पछ्याउदै** (आलेख संग्रह, 2066 साल) **ठेकान पर** (विचार संग्रह) तथा **समय-सन्दर्भ** (निबन्ध संग्रह) 2068 मे प्रकाशित भेल छल। मधेस आन्दोलनपर आधारित हुनक पहिल उपन्यास **घरमुँहा** 2069 सालमे प्रकाशित भेल छल।

नेपाली भाषामे प्रकाशित भ्रमरके कृतिसभ :

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' मातृभाषा मैथिली संगहि नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो लिखने छथि। भ्रमरद्वारा लिखित करीब चारि दर्जन पुस्तक मध्य एक दर्जन नेपाली भाषामे अछि। विशेष क' मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति आ लोकगाथा सदृश्यक गहन एवं अनुसंधानमूलक रचना ओ नेपालीमे कयने छथि। पुस्तकाकार वाहेक सेहो हुनक अनेकौ अनुसंधानमूलक लेख-रचनासभ नेपालक **गोरखापत्र, राइजिङ नेपाल, कान्तिपुर, द काठमाडौ पोस्ट, राजधानी दैनिक** सहित **मधुपर्क, गरिमा, सर्वोत्तम, मिर्मिरे** आदि पत्रपत्रिकासभमे प्रकाशित छनि।

नेपाली भाषाक पुस्तक

भयो अब भयो (अनुवाद) **बस अब नही**

भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद) 2064

जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : 2056 साल

तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह), प्रकाशक : साझा प्रकाशन, 2067

मैथिल लोकसंस्कृति : विविध आयाम (2075) (ने प्र. प्रतिष्ठान), **कमलादी आजको धनुषा** : 2039 साल

समयको अन्तराल पछ्याउदै (आलेख संग्रह, 2066 साल)

घरमुँहा उपन्यासको नेपाली अनुवाद (2023 ई).

स्थानीय नेपाली दैनिकहरू सुप्रभात (2054) केही बर्ष र हाल **जनकपुर एक्सप्रेस** (2055) देखि निरन्तर सम्पादन-प्रकाशन गर्दै आएको।

आलेख : समसामयिक सन्दर्भमा विवेचनात्मक सांस्कृतिक अध्यात्मिक पुरातात्विक र अन्य साहित्यिक लेख-रचनाहरू नेपालका सबै प्रतिष्ठित पत्रहरू गोरखापत्र, राइजिङ नेपाल, काठमाडौ पोस्ट, राजधानी दैनिक लगायत मधुपर्क, गरिमा, कान्तिपुर, सर्वोत्तम, मिर्मिरे आदिमा निरन्तर प्रकाशित भइ रहेको।

नेपाली पत्रकारितामे भ्रमरक योगदान

साहित्य आ पत्रकारितामे गजबके सम्बन्ध होइत अछि। नेपाली साहित्यक इतिहास दिस ध्यानाकर्षण कयलापर देखैत छी जे फ्रायडवादी कथाकार वीपी कोइरालासँ ल' नारायण वाग्ले धरिक चर्चित साहित्यकारसभ साहित्य संगहि पत्रकारितामे सेहो सक्रिय रहलाह। तहिना रामभरोस कापड़ि भ्रमर सेहो साहित्यकार संगहि राष्ट्रीय स्तरक सिद्धस्थ पत्रकार सेहो छथि।

'जनकपुरका प्रतिभाशाली पत्रकारहरु' नामक पुस्तकके लेखक उपेन्द्र नागवंशीके कहब छनि जे भ्रमर 2026-027 सालमे **वैदेही** साप्ताहिकके कार्यालय प्रतिनिधिक रूपमे पत्रकारिता जगतमे प्रवेश कयने छलाह। 2046 सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्चात् देशमे निजी क्षेत्रक ब्रोडसिट पत्र-पत्रिकासभक प्रकाशन शुरू भेल छल। राजधानीसँ प्रकाशित एहि प्रकारक पत्र-पत्रिकासभमे कान्तिपुर पब्लिकेशंसक **कान्तिपुर दैनिक** सर्वाधिक चर्चित भेल। **कान्तिपुर** प्रकाशित भेलाक पश्चात भ्रमर 2049 सालसँ करीब 5 वर्ष धरि **कान्तिपुर**क जनकपुर संवाददाताक रूपमे काज कयलनि आ बेस नाम कमौलनि।

साहित्यिक पत्रकारिता अपेक्षकृत कठिन आ महग मानल जाइछ। सरकारी अनुदानसँ वंचित तथा सीमित पाठककेँ पसिन पड़यबला साहित्यिक पत्रकारिताके आर्थिक रूपसँ जोखिमपूर्ण मानल जाइत अछि, मुदा भ्रमर जोखिमपूर्ण यात्रा करबामे माहिर छथि ओ स्वयं प्रकाशक आ सम्पादक रहल। **अर्चना** नामक साहित्यिक पत्रिका मैथिली भाषामे 2030मे प्रकाशन कयलनि। तकरा बाद नेपाली भाषामे **अंजुली** मासिक तथा मैथिली द्वैमासिक **आंजुर** नामक पत्रिकाक प्रकाशन आ सम्पादन कयलनि। स्वरूप राजनीतिक पत्रिकाक होइतहुँ समकालीन नेपाली आ मैथिली साहित्यक चर्चित साहित्यकार सभ यथा : श्यामसुन्दर शशि, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रमेश रंजन झा, धर्मेन्द्र झा, प्रेम विदेह ललन, अमरेन्द्र कुमार यादव, नित्यानन्द मण्डल, सुजीत कुमार झा सहित दर्जनो साहित्यकारक पहिल रचना प्रकाशित करबाक सौभाग्य भेटल। **गामघर** साप्ताहिक विसं 2039 सालसँ भ्रमरक सम्पादन आ प्रकाशनमे निकलल। जे अद्यावधि

प्रकाशित होइत अछि। **गामघर** देशक पहिल मैथिली पत्रिका अछि जे लगभग 40 वर्षसँ प्रकाशित होइत आयल अछि।

विसं. 2050 सालसँ जनकपुरमे आधुनिक पत्रकारिता शुरू भेल मानल जा सकैछ। आधुनिक ऑफसेट प्रेस स्थापना भेलाक पश्चात जनकपुरसँ **जनकपुर टुडे** दैनिक प्रकाशन भेल छल। बृजकुमार यादव, श्यामसुन्दर शशि आ राजेश कुमार कर्णक संयुक्त प्रयाससँ शुरू भेल **जनकपुर टुडे** सम्प्रति प्रदेश 2के सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका मानल जाइत अछि। पाछाँ 2054 सालसँ जनकपुरमे शुरू भेल दोसर नेपाली दैनिक – **सुप्रभात**। जकर सम्पादक रामभरोस कापड़ि भ्रमर छलाह। तकरा बाद 2055 सालसँ भ्रमरके प्रमुख सम्पादनमे **जनकपुर एक्सप्रेस** (2055) नामक नेपाली दैनिक प्रकाशन भेल जे अद्यावधि प्रकाशित होइत अछि।

सम्पादक व्यक्तित्व

सम्पादन एक कला अछि। लक्षित उद्येश्य अनुसार पत्र–पत्रिकाक वास्ते विषयवस्तु आ तस्वीर चयन करब, पेज डिजाईन करब, समसामयिक वैश्विक घटनाप्रति साकांक्ष तथा भाषा साहित्य, कला, संस्कृतिक जानकार व्यक्तिमात्र सम्पादक भ' सकैछ। एक गोट सम्पादकके देशक प्रचलित कानूनी व्यवस्थाक जानकारी होयब अति आवश्यक होइछ। कारण पत्र–पत्रिका किंवा रेडियो, टेलीभिजनमे प्रकाशित होबएबला लेख, रचना, सम्पादकीय, समाचारक कारणसँ सेहो अनेको पत्रकार आ सम्पादक कानूनी कार्यवाहीमे पड़ैत अछि। पाठककेँ पसिन पड़यबला विषय–वस्तुक चयन तथा समकालीन विषय–वस्तुक संकलन सम्पादककेँ वास्ते चुनौतीक विषय होइत अछि।

एहन विषम परिस्थितीमे सेहो चारि दशकधरि सम्पादकके रूपमे सक्रिय रहब रामभरोस कापड़ि भ्रमरक विशेषता छनि।

पत्रकारक रूपमे पत्रकारिता पेशामे प्रवेश कयनिहार भ्रमर करीब आधा दर्जन पत्र–पत्रिकाक सम्पादन कयने छथि। एकरा अतिरिक्त विभिन्न संघ–संस्थाद्वारा प्रकाशित स्मारिका, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित पत्रिका तथा साहित्यिक पुस्तकसभक सेहो सम्पादन कयने छथि।

मैथिली भाषामे प्रकाशित **अर्चना** मासिक, **गामघर** साप्ताहिककेँ सम्पादकक रूपमे ओ जे प्रतिष्ठा मैथिली पत्रकारिता क्षेत्रमे अर्जन कयने छथि से अनुकरणीय अछि। तहिना **अंजुली** नेपाली पत्रिका आ **सुप्रभात** दैनिक एवं **जनकपुर एक्सप्रेस** दैनिकक सम्पादकके रूपमे सेहो ओ बेस नाम कमौलनि। जहाँधरि साहित्यिक पुस्तकसभक

सम्पादनक प्रश्न अछि तँ ओ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा 2051 सालमे प्रकाशित मैथिली पद्यसंग्रह तथा ललित कला प्रतिष्ठान द्वारा 2051 सालमे प्रकाशित **लाबाक धान** (कविता–संग्रह)के सम्पादन कयने छलाह। स्वर्गीय मथुरानन्द चौधरी माथुर लिखित **त्रिशूली** खण्डकाव्यके सम्पादन आ प्रकाशन ओ 2049 सालमे कयने छलाह। हुनका सम्पादनमे प्रकाशित भेल अन्य कृतिसभ अछि—**नेपालक मैथिली पत्रकारिता** : 2044 साल, **मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप** (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान 2061 साल), **अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल** 2065 साल, **हम और तुम** (हिन्दी कविता–संग्रह) : 2066 साल। मैथिली नाटक–संग्रह (नाटक संग्रह 2067), **महाकवि विद्यापति आ नेपाल** (निबन्ध संग्रह) साझा प्रकाशन, काठमाण्डू, नेपाल, 2068, **मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन**–2069, **लोकनायक सलहेस** (निबन्ध संग्रह) 2069। **लोकनायक सलहेस**, द्वितीय खण्ड (निबन्ध संग्रह) 2070, **लोकगाथा नायक दीनाभद्री**–निबन्ध संग्रह (2070 साल), **अबधी संस्कृति विविध आयाम** (निबन्ध संग्रह,2070 साल), **सोन्हगर गन्धक अन्वेषी** : डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन (कृतित्व–व्यक्तित्व, 2073 साल)। प्रमुख अछि।

नया कार्यभार

राम भरोस कापड़ि भ्रमर एखन मधेश सरकारक नियुक्तिमे मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष भेलाह अछि। कही तँ संस्थापक अध्यक्ष। मधेश भीतरक भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, पुरातत्व, अनुवाद आदि विभिन्न विधामे अध्ययन, अनुसन्धान संगे सभक संरक्षण सम्वर्द्धनक हेतु कार्य करबाक अभिभार एहि प्रतिष्ठानकेँ भेटल छैक।

निष्कर्ष

बहुमुखी प्रतिभाक धनी रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालीय मैथिली साहित्यकार सभ मध्य सर्वाधिक सक्रिय आ सबसँ बेसी पुस्तक प्रकाशन कयनिहार स्रष्टा छथि। मैथिली संगहि नेपाली आ हिन्दीमे सेहो कलम चलौनिहार भ्रमर साहित्यक प्राय: सम्पूर्ण विधामे लिखने छथि। हुनक सयौ फुटकर रचनासभ नेपाल आ भारतक पत्र–पत्रिका तथा जर्नलसभमे प्रकाशित अछि। साहित्य लेखन संगहि पत्रकारितामे हुनकर सक्रियता एखनहुँ ओहिना अछि।

सक्रिय लेखन संगहि मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक संरक्षण

सम्वर्धनमे सेहो हुनक अहम योगदान रहल अछि। ओ कुशल संगठक तथा प्रशासक सेहो छथि। खासमे साझा प्रकाशनके अध्यक्ष एवं प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्यक रूपमे ओ मैथिली भाषा, साहित्यक संरक्षण सम्वर्धनमे अविस्मरणीय योगदान देलनि अछि। बघचौड़ा माध्यमिक विद्यालयके व्यवस्थापन समितिक अध्यक्षके रूपमे अपन तीनू बेरक कार्यकालमे ओ शिक्षाक गुणस्तर सुधार तथा विद्यालयके भौतिक पूर्वाधार निर्माणमे विशेष योगदान देने छलाह। तकर मूल्यांकन करैत शिक्षा मंत्रालय दू बेर आ जिल्ला शिक्षा समिति एक बेर सम्मानपत्र द' सम्मानित कयने छलनि।

एहि प्रकारें भ्रमरके समग्र व्यक्तित्वक मूल्यांकन कयलापर देखै छी जे ओ मैथिली आ नेपाली भाषाक सिद्धस्थ साहित्यकार, पत्रकार, मैथिली भाषा अभियानी आ समाजसेवी छथि। जे लगभग विगत पाँच दशकसँ एहि क्षेत्रमे क्रियाशील छथि।

भ्रमरक कृतिक विश्लेषण

कथाकार भ्रमर

कविता, गीत, गजल, कथा, नाटक, निबन्धादि साहित्यक प्राय: सम्पूर्ण विधामे निरन्तर आ धुरझार कलम चलौनिहार भ्रमरक तीन गोट कथा-संग्रह प्रकाशित अछि। मानव मनोविज्ञानकेँ उजागर करैत लिखल गेल कथासभक संग्रह **तोरासंगे जएबौ रे कुजवा** (कथा-संग्रह 1984 ई.), महिला अधिकार तथा महिला मनोविज्ञानकेँ बिकछबैत 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' (कथा-संग्रह विसं 2065) आ आधुनिक जीवन शैलीक विश्लेषण करैत 'एण्टी भायरस' (कथा-संग्रह विसं 2076)। एकरा अतिरिक्त भ्रमर लिखित अनेको कथा नेपाल आ भारतक विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं संग्रहसभमे प्रकाशित अछि।

कथा तत्वक आधारपर भ्रमरक कथासभक विश्लेषण—

क) कथावस्तु :

भ्रमर करीब एक सयसँ अधिक कथा लिखने छथि। स्वाभाविक रूपसँ ई कथासभमे वर्णित कथावस्तु भिन्न-भिन्न अछि, मुदा कथातत्वक हिसाबसँ हुनक कथासभमे किछु समानता जरूर अछि आ ओ तत्व अछि—मानवीय मूल्य मान्यताकेँ ओकालत करब आ महिला अधिकार आ महिला हिंसा प्रतिक विद्रोह। **तोरा संगै जएबौ रे कुजवा** (1984 ई.)क प्रकाशन बिहारक सरकारी प्रकाशन संस्था मैथिली अकादमी पटनाद्वारा भेल छल। भारतके सरकारी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कोनो नेपाली नागरिकके ई पहिल पुस्तक थिक। एहि पुस्तककेँ प्रकाशित कर'बला मैथिली अकादमीक तत्कालीन निर्देशक डा. देवकान्त झा एहि पुस्तकक प्रकाशकीयमे लिखैत छथि—एहिमे समकालिक परिवेशमे जनसामान्यक व्यथा-कथा ओ खट-मीठ अनुभवक बड़ा हृदयग्राही चित्रण भेल अछि। आजुक भोगल यथार्थ, जटिल मनोग्रन्थी, भफाइत जिनगी आ उधिआइत

मोन, टुटैत जीवनमूल्य आ भसिआइत लोक एवं व्यक्तिक घुटन, परिवारक टुटन आ समाजक भागदौड़क एहि संकलनमे सजीव परिदृश्य अछि...

मैथिली साहित्यक समीक्षक चन्द्रेश[1] भ्रमरकेँ संवेनशील कथाकारक संज्ञा दैत छथि। भ्रमरक दोसर कथाकृति **हुगली ऊपर बहैत गंगा**क समीक्षा करैत चन्द्रेश लिखैत छथि, ''रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'के 32 गोट कथासभक एहि संग्रहमे कथाकार नारी मनक संवेदनाकेँ उजागर कयने छथि। एहि सत्यकेँ केओ बिसरि नहि सकैछ जे नारी शरीरकेँ आदिकालहिसँ पुरुष अपन धन-सम्पत्ति जकाँ उपभोग करैत आयल अछि। नारीक सुख, दु:ख तथा पीड़ाकेँ बेबास्ता करैत आयल अछि। नारी कुण्ठित भ' जीवन बसर करबा लेल विवश अछि। नारी देह मात्र नहि प्रत्युत हुनका सभमे सेहो सम्वेदना होइछ से भाव भ्रमरक कथासभमे विद्यमान अछि। यद्यपि भ्रमर लिखित अधिकांश कथासभमे नारी मनोविज्ञानकेँ मनोवैज्ञानिक रूपसँ उजागर करबाक प्रयास भेल अछि।

एहि कथासंग्रहमे संग्रहित हीरा कथामे नारीक दैहिक हिंसाक भावुक रूप प्रदान कयल गेल अछि। अपन असन्तोष तथा दैहिक सुख प्राप्तिक वास्ते हीरा नामक पुरुष सोनाबाइक कोठापर जाइत अछि। ओकर एकमात्र उद्देश्य रहैत छैक—मनोविनोद करब। कोठाक बाइ सोनाबाइ अपन पेशागत धर्म पालन करैत पुरुषकेँ परम सुख प्रदान करबाक प्रयास करैत अछि। अपने निर्वस्त्र भ' अपन शरीर अर्पण करैत अछि, मुदा हीरा किंकर्तव्यविमूढ़ अछि। ओकर हृदयमे नारीप्रति सम्मानक भाव जागृत भ' जाइत छैक। एम्हर कोठा संचालिका महिलाक कोठापर दोसर ग्राहकके प्रतीक्षामे रहल सोना जल्दीसँ ग्राहककेँ निपटा दोसर ग्राहककेँ चरम सुख देबाक जोगाड़मे रहैत अछि। मुदा, सोनाबाइक आत्मीयता देखि क' विभोर भेल हीरा कहैत अछि, 'पहिने एक गोट ग्राहकसँ निपटत तँ दोसरक आश ?[2] हीराक एहन आत्मीय वचन सुनि सोनाबाइ भावुक भ' जाइत अछि आ कहैत अछि, 'हम आइ पहिल बेर कोनो सुच्चा मनुक्खक दर्शन कयलहुँ अछि। फेर कि छल दुनूमे आत्मीय भाव उत्पन्न भ' जाइछ।'

संग्रहक दोसर कथा थिक 'भगजोगनी'। जाहिमे रेखा नामक युवतीक भोगलिप्साक कथा वर्णित अछि। रेखा अपन घर-परिवार बर्बाद करबामे सेहो पाछाँ नहि पड़ैत अछि। ओ बिसरि जाइछ जे अर्थलिप्सा सम्बन्धकेँ बर्बाद क' दैत छैक। आ तकरा बाद परिणाम शरीर आ जीवनकेँ बर्बादी।

1. अस्मिता,अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 113। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक तरुण मिथिला प्रकाशन,माऊँबेहट, दरभंगा

2. 6 अस्मिता,अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 146। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक : तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा

भ्रमर लिखित एक अन्य कथा अछि, 'अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही' जाहिमे गणेश नामक युवककेँ स्मरण करबाक प्रयास भेल अछि। संस्मरणात्मक रिपोर्ताज शैलीक एहि कथामे गणेशक गुण-गौरवकेँ चित्रण कयल गेल अछि। तहिना साम्यवादी विचारधाराकेँ आगाँ राखि लिखल गेल अन्य कथा अछि, 'कामरेड'। जाहिमे सर्वहारा वर्गपर अद्यावधि होइत आयल विभेद विरुद्ध स्वर बुलन्द कयल गेल अछि। सर्वहारा एकता ऊपर जोर देल गेल अछि।

भ्रमरद्वारा सृजित करीब एक सय कथामध्य अधिकांशमे नारी मनोविज्ञानकेँ मूल कथ्य बनाओल गेल अछि। मैथिली साहित्यमे राजकमलके फ्रायडवादी कथाकारक रूपमे चित्रण कयल जाइत अछि। समकालीन मैथिली कथाकारसभमे रामभरोस कापड़िकेँ आजुक राजकमल चौधरी कहबामे कोनो अत्युक्ति नहि होयबाक चाही।

राजनीतिमे सेहो रुचि रखनिहार भ्रमरकेँ किछु कथासभमे सामाजिक न्याय तथा मधेस अधिकारक स्वर सेहो उठल अछि। ताहिमध्य एक अछि, 'जय मधेश'। कथामे एक मधेश, एक प्रदेशक नामपर भेल आन्दोलनक चित्रण अछि। मधेशी आ पहाड़ी बीचक बढ़ैत दूरीकेँ समानता रूपी नीति तथा कार्यक्रमसँ मात्र घटाओल जा सकैछ। साहित्य समीक्षक चन्द्रेश भ्रमरकेँ एक सजग आ वातावरण प्रति साकांक्ष कथाकारक संज्ञा दैत छथि। हुनके शब्दमे, 'जेँ कि कथाकार भ्रमरक चौकन्न दृष्टि समाजक प्रति सजग अछि तेँ जीवन मूल्यक संवाहक बनैत ओ ओहि पात्रक सृष्टि करैत छथि जे समाजमे आइयो अछि। खास क' नारी पात्र हिनक संवेदनशील मोनकेँ छुबैत अछि। ओ नारीक अधिकार ओ चेतनाबोधक पक्षधर छथि। ओ कखनो नारीक पक्षमे छाती तानि क' ठाढ़ होइत छथि। मुदा, अपसंस्कृतिमे घेराएल नारीक वीभत्स छवि अवस्से हिनक हृदयकेँ पीड़ित-सीदित करैत अछि।... ओ शोषणक विरोधमे झंडा उठबिते छथि। हिनक संवेदनशील मोनमे जीवनक प्रति रागात्मक बोध अछि।[1]

(ख) पात्र :

ग्राउण्ड जीरो अर्थात् सीमान्त वर्गक नजदीक रहि साहित्य सृजन तथा पत्रकारिता कयनिहार भ्रमर आम जनताक कथा लिखैत छथि। स्वभावत: हुनक अधिकांश पात्रसभ आम नागरिकक रहैत अछि। कथावस्तु अनुसारक पात्र हुनक दोसर विशेषता अछि।

हुगली ऊपर बहैत गंगा कथासंग्रहमे संग्रहित कथासभ मध्य हीराक प्रसंगमे

1. अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 113। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा

किछु चर्चा ऊपरो भेल अछि। ई कथा नारीक दैहिक हिंसाक भावुक वर्णन करैत अछि। अपन असन्तोष आ दैहिक सुख प्राप्तिक लेल हीरा नामक पुरुष सोनाबाइक कोठापर जाइत अछि। आ सोनाबाइक आत्मीयता देखि प्रेमजालमे पड़ि जाइत अछि। भ्रमरद्वारा लिखित कथासभक विशेषता तथा पात्रसभक वास्तविकता मादे चन्द्रेश अपन समीक्षा पुस्तकमे लिखने छथि, 'नेपाली मैथिली कथा-साहित्यमे निस्सन्देह कथाकार भ्रमरक कथासभमे जीवनक राग रंग अछि आ नव युगक नारी प्रति विशेष श्रद्धा-भाव सेहो। एहि कारणसँ हुनक अधिकांश कथामे नारी जीवनक संघर्ष उजागर होइत अछि। यथार्थक त्रासदी रहैत अछि, जे सामाजिक विडम्बनाक कारणे जनमैत अछि तथा एकर मूल कारण होइत अछि सामाजिक व्यवस्था।'[1]

भ्रमरक तेसर कथाकृति छन्हि **एण्टीभायरस**। एहिमे संग्रहित कथाक मादे विद्वान समीक्षक डा. राम दयाल राकेश लिखैत छथि, ''भ्रमरक कथा सभ अपन समय आ समाजकेँ अर्थपूर्ण आख्यान कहल जा सकैत अछि। वास्तवमे हुनक दृष्टिबोध अत्यंत व्यापक अछि आओर कथात्मक संसारक आयाम सेहो विस्तृत एवं वैशिष्टपूर्ण छैक। एक दिस किछु कथा महानगरीय जीवनक अयना कहल जा सकैत छैक तँ दोसर दिस ग्रामीण जीवनक या जनपदीयक जीवनक जीवंत दस्तावेज। मिथिलांचलक जनजीवनक विविधरंग, विविध पक्ष, विभिन्न आयामक उद्घाटन करबामे हुनका महारत हासिल भेल छन्हि। समीक्ष्य कथा-संग्रहक सभ कथा रेखांकित कर' योग्य छैक आ कथा शिल्पक दृष्टिकोणसँ बेजोड़ कहल जा सकैत अछि।

कथा-संग्रहक किछु कथाक परिवेश आ पृष्ठभूमि मिथिलांचलक माटि-पानिसँ सम्बन्धित छैक आ मिथिलांचलक सामाजिक संरचनामे जे अभूतपूर्व परिवर्तन दिनानुदिन राखल जाइत छैक तकर सटीक आ सांदर्भिक संकेत एवं सूचना पाठक सभकेँ द' सकैत छैक। कथाकार मनोयोगपूर्वक एवं महत्वसँ कथाक शिल्प (ड्राफ्ट) तैयार करबामे निपुण देखि पड़ैत छथि।[2]

ग) वातावरण

कथावस्तु अनुसारक पात्र, पात्र अनुसारक वार्तालाप आ वातावरण चित्रण करबामे भ्रमर माहिर छथि। **तोरा संगै जएबौ रे कुजवा** कथासंग्रहमे संग्रहित अधिकांश कथा ग्रामीण परिवेशक भेलाक कारणेँ एहि कथासभमे ग्रामीण वातावरणके वर्णन भेटैत अछि तँ

1. अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 113। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा
2. एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार : रामदयाल राकेश, आंजुर, मैथिली द्वैमासिक, जनकपुरधाम

हुगली ऊपर बहैत गंगा कथा संग्रहक अधिकांश कथासभ कोलकत्ता महानगरक वातावरणमे लिखल गेल अछि अत: एहि कथासभमे शहरी वातावरण, शहरमे संचालित चकला (वेश्यालय), शहरक कोलाहलमय वातावरण आदिक चित्रण भेटैत अछि। भ्रमरक पछिला अर्थात् नवका कथा-संग्रह **एन्टी भाइरस** कथा-संग्रहक अधिकांश कथासभ आधुनिक परिवेशक अछि तेँ एहि कथासभमे आधुनिक समाजक चित्र देखल जा सकैछ। शहरिया वातावरणक चित्रण देखल जा सकैत अछि।

घ) भाषा शैली :

भ्रमर मानक भाषाक साहित्यकार छथि। अपन उच्च शिक्षा तथा उच्च वर्गक मनुक्ख सभक संगक संघतिक कारण हुनक भाषा मानक अछि। यद्यपि ओ लोकभाषाक पक्षधर छथि आ हुनक अनेको कथामे ग्रामीण ठेठ भाषाक प्रयोग भेल अछि। जहाँधरि हुनक शैलीक प्रश्न अछि तँ ओ वर्णनात्मक शैलीक बेसी अछि। किछु कथा कथोपकथन शैलीक सेहो अछि। मनोवाद शैलीमे लिखित हुनक किछु कथा अत्यन्त लोकप्रिय भेल अछि। कथाक आदिसँ अंतधरि रोचक आ रोमांचक बनेबाक हुनकामे गजबक कला छनि।

ङ) उद्देश्य :

अर्थ, काम, मोक्ष, ख्याति प्राप्तिसँ स्वान्त: सुखाय प्रयोजन (उद्देश्य)क वास्ते साहित्य सृजन करब शास्त्रीय मान्यता अछि। मुदा, भ्रमर अपन मोनक भाव अभिव्यक्त करबा लेल तथा सामाजिक विसंगति उजागर करबा लेल तथा सत्य, निष्ठा एवं निम्नवर्गीय पक्षमे स्वर बुलन्द करबा लेल कथा लिखैत छथि। हुनक अधिकांश कथा उद्देश्य प्रधान अछि। नेपालीय मैथिली कथा साहित्यमे भ्रमरक कथा मात्रात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिसँ अमिट छाप छोड़ैत अछि। हुनक कथासभ एक दिस मैथिली कथा भण्डारकेँ सम्बृद्ध बनौलक अछि तँ दोसर दिस आधुनिक मूल्यबोधक संवाहक सेहो बनल अछि। एहि कारणें मानवीय मूल्य बोधकेँ उजागर करैत भ्रमरक कथासभ सामाजिक अग्रगमनक दिशामे सेहो सकारात्मक हस्तक्षेप करैत अछि। हुनक कथासभ आगत भविष्यमे ऐतिहासिक मूल्यक मानल जायत से विश्वास कयल जा सकैछ। हुनक कथा-संग्रह सभ छपाइ-सफाइ आ शुद्धा-शुद्धीक दृष्टिसँ उत्कृष्ट होइत अछि। साहित्य समीक्षक चन्द्रेश लिखने छथि।[1]

1. अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 113। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा

समग्रमे विचार करी तँ भ्रमर अपन आँखिक आगाँ घटित घटनाक छायामे कथाक संसार रचैत छथि, तकरेमे रमैत छथि आ तकरे पृष्ठभूमिमे साकार होइत जिबैत छथि। हुनक कथामे कृत्रिमताक सर्वथा अभाव रहैछ आ तेँ ओ सब समयक हेतु एकटा दस्तावेजक रूपमे देखि पड़ैत अछि। लगभग दू दशकपूर्व हुनक कथाकारिता पर अपन टिप्पणी करैत मैथिलीक प्रसिद्ध समालोचक डा. रमानन्द झा रमण लिखने छथि— ''रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथा यात्राक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे कथाकारक दृष्टिमे चहटगर कथाक स्थान पर समाजमे व्याप्त भूख, अशिक्षा, शोषण, व्यभिचार, प्रशासनिक भ्रष्टाचार एवं शोषित वर्गक प्रति सहानुभूतिक महत्त्व दिस प्रयाण भेल अछि। परदुखकातरता (तरबोरा) बढ़ल अछि। वैयक्तिक कुंठाक सीमाकेँ पार कए सामाजिक दृष्टि-सम्पन्नताक क्षेत्रमे प्रवेश क' गेल अछि। ई कथा सभ भ्रमरकेँ पूर्वक अपनहि कथासँ विलग करैत अछि। युग-युगसँ शोषित-प्रताड़ितक पक्षधरक फाँटमे ठाढ़ (कामरेड) सेहो देखैत अछि। कथाकारक दृष्टिक एहि दिशामे बढ़ब निश्चिते शुभ लक्षण थिक।''

स्रोत : भजारल, 2005

उपन्यासकार भ्रमर

साहित्य समीक्षा शास्त्रमे उपन्यासकेँ सर्वाधिक प्रौढ़ विधाक रूपमे व्याख्या कयल गेल अछि। डा.राजेन्द्र प्रसाद विमल उपन्यासक विषयमे लिखने छथि, ''कार्यकारण शृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवन जगतमे अनुभव कयल यथार्थके कल्पनासँ रंगि कए रसात्मक विचारोत्तेजक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइछ।'' अर्थात् कार्यकारण शृंखलामे संकलित एहन गद्य कथानक उपन्यास अछि जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवन जगतक अनुभव कयल यर्थाथकेँ कल्पनाक रंगमे रंगि रसात्मक विचारोत्तेजक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइछ।[1]

दोसर शब्दमे कही तँ उपन्यास एक गोट एहन दीर्घ कथा अछि, जाहिमे अनेको पात्र आ कथासभ एक्कहि गोट धागासँ बान्हल रहैत अछि। गेंदा, गुलाब, बेली, चमेलीक फूलक सुगन्धित माला जकाँ।

जहाँधरि रामभरोस कापड़ि भ्रमरक उपन्यासक सवाल अछि, हुनक एकमात्र उपन्यास **घरमुँहा** प्रकाशित अछि। जकर विस्तृत समीक्षा करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

1. भूमिका : घरमुँहा उपन्यास, लेखक डा. राजेन्द्र प्रसाद विमल

क) कथावस्तु :

2063 सालक मधेस बिद्रोहकेँ मूल कथानक बना लिखल गेल डायरी शैलीक ई उपन्यास मैथिली साहित्यमे नव प्रयोग अछि। जाहिमे मधेस आन्दोलनक कारण आ आन्दोलन जन्य हिंसाके भावुक रूपमे चित्रण कयल गेल अछि।

साहित्य समीक्षक चन्द्रेश **घरमुँहा** उपन्यासकेँ समयक दस्तावेज कहैत छथि। ओ लिखने छथि, ''एहिमे अपनाके चिन्हबाक आ मानव जीवनक अन्तर्सम्बन्धकेँ दर्शयबाक प्रयास भेल अछि। वैषम्यताक विरोधस्वरूप संघर्षक स्वरमे नवताक उम्मीदक फूल फुलयबाक आ मानवीयताकेँ जोगाक' रखबाक जे स्वर उभरल अछि से अबस्से हिनक रचनात्मक ताकति थिक। ई सत्य थिक जे आजुक जीवन आ समाज तेहन षड्यन्त्रक जालमे ओझरायल अछि जे व्यवस्थारूपी विद्रूपता आ विडम्बना सम्पूर्ण सामाजिक समरसताक भावकेँ सोखि रहल अछि।''[1]

ख) पात्र :

घरमुँहा मधेस आन्दोलनक जीवन्त कथा अछि। किएक तँ एहिमे चित्रित पात्रसभ नेपाली भाषी आ मधेसी दुनू समुदायक अछि। कथानायकमे रमेश उपाध्याय एक शिक्षक छथि। मधेसमे रहि शिक्षा-दीक्षा संगहि रोजगारी सेहो करैत आयल। रमेश पहाड़ी समुदायक शिष्ट आ भद्र शिक्षक छथि। हुनका मधेसक वेष-भूषा, संस्कार आ सामाजिकताक चिन्ता छनि। ओ जाहि माटिमे जीवन बसर क' रहल छथि, ओहि माटि प्रति हुनका अगाध प्रेम छनि। समाजक प्रति उतरदायित्व आ अपन छात्र प्रति प्रेमभाव। रमेश मास्टर साहेबकेँ मधेस भूमि प्रतिक प्रेम, एहि ठामक मैथिली भाषा प्रति स्नेह, संस्कृति प्रति गौरव आ मधेस आन्दोलन प्रति समर्थन छनि। मधेस आन्दोलनकारी मध्य हुनक दू गोट शिष्य राजीव आ विनोद मास्टर साहेबक घरपर ईंटा-पाथर बरिसबैत अछि। मास्टर साहेब अर्थात् रमेश उपाध्याय एहि दुनू विद्यार्थीक नेपाली शिक्षक छथिन, मुदा पढ़य-लिखयमे विशेष ध्यान नहि देलाक कारणे रमेश सर दुनूकेँ नेपाली विषयमे फेल क' देने रहै। फेल भेलाक बाद ओ दुनू विद्यार्थी मास्टर साहेबक घरपर ईंटा-पाथर फेकैत अछि। **घरमुँहा** वर्णित अन्य पात्रसभ अछि—मास्टर साहेबक बेटी किरण, जकरा आन्दोलनकारीसभ अपहरण क' लैत छैक आ फिरौती मंगैत छैक। तहिना मास्टर साहेबक पुरान मित्र आ आन्दोलनक नायक जगमोहन आदि

1. अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति, (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 113, लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक : तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा (घरमुहाँ : पृष्ठ 374सँ 378 धरि)

एहि उपन्यासक पात्र सभ अछि। कथानकक मांग अनुसार पात्र सभक चयन भेल अछि।

ग) वातावरण :

एहि उपन्यासक कथानक जनकपुर आ जनकपुरक चारुकातक अछि तेँ एहि उपन्यासमे जनकपुरक वातावरणक प्राथमिकताक संग चित्रण कयल गेल अछि। स्टेशन एरियाक ओकिल महल्लामे घर छनि मास्टर साहेबक। तेँ **घरमुँहा**मे जनकपुर रेलवे, रेलवे स्टेशन, ओकिल महल्लाक जातीय सद्भाव आ पर्व-त्यौहारक सुन्दर चित्र बनौने छथि। मधेस आन्दोलनक क्रममे पहाड़ी आ मधेसी समुदाय बीचक सद्भाव बिगाड़यवला भूमाफियासँ ल' दुनू समुदाय बीच सद्भाव बना रखबाक प्रयासमे लागल व्यक्ति तथा प्रवृतिक भावुक चित्रण एहि उपन्यासमे देखि सकैत छी। उपन्यासमे जनकपुरक समग्र वातावरणक सजीव चित्रण देखि सकैत छी।

घ) वार्तालाप :

वार्तालाप अर्थात् कथोपकथनक दृष्टिसँ सेहो ई उपन्यास उत्तम कोटिक अछि। पात्र अनुसारक भाषा आ सटीक वार्तालाप एहि उपन्यासकेँ रोचक बनबैत अछि। उपन्यासमे एक गोट प्रसंग आयल अछि—''आन्दोलन उत्कर्ष दिस आगाँ बढ़ि रहल अछि। पहाड़ी राज्यसत्ता विरुद्ध दैनिक प्रदर्शन भ' रहल छैक। पहाड़ी समुदायक घरकेँ लक्षित क' ईंटा-पाथर फेकल जा रहल छैक, तोड़फोड़ कयल जा रहल छैक।'' एहना अवस्थामे डेराएल, घबरायल रमेश मास्टर साहेबक श्रीमती चिन्ता व्यक्त करैत छथि। ताहिपर मास्टर साहेबक स्पष्टीकरण होइत छनि—

''अहाँ व्यर्थे चिन्तित होइ छी। हमरा केओ किछु ने कहत। भरल शहरमे तँ हमरे विद्यार्थी अछि। ककरो हम बिगाड़ने नै छिऐ तँ के की करत।''[1]

ङ) उद्येश्य :

नेपाली भाषाक सुप्रसिद्ध आख्यानकार जगदीश घिमिरे अपन बहुचर्चित उपन्यास '**सकस**'मे लिखने छथि, ''आफ्नो मनको वह सबैलाई कह।''[2] अर्थात् अपन मोनक पीड़ा सभकेँ कहू। उपन्यासकार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सेहो **घरमुँहा** उपन्यास मार्फत अपन मोनक भाव आ पीड़ा सार्वजनिक करबा लेल **घरमुँहा** लिखने छथि। उपन्यास मार्फत ओ एक दिस मधेसीक जायज मांग उठेबाक प्रयास करैत छथि तँ

1. घरमुँहा उपन्यास : पृष्ठ :
2. सकस : नेपाली उपन्यास, लेखक जगदीश घिमिरे

दोसर दिस मधेस आन्दोलनक नामपर शुरू भेल अराजक गतिविधि आ सामाजिक सद्भाव विरुद्धक घटना प्रति दुख सेहो व्यक्त करैत छथि। एहि उपन्यासक उद्येश्य जनताक जायज मांगक वकालत आ पैरवी करब अछि। संगहि आन्दोलनक नामपर भ' रहल गलत क्रियाकलापक विरोध करब सेहो। अपहरणमे पड़ल बेटी किरणकेँ अपहरण मुक्त करबाक लेल ओकिल महल्ला स्थित घर-घड़ारी बेचि विस्थापित भ' रहल रमेश मास्टरकेँ फिर्ता लएबाक लेल पुन: एहि समाजमे स्थापित करेबाक लेल समाजक अगुआ सभद्वारा कयल गेल सकारात्मक प्रयास उपन्यासकेँ सुखान्तक श्रेणीमे लाबि खड़ा क' दैत अछि।

कवि तथा गीत, गजलकार भ्रमर

काव्यक विभिन्न विधा मध्य कविता, गीत आ गजल अत्यन्त कोमल विधा मानल जाइत अछि। लयबद्धता आ कोमलताक कारण ई विधा जन-जनक हृदयधरि सहज प्रवेश करैत अछि। सम्भवत: एहि कारणेँ काव्यक प्रारम्भ बाल साहित्य आ कविता तथा गीतादि सदृश्यक कोमल विधासँ भेल छल। भ्रमरक पहिल रचना सेहो कवितेक रूपमे प्रकाशित भेल छल।

भ्रमरद्वारा लिखित करीब आधा दर्जन कविता, गीत तथा गजलक संग्रह सभ बाजारमे आबि चुकल अछि। हुनक एक सयसँ अधिक कविता, गीत आ गजल नेपाल आ भारतक विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अछि। भ्रमर लिखित पहिल कविता संग्रह अछि—**बन्न कोठरी औनाइत धुआँ**, जे 2029 सालमे प्रकाशित भेल छल। एहि तरहेँ हुनका द्वारा लिखल गेल **नहि, आब नहि** (दीर्घकविता) 2036 सालमे प्रकाशित भेल। सन् 1983 मे प्रकाशित **मोमक पघलैत अधर** (गीत-गजल संग्रह) तथा **अप्पन अनचिन्हार** (कविता संग्रह, 1990 ई.) एवं 2070 सालमे प्रकाशित **अन्हरियाक चान** (गजल संग्रह) आ **युद्धभूमिक एसगर योद्धा** (कविता संग्रह) (2075) भ्रमरक टटका कविता संग्रह अछि।

क) कथ्य :

सुकोमल पदावली मार्फत गंभीर भाव अभिव्यक्त करबाक कलामे महारथ प्राप्त कयने भ्रमरक कविता, गीत आ गजलक संसार व्यापक अछि। कथ्यक आधारपर देखलासँ हुनक अधिकांश पद्यमे महिलाक मोनक पीड़ा अभिव्यक्त भेल देखल जाइत अछि।

प्रेम, विरह, करुणा हुनक पद्यक विशेषता अछि। एकरा अतिरिक्त ओ लोकगीत शैलीमे सेहो अनेको गीत लिखने छथि। वर्षाक मौसममे गाबयवला कजरी गीत मैथिलीक बहुचर्चित ऋतुगीत अछि। आधुनिक परिवेशमे लिखल गेल भ्रमरक ई कजरी अत्यन्त लोकप्रिय भेल छल आ **एकटा आओर वसंत** नामक टेली फिल्ममे सेहो एकर प्रयोग भेल रहय—

'सखि हे। सावनके बुन झिसी। पिया संग खेलब पचिसी ना... ।'

भ्रमरके गीत,गजल आ कवितामे मिथिलाक विभूति सभ प्रति सम्मान आ राष्ट्रीय एकताप्रति सजगताक भाव सेहो देखि सकैछी। नेपालीमे लिखल हुनक एक गोट गजल मानवीय मूल्य मान्यताके स्मरण करबैत अछि—

फेरि एउटा बुद्ध अनि सीता चाहिन्छ।
कर्ममा विश्वास भर्ने गीता चाहिन्छ।।
बन्दुकको भाषा छोड़ी सयपत्रीको माया बोकी,
अशांतिको समुद्र विच भीटा चाहिन्छ।।
हिमाल, पहाड़, तराई, बेसी एउटै अचकन हो,
भाव, भाषा, शैली भिन्न, एउटै धड़कन हो,
हामी पहिला नेपाली हौँ, नेपाल चाहिन्छ!
फेरि एउटा बुद्ध अनि सीता चाहिन्छ!

वर्षाऋतुक कारणे अस्त-व्यस्त बनल मानवक दैनिकीकेँ ओ एहि मैथिली कवितामे सुन्दर अभिव्यक्ति देने छथि—

लगैए, आबि गेलै मनसून
कएक रातिसँ
अनेरे उझलैत वर्षाक पानि
मेघो अपस्यांत भ' गेल हयत,
नित दिनक 'मौर्निंग वाक'
बाधित भ' गेल अछि,
सभ दैनिकी फुहीक बुन्न
आ बिजुलीक कड़कबमे।।

भ्रमर मैथिली,नेपाली आ हिन्दीमे निरन्तर लिखैत रहनिहार कवि छथि। हुनक एकगोट

हिन्दीक गजल अत्यन्त लोकप्रिय अछि। एहि हिन्दी ग़ज़लमे ओ एक गोट नायिकाक सुन्दरताक बखान कयने छथि—

क्योंकर तुझे देखूँ, क्या ख़ास है तुझमें सनम
रोशनी में आँखें चौंधियाए क्या ख़ास है तुझमें सनम
बरबस ही दिल को खिंच सके ऐसा दिलबर कहाँ पाऊँ
मरूभूमि सा कठिन रास्ता है क्या ख़ास है तुझमें सनम।

भ्रमर लिखित **अन्हरियाक चान** गजल संग्रहमे संकलित गजलसभक समीक्षक अजित आजाद 'जीवन मूल्यक पक्षमे ठाढ़ ग़ज़ल'क संज्ञा दैत छथि। आजाद लिखैत छथि, 'भ्रमरजी अपन मोनक बातकेँ सोझ-साझ रखबाक आग्रही छथि। मोनमे जे भाव अयलनि, जाहि रूपमे अयलनि तकरा ओ लिखि बैसलाह।'[1]

रामभरोक कापड़ि भ्रमर लिखित पहिल कविता संग्रह **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ**मे संकलित 37 गोट कविताक विषयमे साहित्य समीक्षक चन्द्रेश लिखैत छथि, ''37 गोट कविताक संग्रह थिक **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ**। समसामयिक स्वर नेने युगक प्रतिनिधित्व करैत **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ** बगैर लाग-लपटकेँ दू टूक बात कहि युग सत्यकेँ निर्ममताक संग उघार करैत अछि। परिवेश आ वातावरणक सगुम्फनमे अर्थबोध जीवनक समस्याकेँ नेने जीवनक औनाहटिकेँ व्यक्त करैत अछि।''[2]

1. जीवन मूल्यक पक्षमे ठाढ भ्रमरक गजल : आलेख। लेखक : अजित आजाद। प्रकाशित : आँजुर मासिक पत्रिका। समीक्षा अंक। वर्ष 25 अंक 9 समीक्षा अंक। चैत्र बैशाख 2072। सम्पादक : रामभरोस कापड़ि भ्रमर
2. अस्मिता,अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ :455 र 456। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक तरुण मिथिला प्रकाशन,माऊँबेहट, दरभंगा

भ्रमरक साहित्यिक प्रवृत्ति

कवि, कथाकार, निबन्धकार, उपन्यासकार, नाटककार, स्तम्भकार तथा सम्पादक भ्रमरक कृतिसभकेँ कोनो एक गोट प्रवृत्ति संग तुलना नहि कयल जा सकैछ। हुनक रचनासभ मध्य कोनोमे मार्क्सवादी द्वन्दात्मक भौतिकवादक स्वाद अबैत अछि तँ कोनोमे सामाजिक अन्तरद्वन्दक। कोनोमे रजनी-सजनीक सुकोमल भाव उत्पन्न होइत अछि तँ कोनोमे राज्य आ सत्ता प्रति आक्रोश। ओ एक गोट कथाकार आ उपन्यासकार सेहो छथि। रचनागत प्रवृत्तिक बात करी तँ हुनक किछु कथा, कवितामे मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व सेहो देखल जा सकैछ। हुनक सुखान्तक उपन्यास **घरमुँहा**मे ओ एक गोट समाजिक अभियन्ताक रूपमे प्रकट होइत छथि जे खस राज्य सत्तासँ मधेसी अधिकारक मांग करैत शुरू भेल आन्दोलन प्रति ऐक्यबद्धता जनबैत अछि आ आन्दोलनक क्रममे देखार भेल सामाजमे उत्पन्न भेल साम्प्रदायिक क्रियाकलापक विरोध सेहो करैत अछि।

उपन्यासमे उठाओल गेल मधेसक स्वर

उपन्यासक शाब्दिक अर्थ होइछ —उपस्थापन करब। अर्थात् कथावस्तुकेँ सिलसिलेवार रूपमे पाठक समक्ष उपस्थापन करब। नाट्य शास्त्रमे वर्णित प्रतिमुख संधिक एक गोट उपभेद अछि—उपन्यास। उपपत्तिकृतो ह्यथ : उपन्यास : प्रकीर्तित [1] अर्थात् कोनो अर्थके ओकर युक्तियुक्त अर्थभेद प्रस्तुत करब उपन्यास अछि। हिन्दी भाषाक प्रसिद्ध समीक्षक डा.श्यामसुन्दर दास उपन्यासकेँ परिभाषित एहि प्रकारें कयने छथि, ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।'[2]

समग्रमे कही तँ जे कोनो भाषामे काव्यक रचना कोनो ने कोनो कारण सँ होइत अछि। सर्जक लोकनि अपन पूर्व नियोजित वा कही त' पूर्व निर्दिष्ट उद्येश्य परिपूर्ति करबा लेल काव्यक सृजना करैत छथि। मैथिली साहित्य एहिसँ विलग भइए ने सकैछ।

1-2. साहित्य विवेचन, नन्ददुलारे पाजपेयी, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली 13 जुलाई 1952

समग्र मैथिली साहित्यमे उपन्यासक रचना अतिअल्प भेल अछि। नेपालीय मैथिली साहित्यमे त' अतिन्यून। मैथिलीमे रचित उपन्याससभ मध्य सेहो अधिकांश प्रेम आ विरहक कथा कहैत अछि तँ किछु बाल विवाह, अनमेल विवाह किंवा सामाजिक विभेदक। राजनीतिक अधिकारक विषय लगभग शून्य छल, मुदा 2063क मधेस आन्दोलन नेपालीय साहित्यकारसभकेँ अधिक प्रभावित कयने छल। मधेस विद्रोह मैथिलीक साहित्यकारसभकेँ सेहो बेस प्रभावित कयलक। नेपाली भाषाक साहित्यकारसभ सेहो मधेस आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे अनेक गद्य आ पद्य रचना कयलनि, जाहिमे मधेस आन्दोलनक समयमे अपन पुस्तैनी घर राजविराजमे रहि रिपोर्ताज शैलीमे लिखल नेपाली भाषाक पहिल उपन्यास अछि, '**घूर**'। सप्तरीक धीरज कुमार श्रेष्ठद्वारा लिखित एवं ऐरावत प्रकाशन बागबजार, काठमाण्डौद्वारा प्रकाशित **घूर** 2064 सालमे प्रकाशित भेल छल। **घूर**मे मधेस विद्रोहक अधिकार आन्दोलनक रूपमे व्याख्या कयल गेल अछि।

'यस देशको परिचय परिवर्तन गर्ने बेला भएन र ? अब पनि मन्दिरै मन्दिरको देश भनि रहदा न्याय हुन्छ र ? बन्दै बन्दको देश भन्दा फरक पर्छ र ? बन्द आन्दोलन नगरी सुन्नुपर्नेले न सुने पछि। सुनाउनु पर्ने ले बन्द र आन्दोलन नगरी न हुने भए पछि यस देशको परिचय नया' बने न र ?'[1]

मधेस विद्रोहके केन्द्रमे राखि नेपालीभाषामे लिखल गेल दोसर उपन्यास अछि, ''**लू**'[2] जे 2068 साल चैतमे प्रकाशित भेल छल। जकर लेखक छथि नेपालगंजमे जन्मल, बढ़ल नयनराज पाण्डे आ प्रकाशक अछि साग्रीला बुक्स बागबजार काठमाण्डौ। ई उपन्यास मधेसी जनताक स्वरसंग स्वर मिलबैत अछि। मधेसके सामाजिक वातावरण, हिन्दु-मुस्लिम बीचक धार्मिक घुलन, पहाड़ी मधेसी बीचक साम्प्रदायिक मिलन एहि उपन्यासक विलक्षण पक्ष अछि, मुदा उपन्यासक अन्तमे पाण्डेजी सेहो अपन पहाड़ी मानसिकतासँ उपर नहि उठि सकलाह।

तेसर नेपाली उपन्यास अछि - नेपालीक चर्चित साहित्यकार स्वर्गीय जगदीश घिमिरेद्वारा लिखित, ''सकस'[3] जे 2069 सालमे प्रकाशित भेल छल। जगदीश घिमिरे प्रतिष्ठान रामेछाप मन्थलीद्वारा प्रकाशित एहि उपन्यासमे यद्यपि नेपालक भूगोल,

1. घूर : नेपाली उपन्यास : धीरजकुमार श्रेष्ठ। ऐरावत प्रकाशन बागवजार,काठमाण्डौ,प्रथम संस्करण 2064

19. लू : नेपाली उपन्यास, लेखक : नयनराज पाण्डे। प्रकाशक : सांग्रीला बुक्स बागवाजार काठमाडौ। प्रकाशन साल 2068

20 सकस : नेपाली उपन्यास, लेखक जगदीश घिमिरे, प्रकाशक : रामेछाप प्रतिष्ठान, रामेछाप मन्थली। प्रकाशन सा 2069 साल

इतिहास, धर्म, कर्म सहित मनुक्खक सम्पूर्ण पक्षक उपस्थापन कयल गेल अछि। वर्षो जनकपुरमे रहि अध्ययन, अनुसंधान तथा अनुगमन कयनिहार घिमिरे मधेसक माटि-पानिसँ पूर्णत: परिचित छलाह, मुदा ओ अपन उपन्यासमे मधेस आन्दोलनक खराब पक्ष मात्र देखेलनि। मधेसी जनताक अधिकारक स्वर नहि पढ़ि सकलाह।

नेपालीय मैथिली साहित्यमे उपन्यास

60क दशकमे डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पसमे मैथिली विषयक प्राध्यापकक रूपमे जनकपुर आयल छलाह। डा. धीरेन्द्रक जनकपुर आगमन संगहि औपचारिक रूपमे नेपाली मैथिली साहित्यक आधुनिक युगक शुभारम्भ भेल। यद्यपि डा. धीरेन्द्रक आगमनसँ पूर्व सेहो नेपाली भूमिमे मैथिली भाषामे कविता, गीत, मुक्तक, नाटक तथा थोड़-बहुत कथा, निबन्ध आदिक रचना भेल छल। डा. धीरेन्द्रक नेपाल आगमन पश्चात नव तथा पुरान सर्जक लोकनि नव जोशसँ भरि उठलाह। जकर कारण छलाह—डा. धीरेन्द्रक सहयोग आ सल्लाह। तकरा बाद साहित्यक प्राय: सम्पूर्ण विधामे धुरझार लिखल जाए लागल। धीरेन्द्रक चटिसारमे जुड़लाह—डा. राजेन्द्र प्रसाद विमल, डा. रेवती रमण लाल, रामभरोस कापड़ि, अयोध्यानाथ चौधरी, महेन्द्र मलंगिया, परमेश्वर कापड़ि, रुद्रनारायण झा मड़ई, डा. पशुपतिनाथ झा, ब्रजकिशोर ठाकुर सहित कतेको साहित्यकार लोकनि। 2046 सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्चात आधुनिक शिक्षा तथा चेतनायुक्त युवा साहित्यकारसभ यथा : श्यामसुन्दर शशि, धर्मेन्द्र झा, रमेश रंजन झा, विपिन कुमार साह, प्रेम विदेह ललन तथा धीरेन्द्र प्रेमर्षि सहितक युवासभ सेहो धीरेन्द्र चटिसारक चटिया बनलाह। साहित्यक विभिन्न विधामे लेखन शुरू भेलाक बावजूदो उपन्यास विधामे अति अल्प कलम चलल।

नेपाल भूमिपर पहिल उपन्यास सृजना करबाक सौभाग्य सेहो डा. धीरेन्द्रके छनि। डा.धीरेन्द्रक कालजयी रचना **भोरुकवा** 1965 मे प्रकाशित भेल। एहि आञ्चलिक उपन्यासक कथावस्तु यद्यपि मधुबनीक सरिसबपाही क्षेत्रक अछि। मुदा, ई आख्यान समग्र मिथिलांचलक कथा-व्यथाक चित्रण करैत अछि। यद्यपि उपन्यासमे वर्गीय अधिकारक विषय आयल अछि मुदा, सामाजिक रूपमे। जाहिसँ राजनीतिक अधिकारक विषय गौण भ' जाइछ। हुनक दोसर उपन्यास अछि **कादो आ कोइला** तेसर उपन्यास अछि, **ठुमुकी बहु कमला** जे 1982 मे प्रकाशित भेल छल। नेपाल आ भारतक शस्य श्यामल धरतीपर पसरल कमला नदीक किनारमे बसल दुनू देशक समाजक सजीव चित्र अछि, एहि उपन्यासमे।

एहि बीच श्रीमती श्यामा झाक **बिनु माइक बेटी** उपन्यास सन् 1967मे पकाशित भेल तँ कुँवरकान्तके **सेहन्ता** उपन्यास 1968 मे आ औद्योगिक मजदूरसभक कथा-व्यथा तथा प्रेम विरहक कथाक रूपमे प्रदीप बिहारीक **विसूवियस** उपन्यास 1986 मे झापा भद्रपुरसँ प्रकाशित भेल। सन् 1993 मे डा. अरुण कुमार झाक **मर्सिनी**, 2006 मे **सूर्यास्त**, 2009 मे राजाराम सिंह राठौरक **गामक भला आदमी आ भरुवा**, 2009 मे डिजे मैथिलके **मधु** एवं विसं 2074 सालमे राजाराम सिंह राठौरक **झारखण्डी दास** उपन्यास नेपालक धरतीपर लिखल गेल। एहि मध्य अधिकांश उपन्यास सामाजिक कथा-व्यथा ऊपर आधारित छल। समाजमे व्याप्त महिला हिंसा, दहेज, बाल विवाह सहितक पारम्परिक कथा आ शैलीमे लिखल गेल औसत दर्जाक उपन्यास भेलाक बावजूद ई सर्जनासभ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करबामे अहम योगदान देलक।

भ्रमरक 'घरमुँहा' : समयक दस्तावेज

साहित्यकेँ समाजक अयना कहल जाइछ। भलेहि उल्टे किए ने हो, मुदा अयनामे हमरालोकनि वएह देखैत छी जे वास्तविक रहैत छैक। जे सत्य रहैत छैक। सत्तरिक दशक धरि समाजमे बाल विवाह, अनमेल विवाह आ बहुविवाहक प्रचलन छल। तत्कालीन साहित्यकारलोकनि सएह देखलनि आ इएह विषयवस्तुके साहित्यक कथावस्तु बनौलनि। सत्तरिक दशकक बाद आधुनिक शिक्षाक विकास भेल। समाज अग्रगामी दिशा दिस अग्रसर भेल। समाजपर वैश्विक प्रभाव पड़ल। वर्गीय विभेदक विरुद्ध पैघ-पैघ आन्दोलन भेल। फलत: इएह विषयवस्तु उपन्यासक कथावस्तु बनल। यद्यपि समाजिक विभेद एखनहुँ पूर्णत: अंत्य नहि भेल अछि, मुदा कम धरि जरुर भेल अछि। एकरा अतिरिक्त अनेकानेक अवसर आ चुनौतीसभ सेहो ठाढ़ भेल अछि। नेपालमे वैदेशिक रोजगारीमे जायबलाक संख्या निरन्तर बढ़ि रहल अछि। राष्ट्रीय अर्थतन्त्रपर एकर सकारात्मक प्रभाव पड़ल छैक। शिक्षा, दीक्षा, जीवन स्तरमे सुधार भेलैए, मुदा सामाजिक आ पारिवारिक सम्बन्ध तार-तार भ' रहल छैक। सामाजिक संजाल सभक व्यापक उपयोग आ दुरुपयोग भ' रहल छैक। सामाजिक संजालक बढ़ैत प्रयोग, संचारक विभिन्न माध्यम सभधरि सहज पहुँच आम नागरिककेँ राजनीतिक, भाषिक तथा पहिचानक अधिकार प्रति साकांक्ष बनौलक अछि। नेपालमे पहिचान, समानता तथा अधिकार प्राप्तिक लेल 2063 सालमे भयंकर आन्दोलन भेल जकरा मधेस विद्रोह कहल गेल। एखनहुँ मधेस समानताक अधिकार प्राप्त नहि क'

पाओल अछि। मधेसी जनता एखनहुँ संवैधानिक रूपसँ अपनाकेँ ठकायल सन महसूस क' रहल अछि। अत: विभिन्न रूप आ रंगमे एखनो राजनीतिक अधिकार प्राप्तिक आन्दोलन चलिए रहल अछि। 2063 सालक मधेस विद्रोह तथा तत्पश्चात मिथिला मधेसमे शुरू भेल राजनीतिक संक्रमणकालीन अवस्था साहित्यकारसभकेँ सेहो प्रभावित कयलक वा कयने अछि। मधेस विद्रोहके मूलकथा बना अनेको कविता, कथा, नाटक आ उपन्यास लिखल गेल। लिखल जाइयो रहल अछि। मधेस आन्दोलनकेँ प्रमुख कथ्य बनाक' रामभरोस कापड़ि भ्रमरद्वारा लिखित उपन्यास अछि, '**घरमुँहा**' तथा रमेश रंजनद्वारा लिखित **संगोर**। एतय भ्रमर लिखित **घरमुँहा**क विषयमे वर्णन करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

भ्रमर आन्दोलनके क्रममे क्षत-विक्षत बनल सामाजिक सद्भावक वास्तविक चित्र प्रस्तुत कयने छथि **घरमुँहा**मे। हुनक लेखनपर पत्रकारिताक प्रभाव स्पष्ट देखल जा सकैछ। कारण उपन्यासक पात्रसभ काल्पनिक भेलाक बादो वर्णित अधिकांश घटना वास्तविकताक नजदीक अछि। उपन्यासक वास्तविक घटनासभक काल्पनिक फोटो सेहो कहल जाइछ। जे भ्रमरक उपन्यासमे स्पष्ट देखल जाइछ। एहि उपन्यासकेँ मधेस आन्दोलनक स्थलगत भावुक रिपोर्ट कहलापर अत्युक्ति नहि होयबाक चाही। उपन्यासमे मधेस आन्दोलन मार्फत अभिव्यक्त आम मधेसीक स्वरकेँ मुखर कयल गेल अछि।

विसं. 2029 सालमे **बन्न कोठरी औनाइत धुआँ** कविता संग्रहक मार्फत मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयने रामभरोस कापड़ि' भ्रमर' नेपालीय मैथिली साहित्यमे सर्वाधिक सक्रिय साहित्यकारमध्यक एक छथि। **नहि आब नहि** (दीर्घ कविता संग्रह), **मोमक पघलैत अधर** (गीत गजल संग्रह), **अपन अनचिन्हार** (कविता संग्रह), **तोरा संगे जएबौ रे कुजवा** आ **हुगली उपर बहैत गंगा** (कथा-संग्रह) संगहि **रानी चन्द्रावती, एकटा आओर वसन्त, महिषासुर मुर्दाबाद** नाटक सहित साहित्यक प्राय: सम्पूर्ण विधामे निरन्तर रचनारत तथा प्रकाशित करैत आयल भ्रमर एकटा सिद्धस्थ पत्रकार सेहो छथि। जकर विस्तृत चर्चा आगाँ कयल जा चुकल अछि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञपरिषद् सदस्यक रूपमे ओ मैथिली आ नेपाली साहित्यक श्रीवृद्धिमे अमूल्य योगदान देलनि। 2068 सालमे हुनक पहिल उपन्यास प्रकाशन भेल—**घरमुँहा**। एक सक्रिय पत्रकारक रूपमे समाचार, विचार, तस्वीर संकलन करबाक क्रममे ओ जे देखलनि, जे भोगलनि वएह कथा-व्यथा अछि **घरमुँहा**। वास्तविकताक धरातलपर लिखल गेल एहि उपन्यासकेँ साहित्यकार तथा समीक्षक डा. राजेन्द्रप्रसाद विमल 'ऐतिहासिक दस्तावेज' नाम दैत छथि। डा. विमलक शब्दमे **घरमुँहा** स्थलगत यथार्थकेँ तिथि-मितिसंग मिलान

क' लिखल गेल काल्पनिक कथा अछि।[1]

मधेस आन्दोलन उत्कर्ष पर छल। केन्द्र सरकार दबावमे आबि रहल छल। आन्दोलनकारीक मांग संबोधन करबाक बाध्यता सर्जना भ' रहल छलै। एम्हर आन्दोलनमे मधेसी जनताक सहभागिता निरन्तर बढ़ि रहल छल। सरकारी दमन सेहो उत्कर्षपर छल। आन्दोलनकारी सभक नित्य शहादत भ' रहल छलै। एहि संक्रमणकालीन अवस्थाक फायदा उठबैत किछु अपराधी प्रवृत्तिक लोक साम्प्रदायिक सद्भाव बिगाड़बाक खेलमे लागल छल। मधेसक अधिकारक अढ़मे ओ सभ हत्या, हिंसा संगहि चन्दा असूली, अपहरण तथा लूटपाट सदृश्यक घटना घटाबय लागल छल। मधेस आन्दोलनकेँ बदनाम करेबाक उद्येश्यसँ सरकारी तन्त्रसभ सेहो परोक्ष रूपसँ साम्प्रदायिक आगिकेँ भड़कयबा लेल हवा द' रहल छल। भू माफिया सभ नेपालीभाषीसभक जग्गा, जमीन आ घर कब्जा करबा लेल धाक-धमकीक वातावरण सृजना क' देने छल। उपन्यासकार भ्रमर अपन उपन्यास मार्फत संक्रमणकालीन समाजक एहि द्वन्दकेँ साकार कयने छथि। मधेसमे रहि एहिठामक वेष-भूषा, संस्कार संगहि सामाजिकतामे रमल मास्टर रमेश उपाध्यायकेँ आत्ममन्थन अछि ई उपन्यास। रमेश मास्टर साहेबकेँ मधेस भूमि प्रतिक ममता, मैथिली भाषा प्रतिक प्रेम, मिथिला संस्कृति प्रतिक स्नेह तथा मधेसी आन्दोलनकारीक हुनका प्रतिक अमानवीय व्यवहार बीचक द्वन्द एहि उपन्यासकेँ मनोवैज्ञानिक उपन्यासक श्रेणीमे लाबि खड़ा करैत अछि। जखन प्रदर्शनकारीसभ मास्टर रमेश उपाध्यायक घरपर ईंटा-पाथर फेकि रहल छथि तँ हुनकर श्रीमती डेरा जाइ छथिन। ताहिपर मास्टरसाहेबक कहब छनि— 'अहाँ व्यर्थे चिन्तित होइ छी। हमरा केओ किछु ने कहत। भरल शहरमे तँ हमरे विद्यार्थी अछि। ककरो हम बिगाड़ने नै छिऐ तँ के की करत।'[2]

मुदा, वास्तविकता एहि सँ त' फरक रहैत अछि। आन्दोलनकारीमध्य हुनके दूगोट शिष्य राजीव आ विनोद मास्टरसाहेबक घर उपर ईंटा-पाथर बरसबैत अछि। आ एकर कारण रहैत छैक जे - मास्टरसाहेब अर्थात् रमेश उपाध्याय एहि दुनू विद्यार्थीकेँ अपन नेपाली विषयमे फेल क' देने रहैत छथिन। फेल कोनो दुश्मनी साधबालेल नहि, दुनू विद्यार्थी पढ़यमे कमजोर रहैत अछि ताहि लेल।

आन्दोलनक स्थलगत रिपोर्टिंग करैबला अधिकांश पत्रकारकेँ अनुभव कमोबेश एहने अछि। आन्दोलनक क्रममे किछु कुतत्वसभ अपन निजी दुश्मनी साधबा लेल

1. 'घरमुँहा' उपन्यास : लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' भूमिका : डा. राजेन्द्र प्रसाद विमल
2. घरमुँहा, उपन्यास : पृष्ठ : 5

वा अपन जाति आ वर्गक व्यक्तिसभकेँ लाभ पहुँचाबए लेल तथा अन्य जाति वा वर्गक व्यक्तिकेँ दु:ख देबा लेल अनेको घटना घटेने छल।

आन्दोलनकारीद्वारा बेटी किरणकेँ अपहरण आ बेर-बेर निशाना बनेलाक कारणे मास्टरसाहेब जनकपुरक ओकील महल्लामे रहल अपन घर बेचि विस्थापित होयबाक निर्णय करैत अछि। घर-द्वार छोड़िक' काठमाण्डू विदा सेहो भ' गेल रहैत अछि। तखने हुनक पुरान मित्र एवं आन्दोलनक अगुआ जगमोहन सहयोगमे आगाँ अबैत अछि आ मास्टर साहेब आ हुनक परिवारकेँ बससँ उतारिक' वापस आनैत अछि। किरणकेँ अपहरण कराबैवला कामेश्वर आ ओकर बेटा राकेश सेहो सही बाटपर अबैत अछि। दोसर शब्दमे कही तँ **घरमुँहा** पारम्परिक शैलीमे लिखल एकगोट सुखान्तक उपन्यास अछि।

घरमुँहा उपन्यासक प्रसंगमे चन्द्रेश लिखैत छथि, ''एहिमे अपनाकेँ चिन्हबाक आ मानव जीवनक अन्तर्संबंधकेँ दर्शयबाक प्रयास भेल अछि। वैषम्यताक विरोधस्वरूप संघर्षक स्वरमे नवताक उम्मीदक फूल फुलयबाक आ मानवीयताकेँ जोगाक' रखबाक जे स्वर उभरल अछि से अबस्से हिनक रचनात्मक ताकति थिक।''[1]

निष्कर्ष :

भ्रमरक साहित्यिक प्रवृत्तिकेँ कोनो एक वाद वा शैली अन्तर्गत विश्लेषण कयलापर हुनक साहित्यप्रति न्याय नहि भ' सकैछ। कारण हुनक रचनासभमे साहित्य शास्त्रक लगभग सम्पूर्ण वाद आ प्रवृत्तिक प्रयोग भेल अछि। भ्रमर लिखित एकमात्र उपन्यास **घरमुँहा**के एकगोट सामाजिक उपन्यासक संज्ञा देल जा सकैछ त' हुनकाद्वारा लिखित पहिल कथा संग्रह **तोरासंग जएबौ रे कुजवा**के सामाजमे व्याप्त यौनकुण्ठा आ सामाजिक विभेदक कथासभक संकलन कहल जा सकैछ। **हुगली उपर बहैत गंगा** कथासंग्रहके फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिक कथासभक समायोजन कहल जा सकैछ। एहि तरहेँ हुनक अधिकांश गीत, गजल आ कवितासभमे स्वच्छन्दतावादी भाव दृष्टिगोचर होइत अछि त' नाटकसभमे सामाजिक पिठारमे घोरल ऐतिहासिक नायकसभक वित्तचित्र कहल जा सकैछ। समग्रमे कही त' भ्रमर एकगोट साकांक्ष साहित्यकार छथि जे समाजमे जे देखलनि सएह लिखलनि अछि। भाव-सम्प्रेषणक क्रममे ओ अपन सुविधा अनुसार साहित्यिक विभिन्न वाद आ शैलीक प्रयोग कयने छथि।

---

1. अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य) पृष्ठ 374-378। लेखक : चन्द्रेश। प्रकाशक : तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, दरभंगा

साहित्य समीक्षकक नजरिमे भ्रमरक कृति लोकजीवनपर समेकित आलोक

डा. भीमनाथ झा

श्री भ्रमरजीक साहित्य-चास बहुफसिला छनि। कोनो खेत एकफसिला होइ छै, कोनो दुफसिला छै जे बड़ उपजाउ ताहिमे तेसरो फसिल सुतरिए जाइ छै। ओहन खेत 'सोनाक टुकड़ी' कहबै छै। मुदा, हिनक खेतमे कोनो एहन फसिल छैके नै भरिसक जे उपजल नहि होइन, उपजैत नहि होइनि। इहो सुनने छिऐ जे केहनो उर्वर भूमि एक-ने-एक दिन उस्सर भ' जाइ छै, जखन ओकर नमी सुखा जाइछै। मुदा, हिनक खेतक नमी तँ दिनानुदिन हरिआएले जाइत देखै छियनि। एहन जमीनके की कहबै? हीराक टुकड़ी, पन्नाक टुकड़ी, मोतीक टुकड़ी—जे कहि लियौ, सभ छजतै। तेँ ने, बरु उनचासो बसात बहि जाओ, तैयो हिनक चासक पचासो गाछ सभ ऋतुमे लहलहाइते देखै छियनि।

कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज, शोध, समीक्षा, टिप्पणी, डाइरी आदि-आदि, जकर ओरसँ अनवरत चलि रहल छथि, तकर छोर एखन बहुत दूर छनि। बीचक जगहकेँ लगातार भरैत चलबाक छनि। से ई क' रहला अछि। हम एकरा मध्यान्तर सैह मानैत छियनि। अपने पूछब—कोना? हम कहब—तकर प्रमाण थिक ई पोथी—'**मिथिलाक लोकजीवन : लोकसन्दर्भ**'। एते दिन में जते ई पढ़लनि अछि, जते ई देखलनि अछि, जते ई सिखलनि अछि, जते ई लिखलनि अछि, तकर झलक तँ लगातार विभिन्न पोथी सभमे देखबैत आबिए रहल छथि। एहि कृतिमे सभटाक निचोड़ आनिक' राखि देलनि अछि। अर्थात एहि पोथीकेँ लेखकक एतबा दिनक कार्य-कौशलक 'रिपोर्ट' मानि सकै छी।

एहि पोथीक रचना सभक लेखन-चक्र चारि दशकसँ उपरेक होयबाक चाही। एतावता जाहि जाहि दिशामे जतेक दूर धरि हिनक बौद्धिक प्रवेश भ' सकलनि अछि, तकर ठोस साक्ष्य तँ अवश्य ई कृति प्रस्तुत करैत अछि।

एत' विवेच्य विषयक संकेत मात्र करबाक प्रयास कयल अछि—

विषय साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, शास्त्रीय एवं लोकपक्षीय अछि, जकर विचारक केन्द्रमे नेपाल-भारतस्थ समस्त मिथिला-क्षेत्रीय भूगोल आबि गेल अछि। लेखकक दृष्टिक व्यापकता तँ विषयक विविधता, निरीक्षणक सूक्ष्मता, सोचक स्पष्टता, अभिव्यक्तिक निर्भीकता एवं तर्कक अकाट्यता ताहीसँ प्रमाणित भ' जाइत अछि।

विद्वान लेखक मध्यकालीन गीतक उद्धारक चिन्ता व्यक्त करैत छथि तँ तिरहुतिया गीतक तालपर सेहो झुमैत छथि। एक दिस मिथिलामे पारम्परिक कीर्तन-परम्पराक खोज करैत छथि तँ दोसर दिस शिशुगीतक विभिन्न रूपक दर्शनो करबैत छथि। ऋतुगीतक परम्परामे पावस, होरी आ वसन्तक उल्लास बँटै छथि तँ गंगाक पावनताक रक्षा एवं कमला नदीक सांस्कृतिक महत्तासँ परिचयो करबैत छथि। अपन लोकसंस्कृतिक वैशिष्ट्य प्रकाशनक क्रममे लोकचित्रकला, लोकनृत्य, (मिथिला आ जट-जटिन) एवं लोकदेवता (सलहेस दीनाभद्री एवं राजा भरथरी) के चरित-चर्चा करैत हुनका लोकनिक महत्ता देखबैत छथि। तहिना, धनुषाक मकर, झूलन, जूड़शीतल, श्रीपंचमी, परिक्रमा, छठि तथा रामनवमी सन मिथिलाक विशिष्ट पाबनि-तिहारकेँ सामाजिक समरसताक प्रतीक मानैत छथि। धार्मिक स्थलमे जनकपुर, अहल्यास्थान एवं दुहबी गढ़ीक विशेष उल्लेख भेल अछि। जनकपुरक एक सुविख्यात जानकी मन्दिर (नौलक्खा)क निर्माण-सम्बन्धक निस्तुकी प्रमाणक अभाव मानैत ताहि दिस अनुसन्धानक हेतु विभिन्न सरकार आ जनताक ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ऐतिहासिक घटनाक क्रममे कनिष्क आ हर्षवर्धन केँ मिथिला आ नेपालसँ सम्बन्धकेँ सप्रमाण पुष्ट कयने छथि।

नेपालमे मोडल विद्यापति-पदावलीक प्रसंग उठाय ताहिपर पाँच गोट अनुसन्धानमूलक निबन्ध लिखने छथि, जाहिमे ओकर खोज एवं तकर व्यापक अध्ययनक आह्वान कयल गेल अछि। हुनक अतिरिक्त लोककवि घाघ, कवीश्वर चन्दा झा, कविचूड़ामणी मधुप, महाकवि यात्री एवं लोकगाथा उद्धारक काव्य विमर्श उपयोगी अछि। मैथिली कविता एवं पत्रकारिताक संगहि साहित्यमे नारी विमर्शपर फराकसँ विचार कयल गेल अछि। तहिना, एक निबन्धमे भानुभक्तक **रामायण** आ लालदासक **रमेश्वर चरित**क तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण अछि। एकर अतिरिक्त नेपालस्थ मैथिलीक सामाजिक, राजनीतिक, क्षेत्रीय भाषानीतिक संगहि शिक्षानीतिक समस्याकेँ प्रमुखताक संग उजागर कयल गेल अछि।

अन्तमें ईहो कहब जे संवेदनशील साहित्यकार द्वारा प्राकृतिक आपदा भूकम्प आ कोरोनाक त्रासदीकेँ साहित्यमे समेटबाक दायित्वकेँ कोना छोड़ल जा सकै छल, जाहिमे सम्पूर्ण मानवता तबाह भ' गेल!

एतावता विषयवस्तुक संकेतसँ स्पष्ट होइछ जे समीक्षित पोथी सभ वर्गक पाठकक अपेक्षा पूर्ण करबाक योग्यता रखैत अछि। सामान्य पाठककेँ एतबा जनतब प्राप्त करबा लेल सात घाटक पानि पीब' पड़ितनि। अनुसान्धेत्सु ओ ज्ञानपिपासु गंभीर अध्येतागणक चिन्तनक हेतु अनेक बिन्दु भेटतनि एवं हुनका लोकनिमे स्वरुचि विषयक आर बेसी जिज्ञासा जगौतनि।

सभसँ लाभान्वित तँ दुनू पारक 'भ्रमर' प्रेमी पाठक होयता जनिका अपन प्रिय साहित्यकारक अभिनव रूपक दर्शन होयतनि। अनेक देशमे बसल प्रवासी मैथिल समाजक ओ लोकनि, जे सभ अपने मिथिला-मैथिलीक गरिमामय अतीत एवं उज्ज्वल वर्तमानक गुणगान तँ सुनैत छथि, किन्तु अपन धरोहरकेँ जानि नहि सकल रहथि, तनिका सभक हेतु तँ ई पोथी मिथि मिथिला डाइरेक्टरी कहि सैह थिकनि। हर्ष अछि जे अमेरिकाक मिथिला सेंटर अपन प्रकाशनक श्रीगणेश सर्वथा उपयुक्त पोथीसँ कयलक अछि।

देहसँ धरती दिस

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क साहित्य-यात्रा **मिथिला मिहिर** (पटना)क स्थायी स्तम्भ 'नेना-भूटका' चौपाड़िमे प्रकाशित 'इमानदार बालक' (अप्रैल 26, 1964) सँ प्रारम्भ भेल अछि। भ्रमरक प्रथम कथा 'द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा' (**मिथिला दर्शन**, 1973) थिक। पहिल कविता संग्रह '**बन्न कोठरी औनाइत धुआँ**' 1973 ई. मे प्रकाशित भेल। एहि पोथीक भूमिकामे डा. धीरेन्द्र कापड़िक सर्जनात्मकताक प्रति आस्था व्यक्त करैत लिखल अछि, ''मैथिली कविताक नवीनतम आयामक संग तँ छथिहे, मुदा नव अन्वेषक सेहो होयताह। नेपालक धरतीपर रहनिहार मैथिलीक नव कविलोकनिमे दू गोट नामकेँ समस्त मैथिली संसार महत्त्वपूर्ण मानि रहल अछि— **पाथेय** (भुवनेश्वर पाथेय, 1945-1991 ई.) आ **भ्रमर**। एही अवधिमे भ्रमर '**अर्चना**' (1974 ई.) नामक पत्रिकाक सम्पादन आ प्रकाशन कयल। पुन: '**आंजुर**' एवं '**गाम-घर**'क सम्पादन-प्रकाशन कएल। भ्रमरक एहि सक्रियतासँ सम्पूर्ण मैथिली जगत लाभान्वित भेल। '**बन्न कोठरी औनाइत धुआँ**'क अतिरिक्त हिनक अन्य प्रकाशित महत्त्वपूर्ण कृति थिक '**नहि, आब नहि**' (दीर्घ कविता), '**अप्पन अनचिन्हार**' (कविता संग्रह), '**तोरा संगे जयबौ रे कुजबा**' (कथा संग्रह), '**नेपालक मैथिली पत्रकारिता**' (सम्पादन), '**रानी चन्द्रावती**' (सम्पादन) आदि। षष्टम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहक अवसरपर आयोजित (1991 ई., विराटनगर) नाट्य लेखन प्रतियोगितामे पुरस्कृत भ' भ्रमर एक नाटककारक रूपमे अपन परिचय बनाओल। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल कथा संग्रह '**तोरा संगे जयबौ रे कुजबा**' मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित अछि। शेष कथा असंग्रहित अछि। भ्रमरक अधिकांश कथा नारी-जीवनपर केन्द्रित अछि। ओ नारी कथा सभ देहक चारू कात चकभाउर दैत अछि। एहि चकभाउरमे नारीक शोषण, अशिक्षा, अत्याचार आ नारी समाजमे व्याप्त अन्धविश्वास, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवनमे ओछ होइत नारीक स्थान तथा

संघर्षशीलता कम अछि। बेसी अछि भौतिक सुख-सुविधाक प्रति नारीक आकर्षण एवं नारीक वंचकताक चित्रण।

भ्रमरक कथामे चित्रित नारीकेँ तीन कोटिमे राखि सकैत छी। पहिल कोटिक नारी सुख-सुविधा आ अपन त्वचा-संवेदनक लेल आरि-धूर, बान्ह-छेक नहि मानैत अछि। कोनो सीमा आ धरी-धोखा नहि छैक। एहि श्रेणीक नारी पात्रक उदाहरण थिक रेखा (अमरलती), रेखा (भगजोगनी), रेखा (पाँक), युवती (एकटा कारी साँझ), चलितराक पत्नी (तोरा संगे जयबौ रे कुजबा) आदि। रेखा (अमरलती) सदिखन प्रवाह चाहैत अछि, कौखन कछेर नहि। ओ कहैत अछि, ''हमरा पतिसँ कोनो प्रेम नहि अछि। हम तँ सामाजिक बन्धनक कारणेँ ई सम्बन्ध निबाहि रहल छी।'' अन्तत: सम्बन्ध टूटि जाइत छैक। ओ रमेशक संग विदा भ' जाइत अछि। रेखा (पाँक) पर काठमाण्डूसँ जनकपुर धरिक धनकुबेर लटुआयल अछि। अपना मित्रसँ ओ कहैत अछि, ''हे लीअ, इएह सनेस अछि, काठमाण्डूसँ खास कए अहीं लेल अनने छी। संगे पीयब, से विचारि।'' रेखा (भगजोगनी) काँचे उमेरसँ एसगरे काठमाण्डूमे रहैत देह धुना उपार्जन करैत अछि। भविष्यक कोनो कल्पना नहि छैक, सब किछु वर्तमान छैक। वर्तमानक उपभोग टामे विश्वास करैत अछि। जे नीक-नीकूत दैत छैक, जीहक पातरि चलितराक पत्नी ओकरे संग विदा भए जाइत अछि।

भ्रमर अपन साहित्यक प्रसंग लिखल अछि, ''मन:स्थितिक दंश' कथामे सिकरेट फैकटरीमे कमाइत एकटा सर्वहाराक परिवारक अस्त-व्यस्तताक चित्रण भेटैत अछि (नेपालक मैथिली कथामे माटि-पानिक गन्ध-वैदेही विशेषांक,1989)। परंच, हमरा जनैत एहि कथामे नियमित रूपेँ नाइट ड्यूटीमे काज करैत कृशकाय पतिक स्थानपर भरल-पुरल ससुर द्वारा नवकी बहुरियाक फटकी खोलि चलैत देह गाथा बेसी मुखर अछि। कृशकाय पतिक अपेक्षा हृष्ट-पुष्ट ससुरक सम्पर्क नबकी बहुरियाक सुखानुभूतिक आधार भए जाइत अछि। एहि सन्दर्भमे एक ग्रामीण महिला टिपैत छैक, ''युग उनटि गेल। बेटाकेँ कमाइत-कमाइत हड्डी खिआ गेल। ओकर बहु लए कए बाप मौज करैत छै।'' ई सर्वहारा परिवारक अस्त-व्यस्तता नहि, जैविक विवशताक समक्ष समस्त सामाजिक, पारिवारिक वा लौकिक सम्बन्धक छहोछित होयब थिक, आरि-धूर टूटब थिक। भ्रमरक ई कथा खूब चहटगर अछि। मुदा, एहन चहटगर कथा भूखल अभावग्रस्त जनसमुदायकेँ संघर्षशील होयबामे कौखन सहायक नहि होइत अछि। एहि कोटिक कथाक सामाजिक मूल्य ऋणात्मक अछि।

कथाक दोसर कोटिक नारी सुगिया (आब पेट जरूर भरतै), फुलिया (बिरड़ो)

आदि आर्थिक विपन्नतासँ देह-व्यापारक लेल विवश अछि। सुगियाकेँ अपन माय-बापक पता नहि छैक। एक भिखारि द्वारा स्टेशनपर पालल-पोसल जाइत अछि, ओ ओतहि समर्थ होइत अछि आ ओतहि एक दिन दगा जाइत अछि। इतिहास दोहराइत अछि। ओहिना सुगियाक बेटीकेँ अपन बापक पता नहि छैक। भरि राति सुगिया भूखे अहुँछिया कटैत अछि। भोरक' खराँतक खिचड़िक प्रत्याशामे निन्न नहि होइत छैक। खिचड़ि परसैत कालक सुगियाक मानसिक स्थितिक प्रसंग लेखकीय मन्तव्य द्रष्टव्य अछि, ''दालि-भातक सोन्हगर सुगन्धि, हंडीसँ बहराइत भापक संग सुगियाक पुरामे घुसिया रहल अछि। जँ-जँ गन्ध तेज होइ छै, सुगियाक बेचैनी बढ़ल जाइ छै, नजरि चारू भर नचैत रहै छै।'' भूखल आ अभावग्रस्त सुगियाक भरि पेट खयबाक आकांक्षा अनन्वित नहि अछि, मुदा ओकर आँखि ककरो ताकि रहल छैक। ओहि बारिककेँ जे खिच्चड़ि अहगर कए ओकरा परसैक। खराँतक ब्याजेँ पसरैत व्यभिचारक ई संकेत थिक। दया प्रदर्शित कए वा दान-पुण्यक अढ़मे धार्मिक आचरणक नामपर समाजमे पसरैत पापाचार एवं ओकर आश्रयदाता पर ई कथा प्रहार करैत अछि।

फुलिया (बिरड़ो)केँ अपन मेहनति पर भरोस छैक। समाजक लम्पट आ व्यभिचारी करीम दर्जी अपन सिआइक तरेँ फुलियाक देहक सान्निध्य पयबामे असफल अछि। फूसि-फटक गढ़ि फुलियाकेँ हाजतमे बन्द करेबामे सफल भए जाइत अछि। परिणाम होइछ, पत्नीक आचरणपर पतिक शंका। ई कथा सुनितहि परदेशसँ आयल पति चोट्टे घूमि जाइत अछि। एहि प्रकारेँ अपमानित, लांछित आ परित्यक्ता फुलियाक समक्ष देह धुनेबाक अतिरिक्त अन्य कोनहु विकल्प नहि बचैत छैक। यद्यपि, एहि दुनू कथामे नारीक विवशताक चित्रण अछि, किन्तु प्रशासनिक स्तरपर व्याप्त भ्रष्टाचार, लोकक धन-जनक सुरक्षाक लेल नियुक्त सुरक्षा प्रहरीक कामलिप्सा एवं व्यभिचारी मनोवृत्तिक प्रखरतासँ उद्घाटन भेल अछि। फुलियाक एहि कारुणिक स्थितिक मुख्य कारण थिक समाज आ विशेषत: प्रशासन। एहिसँ प्रशासनक विरुद्ध मानसिकताक निर्माण होइत अछि। प्रशासनपर घृणा होइत छैक। घृणासँ आक्रोश जन्म लैत अछि। आक्रोशक चिनगीसँ भ्रष्ट व्यवस्था सुड्डाह भए सकैत अछि।

भ्रमरक कथाक नारी पात्र शोषण आ अत्याचार सहैत अछि, उत्पीड़न आ अभावमे जीवन गुजर लेल विवश अछि, डेग-डेग पर अपमान आ लांछना सहैत अछि, परंच, अपन त्रासद वर्तमानसँ बाहर होयबाक चेष्टा नहि करैत अछि। सुगबुगाइत नहि अछि। कहि सकैत छी सभ केओ अपन देह नेरा देने अछि। रेखा (भगजोगनी) आ रेखा (पाँक) मे यद्यपि किछु चेष्टाक दर्शन होइछ। ओ अपन गहना-गुड़िया बेचि

ग्लैमरक जीवनकेँ त्यागि देबाक प्रयास करैत अछि, किन्तु साकार होयबासँ पहिने निष्क्रिय भए जाइत अछि। रेखाक मुक्तिक चिन्ता सामाजिक स्वरूप ग्रहण करबासँ पूर्वहि भहरि जाइत छैक। धूमकेतुक कथा 'कुलटा'क फुलिया बाबू-भैयासँ थानाक हाकिम धरिकेँ प्रसन्न करैत अछि। अपन देहे धुनाए दू पाइ कमाइत अछि, मुदा वचनक प्रतिकूल होइतहि ओ टामीकेँ तेना हबकैछ जे गोलीसँ छलनी भेलहि पर छुटैत छैक। एक शोषिताक अहंभाव आ आत्मसम्मान आहत भेला पर जे प्रतिक्रिया स्वाभाविक अछि, भ्रमरक कथामे नहि अछि।

भ्रमरक तेसर कोटिक कथानायिका क्षमतासम्पन्न आ आत्मसम्मानक बोधसँ युक्त अछि। गीता (टीस) नहि चाहैत अछि अपन जेठ बहिनिक बाटपर चलब। ओ अपन बाट स्वयं बनेबा लेल तत्पर अछि।

भ्रमरक किछु कथा वर्णित मूल-गोत्रक कथासँ भिन्न स्वादक अछि। सामाजिक जीवनमे व्याप्त भूख, अभाव, बेकारी तथा लोकक यंत्रणाकेँ व्यक्त करैत अछि। तथापि, नारी पात्रे जकाँ पुरुष पात्रहुमे प्रतिकूल परिस्थितिमे संघर्ष करबाक शक्तिक अभावक दर्शन होइत अछि। 'माटिक दरद' एवं 'इजोरिया रातुक सपना' एहि कोटिक कथा थिक। खट्टर मरड़ (माटिक दरद) केँ अपन परिश्रमपर भरोस छैक। ओकर आर्थिक स्थिति घोर अभावमय छैक। सामाजिक स्थिति उपेक्षामय छैक। एहन अभाव आ उपेक्षामय जीवनक स्थितिमे शोषण आ अत्याचारक विरोधमे लुत्ती उड़ि सकैत अछि। परंच, खट्टर मरड़ भयभीत अछि। आक्रान्त अछि। बड़बड़ाइत रहैत छैक, ''ओहीठाम, जीवछ कापड़िकेँ की हाल भेलैक, से गौंआ नहि देखलकैक। धनिकसँ अखरपना करैत घर-घराड़ी सभ बिला गेलैक, धनिककेँ की भेलैक? बिलटि गेलै बेचारे गरीब।'' ई असहायता एक व्यक्तिक नहि, एक वर्गक थिकैक, समस्त समाजक थिकैक। शासन-व्यवस्था रचनाकारकेँ प्रभावित करैत अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अपन देशमे कतेको प्रकारक शासन-व्यवस्थामे रचनात्मक रूपेँ सक्रिय रहलाह अछि। हिनक 'माटिक दरद' शीर्षक कथा पंचायती शासन-व्यवस्थामे लिखल गेल छल तथा 'कामरेड' बहुदलीय शासन-व्यवस्थामे लिखाएल अछि। 'माटिक दरद'मे खट्टर मरड़ आतंकित अछि, परंच 'कामरेड'मे अधवयसूक प्रतिक्रिया छैक, ''राणा कालमे जमीनदार सभ हुकुम चलबै, बेगारी खटबै। पंचायतमे गिरहत सभ मनमानी करै छल। बड़का धनिक सभकेँ राज चलैत छल। आब हमरा सभक युग अएलै हे। तब एना कए बिना देखले-सुनले पीट देनाइ बात नहि भेलै। कथाक पात्र सभ इहो चर्च करैत अछि, जे जमीन जोततै तकरे जमीन रहतै।'' शासन-व्यवस्थाक परिवर्तनक संग

मानसिकतामे भेल परिवर्तनक ई परिचायक थिक। एहि क्रममे 'बहुदल आयो रे' उल्लेखनीय अछि।

अनुत्पादक शिक्षा-प्रणाली, श्रमक प्रति उपेक्षा भाव एवं प्रभुत्त्व ओ सम्पत्ति किछु व्यक्तिक हाथमे समेटि आयब, सामान्य लोकक जीविकाक साधनकेँ घोंकचा देलक अछि। गार्जियनक समक्ष अपन राजा बेटाक शिक्षा-दीक्षाक खर्चक एक निश्चित लक्ष्य छलैक। ओ लक्ष्य क्रमश: धाराशायी भेल। बेरोजगारी बढ़ल। जे चतुर आ प्रपंची छल, खुशामद कलामे निपुण छल, घूस देबाक क्षमता छलैक—ओहदा आ पाइ दुनू पयबामे सफल होइत गेल। जे परिचयहीन एवं गतातविहीन छल, टौआइत रहल। क्षमता, प्रतिभा एवं योग्यताक अछैतो न्यून गुणक लोकक समक्ष पराजित होइत रहल। 'भोतिआएल बाटक बटोही' एवं 'नोरक बुन्न' एहि श्रेणीक कथा थिक। रबीन्द्र (नोरक बुन्न) अपन स्वरूप आ स्थितिकेँ ओहि बगरामे देखैत अछि जे अपनहि खोंतामे प्रवेशक प्रयास करैत काल सबल बगराक चोंचक आघातसँ खसि पड़ैत अछि। मुदा, रबीन्द्र स्वजातीय आघातसँ आहत बगराक स्थिति धरि पहुँचबासँ पहिने चेति जाइत अछि। अपन आत्मबलपर विश्वास कए, संघर्षक निर्णय लैत अछि। संघर्षक बाटपर बिदा भए जाइत अछि। इएह जीवन-बोध आ संघर्षशीलता आजुक संक्रमणशील आ वंचनापूर्ण परिवेशमे जीवाक निष्ठा दैत छैक। इएह जीवन-दृष्टि आजुक कथाकारककेँ अपन पूर्व पीढ़ीक कथाकारसँ फुटबैत अछि।

भ्रमर अपन कथाक सन्दर्भमे नेपालीपनाक चर्च करैत छथि, विशेषत: परिवेशक चित्राणमे। नेपालीपना बाह्य आवरण, यथा—स्थान, पात्र, आहार-व्यवहार, कथाक परिवेश प्रयुक्त शब्द आदि नेपाली टोपीए जकाँ जगजियार अछि। किन्तु बाह्य आवरणकेँ नेपालीपनाक सभ किछु मानि लेब हम उचित नहि मानैत छी। विशेषत: नारी पात्रक आधारपर। रेखा (भगजोगनी)क प्रसंग मन्तव्य अछि, ''काठमाण्डूक छौंड़ी सभक डिजाइन आ ओकर ऐयाशी देखि ओकर आमदनीक स्रोत पूछब अपराध मानल जाइत छैक।'' की ई नेपालीपना थिक ? खट्टर मड़र (माटिक दरद)क अकारण भय की नेपालीपना थिक ? आ कि बेटाक कमाइत-कमाइत हड्डी टूटब आ ससुर एवं पुतहुक देह-लीला चलैत रहब नेपालीपना थिक ? ई निश्चिते नेपालीपना नहि थिक। नेपालीपना लोकक आन्तरिक विशेषता थिकैक। हृदयक निश्छलता, कर्मठता, कर्त्तव्य निष्ठा, लक्ष्य-भेदनक लेल एकान्त साधना आदि गुणकेँ द्योतित करैत अछि। पर्वतीय प्रदेशक निवासीक जीवन-यापन समतल भूमिक निवासीक जकाँ सहज-सरल नहि होइत अछि। प्रतिकूल परिस्थितिमे जीवाक अभ्यास भए जाइत छैक। एहिसँ व्यक्तित्त्व

संघर्षशील होइत अछि। इएह जीवन आस्था आ संघर्षशीलता ओकर जीवनक यथार्थ थिकैक। ओ जिजीविषा वर्तमान अछि शरीरसँ नि:शक्त भेल बुढ़िया (असक्क)मे, पिताक आर्थिक स्थितिकेँ बुझैत आत्मविश्वाससँ परिपूर्ण गीता (टीस)मे तथा रबीन्द्र (नोरक बुन्न)मे। ई सब परिस्थितिक मारल रहितो बगरा जकाँ निष्प्राण नहि, संघर्षक हेतु ठाढ़ अछि।

रामभरोस कापड़ि' भ्रमर'क कथा यात्राक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे कथाकारक दृष्टिमे चहटगर कथाक स्थान पर समाजमे व्याप्त भूख, अशिक्षा, शोषण, व्यभिचार, प्रशासनिक भ्रष्टाचार एवं शोषित वर्गक प्रति सहानुभूतिक महत्त्व दिस प्रयाण भेल अछि। परदुखकातरता (तरबोरा) बढ़ल अछि। वैयक्तिक कुंठाक सीमाकेँ पार कए सामाजिक दृष्टि-सम्पन्नताक क्षेत्रमे प्रवेश कए गेल अछि। ई कथा सभ भ्रमरकेँ पूर्वक अपनहि कथासँ विलग करैत अछि। युग-युगसँ शोषित-प्रताड़ितक पक्षधरक फाँटमे ठाढ(कामरेड) सेहो देखैत अछि। कथाकारक दृष्टिक एहि दिशामे बढ़ब निश्चिते शुभ लक्षण थिक।

नेपालमे मैथिली कथाक विकासक दू टा स्कूल अछि जकरा पण्डित जीवनाथ झाक स्कूल आ डा. धीरेन्द्रक स्कूलक नामसँ जानल जाइछ। पण्डित जीवनाथ झाक स्कूलक पण्डित वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा'सँ मैथिली कथाक विकास नेपालमे भेल मानल जाइत अछि। ई स्कूल शास्त्रीय विशेष छल। प्रगतिशील कम, पछुआ गेल। डा. धीरेन्द्रक स्कूल ऊर्जा सम्पन्न छल, अपन वर्तमानक प्रति सतर्क छल, युग-जीवनक विकृतिकेँ भोगबा लेल अभिशप्त छल। परिणाम भेल नव-नव कथाकारक लेखनक क्षेत्रमे प्रवेश। कथा-क्षेत्रमे डा. धीरेन्द्रक प्रेरणाक प्रसंग रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' लिखल अछि, ''साठि इस्वीक बाद नेपालक मैथिली-साहित्यमे आयल जड़ता टूटल आ डा. धीरेन्द्र नव-नव रचनाकारक एकटा पैघ जमाति ठाढ़ कयलनि, प्रेरणा उद्बोधनक संग। अपन कथा द्वारा एकटा गाइड लाइन प्रस्तुत कयलनि (वैदेही विशेषांक,1989 ई.)। एहि जमातिक प्रमुख कथाकारमे राजेन्द्र किशोर, विजय, रामभद्र, रेवती रमण लाल, रामभरोस कापड़ि' भ्रमर', राजेन्द्र प्रसाद विमल, उपाध्याय भूषण, लोकेश्वर व्यथित, भुवनेश्वर पाथेय, महेन्द्र मलंगिया, अयोध्यानाथ चौधरी, रामनारायण सुधाकार, ब्रज किशोर ठाकुर, गंगा प्रसाद अकेला, डा. अरुण कुमार झा, जीतेन्द्र जीत, योगेन्द्र नेपाली, मीनाक्षी ठाकुर, कुवेर घीमरे, बदरीनारायण वर्मा, सुरेन्द्र लाभ, श्याम सुन्दर शशि आदि छथि। एहिमे सबसँ पहिने राम भरोस कापड़ि' भ्रमर'क कथा संग्रह 'तोरा संगे जयबो रे सुगबा' छपल, सेहो पड़ोसी देशक राजकीय संस्था

मैथिली अकादमी, पटना द्वारा। एहि जमातिक कतेको कथाकार वर्षक वर्ष लेखन-विरत वा मौन रहलाह अछि, भ्रमरक लेखनमे निरन्तरता अछि। एकटा तेसर बिन्दु जे भ्रमरक योगदानकेँ रेखांकित करैत अछि, से थिक पत्र-पत्रिकाक सम्पादन एवं प्रकाशन तथा ओकर माध्यमे मैथिलीक सभ तूरक रचनाकारकेँ सक्रिय बना केँ रखबाक साहसिक प्रयास।

स्रोत : भजारल, 2005

दिशा-बोध करबैत 'सीमाक आर-पार'

चन्द्रेश

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क यात्रा संस्मरण सीमा के आर-पार थिक। लिक्खाड़ भ्रमर विभिन्न विधामे अपन लेखनीकेँ सजौलनि। मातृभाषा मैथिलीक प्रति एकनिष्ठ प्रेम हिनका मैथिली साहित्यक विभिन्न भण्डारकेँ भरबाक हेतु बाध्य क' देलकनि। हिनक औनाइत मोनमे घुरियाइत प्रश्न से भाषा साहित्यक स्तरपर सदैव माथमे चनचनाइत की रहलनि जे प्राय: सभ विधामे लिखबाक बेगरता बुझयलनि आ लिखबो कयलनि। यात्रा-विधामे 'चीन जे हम देखल' (2014) प्रकाशित छनि। ई लेखकक दोसर यात्रा परक कृति थिक।

मैथिलीमे यात्राक परम्परा तीर्थयात्रा सँ रहल अछि। पहिने तँ यात्रासँ यात्री घुमि क' आबय तकर कोनो निश्चितता नहि छल। ओना आइयो कोनो निश्चितता नहि अछि। मुदा, पहिलुक समयक लोक यात्रा पर की निकलैत छल जे सर संबंधी, गौआँ-घरुआ, सर समाजादि बुझी तँ एक तरहें अन्तिम दर्शन बुझि विदा करैत छलाह आ दूर-दूर धरि अरियाइत दैत छल। आइ अन्तर्देशीय की जे देश-विदेशक कोन कथा लोक अन्तरिक्षक यात्रा धरि क' अबैत अछि। अन्तरिक्षक पहिल पर्यटक बनबाक सौभाग्य रुसक 'यूरी गागरीनक' क' नाम अछि जे 1961मे यात्रा क' आयल छथि।

ऐतरेय ब्राह्मणमे आयल अछि 'चरैवेती...चरैवेती। अर्थात चलैत रहू... चलैत रहू। जीवन चलबाक नाम थिक आ यात्रा यैह थिक। सुदूरक करी वा लगीचक। सुख होअय वा दु:ख। ई सत्य थिक जे घर छोड़ल पर दुखे दु:ख। मुदा, दु:खमे सेहो सुख सन्निहित अछि, तएँ दोसरक दु:खकेँ जँ अनुभव करी तँ निश्चिते अपन दु:ख बिला जायत वा शान्त भ' जाएत। यैह कारण थिक जे यात्राक कष्टसँ उबरबाक हेतु ज्ञानरुपी रसक पान करी।

यात्रा ओ थिक जे ज्ञान यात्राक क्रममे अनुभवक पेटारकेँ फोलैत अछि।

तीतमीठक अनुभवक पेटार जखन फूजैत अछि तँ किछु करबाक ऊहि जगैत अछि। यात्रा अबस्से चिन्तन मनन ओ संवादक माध्यम थिक जे विचारकेँ आत्मसात क' आत्मबोध जगबैत अछि। नव-नव अनुभूतिक स्वाद जगयबाक संगहि अदम्य लिलसा जगयबाक साक्षी बनबैत अछि। यात्रा ओ कड़ी थिक जे एक छोरकेँ दोसर छोरसँ जोड़ैत अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि। कही तँ संस्कृति आ भाषाकेँ जोड़बाक प्रबल माध्यम थिक यात्रा।

यात्रा दुनू कोटिक होइत अछि—1. जानि बुझि क' वा शुभ लग्न मुहुर्त देखि क' अथवा स्वेच्छानुकूल। मुदा, यात्रा कोनो होअय, अतिरेक सुखानुभूति करबैत अछि। जँ दु:खक भान करबैत अछि तैयो सुखानुभूति होयबे करत। यात्रा सँ जँ डरक अनुभूति होइत अछि तैयो हृदयकेँ आरो ठोस बनबय पड़ैत अछि। कारण, कष्ट सँ उबरबाक अछि वा कही तँ अन्हरियाकेँ चीरिक' बहरयबाक अछि।

विवेच्य पोथीमे लेखकक बारह गोट यात्रा अछि। एहि सँ पूर्व डा. रेवती रमण लालक 'हमर विदेश भ्रमण' आयल अछि। भ्रमरक **सीमाकेँ आर पार**मे एगारह गोट विदेशक आ एक गोट देशक अछि। विदेशमे दसटा भारतक अछि जे यात्रामे एक दोसर ठामक संस्कृतिकेँ जनबाक-बुझबाक अवगति होइत अछि तेँ लेखक स्वयं संस्कृतिकेँ चिन्हबाक हेतु सेहो यात्राकेँ औचित्य होइत अछि। लिखि क' स्पष्ट कयलनि अछि जे मनुक्खक जीवनमे प्रेम आ सौन्दर्यक आगमन, विसर्जन आ अभाव तीनू अवस्था अबैत अछि (63)। बस्तुत: हरिद्वार यात्राक क्रममे धार्मिक पक्षकेँ उठा क' संस्कृतिकेँ जगजियार कयल अछि। लेखक स्वयं साहित्यिक संगहि सांस्कृतिक यात्राक महत्वकेँ स्वीकारैत छथि। कारण, लेखकक शब्दें 'संस्कृति लोकभावना आ चरित्रक प्रदर्शन करैत अछि (62)। वास्तविकता अछि जे लोकक शोणितमे संस्कृति तेना क' सन्हिआयल अछि जे फुटका क' देखाइते नहि अछि। तेँ ई प्रदर्शन नहि जीवन दर्शन थिक किएक तँ मर्म अन्तस्थलमे सन्निहित अछि आ ओतहि छुबैत नहि जे सोझे मनुक्खक जिनगी अर्थ थिक। एहि बहन्ने ओ ऐतिहासिक महत्ताकेँ सेहो दर्शाओल अछि। स्थान विशेषक माटि-पानिक गंध सुवासित होइते अछि जे यात्राक विशेषता थिक। बनारसक नौता आ मेघक ताण्डव मे तँ स्वयं लेखक स्वानुभूतिक माध्यमे वर्षासँ उत्पन्न विकट स्थिति-परिस्थितिक वर्णन करैत असफल यात्राक कष्टदायी स्थितिक चित्रण कयल अछि। लेखक अपन जेठ बालकक सारक विवाहमे बनारस जायब, दु:स्थितिमे घात प्रतिघातकेँ सहैत गंगाघाट पर जायब आ सैर करब खासक' नौका विहार आ स्थिति-परिस्थितिक मारल मुँहचुरु होइतो जे लेखकक जीवटताक अनुभूति

अछि से अवस्से संघर्षरत होयबाक प्रमाण थिक। हिम्मति आ साहस कोनो कोनो यात्राकेँ सफल बनबैत अछि आ धैर्य ओ संयम संग पुरैत अछि तकर ई उदाहरण थिक।

हिनक एहि संग्रहक पहिल रचना थिक **धानक सीसपर समृद्धिक रुपान्तरण अछि, रायपुर** जे ओहिठामक मिथिला महोत्सवमे भाग लेबाक यात्रानुभूति थिक। एहि मे ओहि यात्रा क्रमक यातायातक कठिनाइ, ओहि कार्यक्रमक महत्ता, छत्तीसगढ़क विशेषता, राजिम कुम्भक चर्च, संस्कृतिपरक विशेषता आदिक उल्लेख अछि। संगहि कोलकत्ता, दिल्ली आदिपरक यात्रा क्रमके सेहो सन्निहित कयलनि अछि। एके ठाम बेसी जगहक झलकी आयल अछि जे ज्ञानक श्रीवृद्धि करैत अछि तँ मोनकेँ बोझिल सेहो बनबैत अछि। ओना ई तिथिपरक अछि तेँ खण्ड खण्डमे बँटल अछि तैयो एके शीर्षकक अन्तर घोंटि देब कही तँ संकटापन्न स्थिति उत्पन्न करब थिक।

भावनाक हिलोरमे **उधिआइत मधेपुरा**मे कार्यक्रमक संगहि सिंहेश्वरक दर्शन, डाइन कोशी जे तरुआरिक धारपर नचैत छलि तकर खतरा टलबाक बाद बैरेजपरक हल्लुक चित्रादिक वर्णन अछि। ई यात्रा संस्मरण गम्भीरतामे नहि आयल अछि।

चीन जे हम देखल पोथी आयल अछि आ ताहि यात्रा क्रमक ई अंश थिक। 'ग्रेटवाल, पेगोडा, ओलम्पिक कल्चर सेन्टर, हेनसांग प्रतिक सम्मान' आदिक माध्यमे हमरा संस्मरणमे चीन लिखि क' लेखकीय कौशल ओ अनुभूतिकेँ लेखक दर्शौने छथि। संगहि क्षेत्र विशेषक महत्ताकेँ जगजियार कयलनि अछि। एहि माध्यमे जे केओ चीन नहि गेल छथि तिनको चीनक अनुभूति करौलनि अछि।

पटना साहित्य उत्सवमे साहित्यिक सितारासभक जमघटमे साहित्य उत्सवक चर्च भेल अछि। अंग्रेजीक चर्चित लेखक विक्रम सेठ आ हिन्दीक सुप्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी, आलोक धन्वा, अरुण कमल आदिक संग गुलजार आदिक उपस्थितिबोध अबस्से समारोहक सफलता आ आकर्षणक संगहि उत्सुकता कोना ने जगाओत? कविता पत्रकारिता आदि पर विमर्शक संगहि क्षेत्रीय भाषामे भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका आ मगही पर खूब चर्च भेल तकर चर्च अछि। मुदा, मैथिली अपन चरित्र देखयबा सँ बाज नहि आयल ताहि कटु सत्यक झलकी सेहो देखाओल अछि।

एक दिन मगधक प्राचीन राजधानीमे राजगीरक आध्यात्मिक अवस्थाक संगहि बौद्ध दर्शन, नालन्दा, वृद्धकूट, बेणुवन, तपोधर्म, बिम्बसारक जेलक दु:स्थिति, जरासन्धक अखाढ़ा, जैन मन्दिर, सुवर्ण भण्डार आदिक चर्च अछि। लेखक ऐतिहासिक ओ पुरातात्विक चर्च करैत एहि ठामक पर्यटकीय स्थल ओ गुण-गौरवक विशेषतादिकेँ उभारलनि अछि।

तायमचा नाचक रमझम आ पोखराक साँझमे हिमालय शृंखलाकेँ नजदीक सँ देखबाक, बराही मन्दिर आ तायमचा नाच आदिक चर्च अछि। लेखक गाइयात्रामे निकालल जायबला नाच ओ पोखराक नाचमे अन्तर स्पष्ट कयलनि अछि। मुदा, ई दुनू नाच मृत्यु संस्कारक बाद शोक बोध करबैत अछि। काठमाण्डूमे गाइकेँ मुखड़ा बना नाचल जाइत अछि तँ तायमचा नाचमे परीक वेश-भूषामे। डा. बन्धुक शब्दे पोखराबासी पर्यटनमे खाइत अछि, पर्यटनमे रमैत अछि। जीवन चर्या पर्यटनमे समर्पण कयने अछि (80-81)। माछापुच्छेक दृश्यावलोकनक चर्च सेहो अछि। लेखक जाहि ढंगे बातकेँ उठौलनि अछि से तेना भ' क' संस्कृतिपरक बात उठबितो रमि नहि पओलनि अछि। बोधिवृक्षक चर्च अछि जतय गौतम बुद्धकेँ बोधत्व प्राप्त भेलनि आ अपन असली सन्देश बिलहलनि। एहि बोधिवृक्षक विशेषता आ खास क' बुधक चरित्र तेना भ'क' नहि खूजि पाओल अछि जे खुजबाक चाही।

भगवान वेंकटेश्वरक दिव्य दर्शन सुखक अलौकिक अनूभूति मे तिरुपतिक बालाजीक विशेष चर्च संगहि पद्मावती आ गोविन्दराज स्वामीक दर्शन आदिक चर्च अछि। छठम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन तिरुपतिमे भेल ताहिमे लेखकक सहभागिताक संगहि एहि ठामक तीर्थयात्रीक देव-देवी दर्शनक चर्च अछि।

सीताक नगरी सँ मायाक नगरी धरि मे जनकपुरसँ मुम्बई धरिक बाटक चर्च अछि जे कोना मुम्बई पहुँचलहुँ आ बाट बीच की सभ देखलहुँ। **खूजल प्रेम नगरी थिक मुम्बई**मे यात्रापरक चर्च करैत लेखक किछु स्थान विशेषक शनि आ साइबाबाक मन्दिर, सिद्धिविनायक, पम्पादेवी, संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान आदिकेँ मोन पाड़लनि अछि। खास क' एहि उद्यानमे पशुपक्षी तँ भेटब दुर्लभ रहए, मुदा युवा-युवतीक चुम्मा-चाटी, आलिंगन आ ... (102)' एहि संगहि संजय गांधी उद्यानक खुजल प्रेम प्रसंग आ एक जोड़ी ठोर सटयने आदिक चर्च अछि। रंग-रभसक चर्च तँ चहटकारक संग लेखक रस ल' एहि बातकेँ प्रमुखता देलनि अछि।

लेखक भ्रमर यात्री बनि यात्रा कयलनि आ एहि पोथीमे यात्राक क्रममे विकछयलनि अछि। ई सत्य थिक जे नेपालमे यात्रापरक पोथी आंगूरेपर गनल अछि से लेखक एहि पोथीक सर्जना क' अबस्से मैथिली जगतक रिक्त भण्डारकेँ भरलनि अछि। लेखक जे किछु देखलनि-भोगलनि अछि से एहि पोथीक कागतपर उतारलनि अछि। ओना एहि पोथीमे प्रकाशित आलेख सभ पूर्वहि पत्रिकाक पात पर आयल अछि। जें लेखक स्वयं यात्रापरक द्रष्टा-भोक्ता छथि तेँ एहि पोथीमे आयल बात विश्वसनीय थिक जकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। एहिमे किछु एहनो अनछुयल

स्थान विशेषक वर्णन अछि जे मैथिली जगतमे पूर्वमे नहि आयल अछि। ततबे नहि, यात्रा तँ बहुतो गोटे करैत छथि, मुदा कयक गोटे यात्रा-प्रसंगकेँ लिपिबद्ध करैत छथि? भ्रमरजी यात्रा कयलनि अछि तँ यात्रा क्रमकेँ लिपिवद्ध सेहो कयलनि अछि। ओ यात्रा क्रमादिमे वातावरण ओ परिवेशक बात कमो मात्रामे सही, उठौलनि अछि। यात्राक स्थिति-परिस्थिति ओ घटना विशेषक जानकारी सेहो देलनि अछि। स्थान विशेषक महत्ता आ ओहि ठामक संस्कृति विशेषक झलकी सेहो देलनि अछि।

ई सत्य थिक जे यात्रा कयला सँ यात्रीक व्यक्तित्व निखरैत अछि। कारण, सोच आ दृष्टिमे व्यापकता अबैत अछि। जखने एक स्थान सँ दोसर स्थानपर जायत तखने स्थान विशेषक सभ्यता-संस्कृति सँ परिचित होयत आ लोक लोकक मानसिकताकेँ बुझत-परेखत। संगहि एक ठामक संस्कृति सँ दोसर ठामक संस्कृति मिझरायत। सझिया संस्कृति भेला सँ आ एक दोसरक मनोभावकेँ बुझला-परेखला सँ आपसीक डोर मजगूत होयत आ एक सूत्रमे बन्हा क' विचार सम्पदाक धनिक होयत। जखन लोक एक-दोसरक जीवन दर्शनसँ प्रभावित होयत आ तदनुकुल आचरणकेँ व्यवहारमे उतारत तँ सात्विक प्रवृतिएँ एक दोसरक प्रति आस्थाभाव प्रगाढ होयत।

भ्रमरक **सीमाकेँ आरपार** (यात्रा संस्मरण) पोथीमे संकलित यात्रा प्रकरण कही तँ भविष्यक पाथेय थिक। कारण, एहिमे भूत वर्तमान आ भविष्यक आहटि अछि। कही तँ भविष्यक ई एकटा यात्रापरक कालखण्डकेँ लेखकीय अनुभूति थिक। एहिमे जे विचारधारा उभरिक' आयल अछि से संवेदनाक आगिमे तपिक' ठोस रूप ल' आयल अछि। जे ई बस्तु सत्य पर केन्द्रित अछि। आ मानवीय मूल्यकेँ प्रतिष्ठापित करैत अछि तेँ तथ्यपरक भ' आयल अछि। खासक' स्थान विशेषक समाज आ सामाजिकता सँ जुड़िक' आ एक दोसरक संस्कृतिकेँ मिझरयबाक प्रयासे अवस्से ई पोथी अपन सार्थक महत्ता प्रतिपादित करैत अछि। ताहिमे लोकक हृदयमे संवेदना जगाक' जे उत्सुकता बनबैत अछि से विशेष आह्लादकारी थिक। तखन तँ भ्रमरजी जाहि कोटिक साहित्यकार छथि, नेपालक मैथिली साहित्य कि भारतक मैथिली साहित्यहुमे वा कतहुक मैथिली जगतमे हिनक रचनाक समादृत होइत देखैत एतेक तँ कहल जायत जे हिनका सँ आरो ठोस, सुविचारित आ गम्भीर रचनाक अपेक्षा रहिते अछि जे नीक आर नीक आ बढ़ि चढ़ि क' युग सापेक्ष रचना होअय जे कालजयी बनय। ओ मैथिलीक प्राय: सभ विधामे धुरझाड़ लिखलनि अछि। ई पोथी **सीमा के आरपार** सेहो विविधताक एकटा कड़ी थिक। एकटा बात ईहो गछय पड़त जे ओ फोटो द' सेहो रचना-यात्राकेँ सबल आ सफल बनबैत छथि। हिनक पोथीक

प्रस्तुतिए बहुत किछु कलात्मकतामे बजैत अछि। पोथीक आवरण ओ छपाई-सफाइ नीक अछि। दाम जँ कनेक बेसियो अछि तँ आजुक महगीक युगमे आ मैथिली पोथी प्रकाशित कयनाइ घरक आटा गिल कयनाइ केँ देखैत एतेक तँ कहले जायत जे जखन मैथिलीक पोथी आ पत्र पत्रिकादिक कीननिहारे ने तखन मोलक महत्वे की? तैयो यात्रापरक ई पोथी उपलब्धि थिक से यात्रीक लेल सेहो आ पाठकक लेल सेहो। ई पोथी यात्राक प्रतिक ललक जगबैत अछि। लोकमे रुचि जगायब आ एकटा फूट आनन्द प्रदान करबाक फलस्वरूप एहि पोथीक सार्थकता अबस्से नव बाट पर चलबाक हेतु दिशाबोध करबैत अछि।

संवेनशील मोनकेँ छुबैत 'हुगली ऊपर बहैत गंगा'

चन्द्रेश

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क 32 गोट कथाक संग्रह थिक 'हुगली ऊपर बहैत गंगा'। एहि संग्रहक नामक अन्तिम कथा थिक। 'हीरा' आ 'सोना बाई'क माध्यमे कथाकार नारी मोनक संवेदनाकेँ उभारिक' भविष्यक सृजन दिस डेग उठाओल अछि। ई सत्य थिक जे नारीक देहक अवयवकेँ कामुक पुरुष अपन धन-सम्पत्ति बुझि ओएह व्यवहार करैत अछि जे नारीक मोनकेँ दु:ख ओ पीडामे भरिक' कुण्ठित करैत अछि। नारी मात्र देह नहि थिक। नारी आ पुरुषक साहचर्य अबस्से सृष्टिक निरन्तरता थिक। एकर अर्थ ई नहि जे नारीक देहकेँ खेलौना बूझिक' खेलायल जाय। ओकर अंग-प्रत्यंगकेँ तोड़ि-मरोड़ि अर्थात् अत्याचार क' प्रेम ओ विश्वासकेँ तोड़ल जाय। ई सत्य अछि जे आजुक भौतिकवादी युगमे धनक अतिशय लिप्सा अबस्से मानवीय मूल्यबोधकेँ गिड़ने जा रहल अछि। जेँ कि मानवीय चेतना आ मनुष्यता कुण्ठित क' देल गेल अछि तेँ अनैतिकताक अढ़मे छिड़हरा खेलाओल जाइत अछि। धन-मदक एंठी पर नग्न कामुकताक ताण्डव मचल अछि। दैहिक जरूरतिसँ बेसिए काम-क्रीड़ामे भोग आ लिप्सा नयन रंजन भ' गेल अछि। तेँ विभिन्न मुद्रा अख्तियार क' आवेग आ उच्छ्वासमे अमानवीयताक क्रूर आ पैशाचिक रूपक दिग्दर्शन होइत अछि। लाचार मे विचार कतय? फलत: वासनाक भ्रमजालमे ओझरा क' नैतिकता ओ मर्यादाकेँ अतिक्रमण क' कुत्सित मानसिकताक क्रूर रूप झलकि अबैत अछि।

एहि शीर्षक कथामे 'हीरा' असन्तोष आ खौंझीकेँ मेटयबाक लेल 'सोनाबाइ'क ओहिठाम अबैत अछि। ओकर एकमात्र उद्देश्य रहैत छैक जे मोनकेँ बहटारि लेब। 'सोनाबाइ' अपन पेशामे कतहु कोनो कोताही नै करैत अछि। ओ आवेशक स्नेहिल स्वरमे लगीच अयबाक आमंत्रण अपन परिधान खोलि क' दैत अछि। हीराकेँ ठकमुरगी लागि जाइत छैक। ओकर हृदयमे नारीक प्रति सम्मान-भाव जागि जाइत छैक। ओकर मनोभावमे स्त्री संवेदना अस्मिताक पर्याय बनि उभरि अबैत छैक। सोनाकेँ हड़बड़ी छैक जे एकटा ग्राहकसँ निपटत तँ दोसरक आश? ओ बजैत अछि जे 'आउ ने, आनो

ग्राहक खोज' पड़त ने (144)। हीरा हारल जुआड़ी सन मनोव्यथा की कहि दैत अछि जे सोनाक आँखि चमकि उठैत अछि। ओकर सबल मानवीय संवेदना उभरि अबैत छैक, 'हम आइ पहिल बेर कोनो सुच्चा मनुक्खक दर्शन कयलहुँ अछि (146)'। परिणतिमे दुनूक सुरक्षा भावमे अपनत्वबोध जागि जाइत छैक।

तात्पर्य जे दैहिक भोगसँ बेसी-मोनक राग जे हल्लुको आँच पर बरकैत रहैत छैक वा बेसिए आँच पर किएक ने, मुदा दुनू स्थितिमे अनुशासित रहैत छैक। यैह कारण थिक जे जीवनकेँ गति आ उष्मा देबामे स्त्री-पुरुषक साहचर्य दोसरक पूरक बनैत अछि। आजुक समाजमे अमानवीयताक यैह स्थिति अछि जे स्त्रीकेँ चीरीचोंत क' अपन पुरुषत्व देखयबाक दम्भ भरैत अछि ततय सोना आ हीराक बीचक घटित घटना कनेक अविश्वसनीयताकेँ पनुगबैत अछि। जतय सोनाक संग भेल अत्याचार स्वत: उघरैत व्यथा-कथा कहैत अछि।

ततय ई पंक्ति—'सोना आन बाइ जकाँ तोड़ल-मचोड़ल नहि गेलि रहय, बाँचल छलीह (144)' सेहो अविश्वसनीय बुझाइत अछि। शिल्पक दृष्टिएँ अवस्से ई कथा कनेक कमजोर अछि, मुदा कथ्यक दृष्टिएँ रक्त आ स्नेहसँ जे अपनत्व बोध जगाओल गेल अछि से अबस्से मनुष्यक मनुष्यताक स्वाद चीखबैत अछि।

आब ई प्रश्न उठब स्वाभाविके जे मनुष्यक मनुष्यताकेँ अमानवीय बनयबाक दोषी के? की जन समाज? समाज तँ लोकेक थिक। ई सत्य अछि जे आइयो हीरा सन गनल-गूँथल लोक अछि। तथापि कामोत्तेजक भाव-भंगिमा नेने दैहिक जरूरति बुझि वा फैशनपरस्त भ' कुटिल पुरुषक अहं अबस्से स्त्रीकेँ भोगक सामग्री बुझि पबैत अछि जे मोनक तुष्टि हेतु कुविचारें पाश्विक आचरण करैत अछि। जँ हीरा आ सोना बाइ सन एक दोसरक प्रति समर्पण आ निष्ठा-भावमे राग उभरय तँ निश्चिते अनैतिकताक अ'ढ़मे होइत विकृतिक विषाक्त चद्दरि फाटत आ असली छवि जगजियार होयत। एतेक तँ निश्चिते जे विश्वास आ हार्दिकतामे स्त्री-पुरुषक आकर्षण अबस्से जीवन-सत्यक अ'ढ़मे मानवीय आकांक्षाक पूर्तिमे सबल ओ सहायक सिद्ध होयत। हीरा आ सोनाक हृदयमे वास्तविक प्रेम-भाव की अंकुरित होइत अछि जे सहजता ओ सरलतामे आन्तरिक जटिलताकेँ आरो सघन बनबैत अछि। नारी पूरक बनैत अछि। जेंकि अभिजातीय संस्कृतिक विरोध स्वरूप सामाजिक अस्मिताक व्यापक बोध अर्थात् स्त्री पुरुषक सहज आकर्षणमे आत्मिक स्वर उभरिक' आत्मस्फुलिंग छिटकबैत अछि तेँ दुनूक संघर्षमे सामाजिक जीवनक यथार्थ झलकि उठैत अछि।

आधुनिक चकचोन्हीमे अन्हरायलि 'भगजोगनी' कथामे 'रेखा'क भोगवादी

लिप्सा ततेक आगाँ बढ़ि जाइत अछि जे अपन बसल-बसाओल घर उजाड़बासँ बाज नहि अबैत अछि। ओ बिसरि जाइत अछि जे अर्थलिप्सा सम्बन्धकेँ गीड़ि जाइत अछि। फल भेटैत छैक जे जखन जीवनक बोध होइत छैक तँ गत कर्मक तर्पण करैत अछि। ओ भ्रमजालमे जे अहुरिया कटैत छल से तोड़ि फेकैत अछि। यौन रूपमे उन्मत्त प्रेम आ घृणाक ढहैत देबालक बीच समाज आ सत्यसँ जे साक्षात् कराओल गेल अछि से अबस्से वैयक्तिक चेतनाकेँ धार दैत दाम्पत्य जीवनकेँ सफल बनबैत अछि। एहिमे प्रेम आ यौन सम्बन्धी गेंठकेँ फोलैत कथाकार उपसंस्कृति पर जमिक' प्रहार कयल अछि। ई सत्य थिक जे दैहिक भूख लोककेँ कामुकतामे जकड़ि अबस्से देह मैथुनकेँ प्रश्रय दैत अछि। एतेक दूर धरि जे आवेगमे मनोविकार अपन ठोस रूप तत्क्षण प्रभाव जनबैत अछि। मुदा, काम-भावक भूख सम्बन्धकेँ स्थायित्व नहि प्रदान करैत अछि तेँ असन्तोष पनुगैत अछि। सामाजिक दायित्व बोधक ई कथा थिक। 'अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही' गणेशक संस्मरण थिक। ई संस्मरणात्मक रिपोर्ताज थिक। कारण गणेशक संस्मरण उपस्थापितक' ओकरे गुण-गौरवकेँ परसल गेल अछि। तेँ कथा-सूत्रक निर्माण तेना भ'क' नहि भेल अछि जेना कि पात्रक परिप्रेक्ष्यमे घटना आ स्थितिक विवरणात्मक प्रस्तुति भेल अछि। साम्यवादी विचारधाराकेँ ल'क' 'कामरेड' कथाक सृष्टि भेल अछि—गरीब गरीब सभ एक हो। अर्थात् धनी-गरीबक बीच जे असमानताक खधिया अछि से आरो चकरगर भेल जाइत अछि तकरे भरबाक भरपूर प्रयासमे ई कथा सृजित भेल अछि। 'सुपत-कुपत आब हमहुँ सब कहबै' (37) आत्मचेतना जगयबाक उद्देश्यें ई कथा सृजित भेल अछि।

'पाइक आगाँ बेइज्जति आ गारि कथीक' एहि पृष्ठभूमि पर 'उड़ान'कथा सृजित भेल अछि। कतार दिस उड़ान भरबाक लोभें आ ढेर पाइ अर्जित करबाक सपना संजोगने रजिन्दर कापरकेँ पहिलुक एजेन्ट दस हजार टाका, दोसर अस्सी हजार आ तेसर खेप पन्चान्वे हजारक कर्जा पर लेल टाका बोहाइत छैक। ओ ठकाइत अछि तैयो ओकरा उड़ान भरबाक आशा छैक। ओ हृदयक कोनो कोनमे दमित इच्छाकेँ संयोगने रहैत अछि जे कोना उड़ान भरी। जहिना धन लेल जेबाक हाहुती तहिना एजेन्टकेँ चाही लाभ। माने ई उड़ान की, दस हजारसँ पच्चीस हजार धरिक चोखे नफा। तात्पर्य जे दुनू ग'र भिड़ौने। तेँ बेर-बेर ठकाइतो लोक पुनि ठकाइत अछि। एहिमे पाखण्डी चरित्रक पर्दाफाशक संग केवल जीवन जीनाइयेक मात्र लुतुक नहि होयबाक प्रत्युत जीवन मूल्यबोधक लेल जीवाक ओकालति संकेत मात्रमे कयल गेल अछि।

'जय मधेश'मे एक मधेश, एक प्रदेश ल'क' आन्दोलन अछि। मधेशी आ

पहाड़ीक बीचक खधिया समानतामे पटि जाय। 'अयोधी' मास्टरके जीवन कोहुनाक' मास्टरीमे खेपायल आ एकमात्र बेटा 'अशोक' केँ नोकरी नहि भेटब। तात्पर्य जे अपेक्षित योग्यता अछैतो व्यवस्थे तेहन बनल छैक जे मधेशकेँ के पूछओ? तेँ आन्दोलनी जुलूसमे ओकर बुढ़ायल देहक जोश की हिलोर मारय लगलैक जे ओहो कूदि पड़ल। ओकर अस्मिता की जागि उठलैक जे मधेशक लेल ओ किछुओ क' सकैत अछि। राष्ट्रीयताक परिप्रेक्ष्यमे अपन विचार, भावना आ समयक सत्य केँ उद्भासित कयल गेल अछि। जखन लोकक अस्मिता पर चोट लगैत छैक तेँ ओकर मोन कचोटय की लगैत छैक जे स्वतंत्रताक हनन मंजूर नहि होइत छैक। मधेशी होयबा पर जे गौरवबोध होइत छैक से जखन एके देशमे विषमताक बोध होइत छैक तेँ पीड़ाइत मोनमे आक्रोश पनुगैत छैक। एहिमे मानवीय जीवनक संवेदना झलकि उठैत अछि।

गहनतम प्रश्नानुकूलतामे 'भहरैत नेओक जोड़' कथाक सृष्टि भेल अछि। एहिमे निरसन बाबूक पुत्री 'सरोजा'क दु:स्थितिमे अन्त ओ 'रानी'क संग छलाइत जीवनके कथाकार ओकर मार्मिक पीड़ाकेँ उभारिक' सामाजिक परिवर्तन दिस ध्यान आकृष्ट कराओल अछि। एतेक दूर धरि जे एकर जिम्मेवार के? स्त्रीक त्रासक मार्मिक उद्घाटनक फलस्वरूप ई कथा फोकिला मानसिकताक दम्भकेँ आरो उघार करैत अछि। ओढ़ल अभिभावकत्वक नीतिकेँ सरेआम चौबटिया पर नग्न क' मानवीय जीवनक अनुभवसँ सम्पृक्त क' निजी संवेदनाकेँ सार्वभौमिक बना देल गेल अछि। एहि प्रकारेँ एक दिस हृदयहीनता आ मूल्यहीनताकेँ देखार कयल गेल अछि तेँ दोसर दिस परिवर्तनक सुगबुगीमे मानवीय सोच आ संवेदनाकेँ आजुक परिस्थितमे ठोस दृष्टि द' अमानवीयताक खोलकेँ चीरीचोंत करबाक सनेस बिलहल अछि।

अन्त मे किसुनमाक ऊहापोहक स्थितिमे जतय पत्नी उत्तीमपुरवालीक प्रति अनुराग-भाव अछि से पंजाबमे कमाइत मनसूबा पोसने घर अबैत अछि तेँ एकटा नेना? मासक फरक। आन बापक बच्चा अर्थात् अनकर जनमल बेटा। रहि रहिक' ओकर हृदयकेँ ई बात टीसैत की छैक जे सभटा मनोरथ भग्न भ' जाइत छैक आ अन्तिम परिणतिमे नेनाक मूड़ी छपाक् क' दैत अछि। निर्दोष आ अबोध बच्चाक हत्या।

ई सत्य थिक जे नृशंस हत्याक फलस्वरूप हृदय भावमे परिवर्तन आयब स्वाभाविक थिक। मुदा, अबोध बच्चाक हत्या? तकर परिणति? कथा जाहि बिन्दु पर आबिक' छोड़ि देल गेल अछि से आगाँक अपेक्षा रखैत अछि। तैयो, एकटा प्रश्न पनुगबैत सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि।

'अमरलत्ती' कथामे 'रेखा'क माध्यमे ओकर बहसलि उद्दाम छविक वीभत्स

रूप देखार कयल गेल अछि। ओ अमरलती बनि चतरैत की अछि जे सहारा बनैत आनक बसल-बसाओल घरकेँ उजारि-पुजारि दैत अछि। अपन बनल घर तेँ उपटाइये दैत अछि जे आनोक घरमे वास क' ओकर सोनहल दुनियामे आगि पजारि दैत अछि। एहिमे 'रमेश'क कामलोलुपताक रेखाक काम-भाव जाग्रत भ' मायाजाल की पसारैत अछि जे आरो अहिमे ओझराइत जाइत अछि। एहि प्रकारें वासनाकेँ उभारिक' पुरुष आ स्त्री वर्गक कुत्सित मानसिकताकेँ देखार कयल गेल अछि। सामाजिक कुव्यवस्था ओ एहिसँ उपजल मानवीय व्यथाकेँ अवस्से कथाकार उभारल अछि।

'सम्बन्धक पीड़ा'मे 'आशा'क हृदयमे बरकैत हृदयक उफान जे प्रेमक उपजामे मानसिक पीड़ा प्रतिफलित अछि तकर सशक्त चित्रण भेल अछि। प्रेम कहि-सुनिक' नहि होइत छैक आ ने कीनल बेसाहल जाइत छैक। जखन दूटा हृदय मिलैत छैक वा मोन मिलानी भ' जाइत छैक तेँ बाटमे केहनो रोड़ा अटकाओल किएक ने जाउक तैयो दुनू-प्रेमी-प्रेमिका हँसैत-कनैत, संघर्ष पथ पर टकराइतो, खसितो-उठितो पार-घाट उतरिए जाइत छैक। सैह स्थिति 'आशा' ओ संदीप'क मोन-मिलानीमे भेलैक। फल भेटलैक जे आशाक माय-बापक हृदयमे उठैत विरक्ति भाव सम्बन्ध-सूत्रकेँ खण्डित क' देलकैक। आ आशा प्रेमक परिणय सँ उपजल मानसिक पीड़ाकेँ सहबाक क्षमता अपनामे विकसित करबाक प्रयास क' रहलीह अछि (138)'। सामाजिक यथार्थक रूप झलकाक' कथाकार सामाजिक व्यवस्थाकेँ उघेसिक' आत्मीय ढंगसँ लोकजीवनक चित्र उभारबाक प्रयास कयल अछि।

बालमोनक सुलभ चंचलता ओ नेनपनक निश्चछलताकेँ स्मरण करैत नरेशक मोनमे स्मृतिक तरंग की प्रवाहित भ' अबैत छैक जे होइत छैक जे 'हमहीं किए ने अपनाकेँ नेना बना ली (142)'। 'फ्लैश बैक' कथाक माध्यमे कथाकार बालपनक अ'ढ़मे निडरता, निश्चछलता आ सौहार्द्र भावमे बचपनक प्रेमक अनुभूति जगाओल अछि तेँ उमेरक चारिम प्रहरक पनुगैत भय, सुरक्षा, षडयन्त्र, सामाजिक विद्रूपता आदिसँ अपनाकेँ बँचबा-बचयबाक प्रयासकेँ रेखांकित करबाक। ई सत्य थिक जे नेनपनक बिताओल क्षणक मधुर स्मृतिमे लोकजीवन चाहैये, मुदा संघर्षमे सेहो जीवनकेँ फूट आनन्द अबैत अछि। सामाजिक व्यक्तित्वक दोगला मुँह अर्थात् सभ्य समाजक अंग बनबाक लेल लोक जे छल-छद्मक खोल ओढ़ने रहैत अछि। से अवस्से मानसिक बुद्धिकेँ कुण्ठित करैत अछि, सामाजिक समरसताकेँ खण्डित करैत अछि।

नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे निस्सन्देह कथाकार भ्रमरक कथामे जीवनक राग अछि आ अछि नव युगक नारीक प्रति विशेष श्रद्धा-भाव। तेँ हिनक

बेसिए कथामे नारी जीवनक संघर्ष अछि। युग यथार्थक त्रासदी जे सामाजिक विडम्बनामे उपजैत अछि आ एकर कारक थिक सामाजिक व्यवस्था। तेँ कथाकारक छटपटाइत मोन मे अबला नारीक चीख अछि आ परिवेशक दंशमे पीड़ाइत मानसिक व्यथा-कथा। देह-भोगमे टीसैत दर्द उभरि की अबैत अछि जे सामाजिक सत्यकेँ देखार करैत यथातथ्य मोनक पीड़ाकेँ उगलि दैत अछि। टूटैत सम्बन्ध, छुटैत लोक, अर्थ लिप्साक मोह ओ दैहिक भोगमे पीड़ाइत कामुकता आ रोटीक समस्या नेने कथाकारक मोनमे कतेको प्रश्न छटपटी मचौने अछि तकरे सार्थक अभिव्यक्ति द' सहज ओ सरल भाषा मे पाठकक सोझाँ परसि देलनि अछि।

कोनो सभ्यता-संस्कृतिकेँ गतिशील बनाक' राखब समाजक लोक दायित्व थिक। से ताधरि जाधरि ओ सामाजिक जीवनमे सार्थक भूमिका निमाहय। ई नहि जे सड़ल-गलल परम्पराकेँ उघने व्यवस्थाक तरमे पिसाइत जीवनसँ कटल व्यवस्थाकेँ सत्य मानि फोकिला मानसिकताकेँ उघैत रही। जे सभ्यता संस्कृति जीवनमे नहि उतरि सकय तकर परित्याग करब उचित थिक। ओ जीवनक अर्थक खोजमे प्रेमक आसरा लैत समयक परिवर्तनकेँ युगक अनुकूलें टाँकिक' नव समाज बनयबाक आकांक्षा रखैत छथि। तेँ कथाकार सामाजिक विसंगतिसँ उत्पन्न विषमता ओ आर्थिक स्थितिक संग सांस्कृतिक आयाम पर जमिक' विमर्श करबा लेल प्रश्नकेँ पनुगबैत छथि। एहिमे हिनक परिवर्तनकारी सोच अबस्से उत्प्रेरक बनि नव सामाजिक मूल्यबोधक संवाहक बनैत अछि।

हिनक लेखनी अबस्से शोषित-पीड़ितक अस्मिता-अधिकारक बात उठबैत अछि। ओ दबल-कुचलल लोकक पक्षमे भ' जाय। ई सत्य अछि जे हिनक प्रेममूलक धारणामे वासनाजन्य उभार कनेक बेसिए उभरि आयल अछि से सत्ते कामुक पुरुषक दम्भोचित उपजा थिक। किएक तँ पुरुषक पौरुषत्व वासनामे विशेषे केन्द्रित भ' आयल अछि। कथाकारक बेचैन मोनमे समतामूलक ओ प्रेममूलक धारा रसप्लावित अछि तेँ अभावजन्य पीड़ामे पीड़ाइत शोषित वर्गक समस्या उभरि आयल अछि। स्त्री वर्गक प्रति जहिना पुरुष वर्गक दम्भ, क्रूर मानसिकता ओ व्यवस्थाकेँ उजागर करैत अछि तहिना सम-सामयिक प्रश्नक झड़ीमे रोटीक औकाति देखबैत अछि।

एहि प्रकारेँ कथाकारक हृदयक व्यथासँ उपजैत अकुलाइत मोनक छटपटाहटिमे सुखाइत प्रेम भावनाकेँ खींचबाक आकांक्षा अछि तँ मूल्यहीनताबोधक प्रति तिक्ख आक्रोश। जीवनक व्यावहारिकता सँ सामाजिक मुद्दाकेँ उठबैत छथि। हँ, प्रश्नक झड़ीमे किछुक समाहार करैत छथि तँ यथातथ्य उपस्थापन सेहो। ओना, कथाक मूल स्वर हस्तक्षेप करिते अछि। ईहो सत्य अछि जे नारी अनुभूतिक रिक्त क्षणमे कथाकारकेँ रहि-रहिक' नारीक मानसिकताक भूख दैहिक काम-क्रीड़ामे ओझरा जाइत अछि। मुदा, ईहो सत्य थिक नारीक अन्तरमोनमे पैसिक' जे मानसिक विकारकेँ स्वच्छ करबाक प्रयास भेल अछि से मात्र कामुकतामे नहि भ'क' सामाजिक मूल्यबोधक संवाहक बनिक' उभरि अबैत अछि। अपसंस्कृतिक प्रति हिनक हृदयमे खौंझी आ असंतोष भाव अछि तँ सामाजिक नैतिकता आ धार्मिकताक अ'ढ़मे छिड़हरा खेलाइत साम्राज्यवादी संस्कृति प्रति विद्रोह भाव मुखरित भेल अछि। मुदा, इहो देखल जाइत अछि जे भ्रमरक कथाकार कथा साहित्यमे जतेक कथ्यक प्रति सजग रहि पबैत अछि ततेक शिल्पक प्रति नहि। शैलीक दृष्टिएँ अवस्से हिनक कथाकार सजग नहि रहि पबैत अछि जे कथा-सौन्दर्यकेँ बाधित करैत अछि। तेँ की ? भ्रमरक अनुभववादी दृष्टि सतत चौकन्न रहैत अछि जे अपन गाम-घर, अड़ोसिया-पड़ोसियाक देखल-भोगल यथार्थक चिक्कन-चुनमुन चित्रण करैत अछि। हिनकामे कहबाक क्षमता अछि जे शिल्पक विकासमे आरो सौन्दर्य आनि निखरत।

जेँकि कथाकार भ्रमरक चौकन्न दृष्टि समाजक प्रति सजग अछि। तेँ जीवन मूल्यक संवाहक बनैत ओ ओहि पात्रक सृष्टि करैत छथि जे समाजमे आइयो निरीह अछि। खासक' नारी पात्र हिनक संवेदनशील मोनकेँ छुबैत अछि। ओ नारीक अधिकार ओ चेतनाबोधक पक्षधर छथि। ओ कखनो नारीक पक्षमे छाती तानिक' ठाढ़ होइत छथि। मुदा, अपसंस्कृतिमे घेरायल नारीक वीभत्स छवि अबस्से हिनक हृदयकेँ पीड़ित-सीदित करैत अछि। ओ कोनो परिस्थितिमे स्वाभाविक यथार्थक तहकेँ फोलिते छथि। तेँ शोषणक विरोधमे झंडा उठबिते छथि। हिनक संवेदनशील मोनमे जीवनक प्रति रागात्मक बोध अछि। हँ, हिनक कथाकार यथातथ्यकेँ हू-ब-हू प्रस्तुति क' दैत अछि से कैक स्तर पर। तेँ पात्रक चरित्र तेना भ'क' ठाढ़ नहि भ' पबैत अछि जे होयबाक चाही। जाहि ठाम हिनक पात्रक चरित्र-चित्रण सजीव भ' उठल अछि ताहिठाम कथाक सौन्दर्य अपन अपूर्व छवि-छटा ल' मुखरित भेल अछि।

नेपालीय मैथिली कथा साहित्यमे भ्रमरक कथा मात्रात्मक ओ गुणात्मक दुनू दृष्टिएँ अपन प्रभाव छोड़ैत एक दिस जँ कथा-साहित्यक भण्डारकेँ भरैत अछि तँ दोसर दिस कथा दृष्टिमे मूल्यबोधक संवाहक बनैत अछि। तेँ मानवीय मूल्य बोधक जीवन-दृष्टि नेने भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करबे करत आ भविष्यमे ऐतिहासिक मूल्यक वस्तु बनबे करत से आशा ओ विश्वास जगबिते अछि। ई संग्रह छपाइ-सफाइक दृष्टिएँ देखनुक आ मनमोहक रहल अछि खासक' पोथीक आवरण विशेष आकर्षित करैत अछि।

जीवनक यथार्थ आ यथार्थक त्रासदी 'एंटीवायरस'

चन्द्रेश

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' लिखित बीस गोट कथाक संग्रह थिक 'एंटीवायरस' (2019 ई.)। हम पहिने स्पष्ट क' दी जे मनुक्खक जीवनक जटिलताकेँ बुझबाक-परेखबाक लेल कथाक अभिव्यक्तिमे भ्रमरकेँ कतेक दूर धरि सफलता भेटल अछि से तकबाक, जनबाक बेगरतूत होयबाक थिक तखने बात किछु आगाँ बढ़त। कोनो कथाकार जीवनक स्मृतिसँ इनल-गिनल शब्दकेँ चुनि-चुनिक' शब्द-शब्दमे पिरोबैत भाषाक माध्यमे कथा गढ़ैत अछि। भाषा तँ सदैव यथार्थमे अयबाक थिक जे रचि-पचिक' कथामे यथार्थ उभरय। ई नहि जे हड़बड़ी-धड़फड़ीमे कथामे भाषाकेँ ल' क' आबय जे भाषाक सौन्दर्यकेँ क्षति पहुँचाबैत अछि। जेँकि भ्रमर छोट-छोट कथा लिखैत छथि तेँ हिनक कथा पढ़बामे कतहुसँ कोनो अतिरिक्त श्रम व्यय नहि करैत अछि। वस्तुत: कथा तँ ओ थिक जे एके बैसकीमे शान्त चित्तें पढ़बा लिअय आ अन्त होइत-होइत मनोमस्तिष्ककेँ इस्स कहैत अभिव्यक्तिक दर्दमे बिसबिसाइत सोचबाक लेल छटपटी छोड़ा दिअय। कथा चुभैत अछि तखन जखन मोनक व्यथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म ढंगें मनोमस्तिष्ककेँ बेधित करैत अछि।

कथा लिखब स्वयंमे एकटा कला थिक। तेँ कथाकार कलात्मक ढंगे साहित्यमे कथा निरूपण करैत छथि। कोनो कथा युगक संगहि समाजकेँ आनन-फाननमे बदलि देत से हम नहि कहि सकैत छी, मुदा सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक ओ आर्थिक आदि परिवर्तनक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करबामे अहम् भूमिका निमाहिते अछि। कही तँ सामाजिक परिवर्तनक सांस्कृतिक अस्त्र अबस्से थिक।

कथामे संवेदनशीलता होयबाक संगहि मूल्यबोध होयबाके थिक। ई सदति ध्यान रखबे थिक जे पूर्वाग्रह कखनो थोपल नहि जाय। कथाक्रम स्वाभाविकतामे कथ्यक संग आओत तँ सामाजिक मूल्यबोध रहबे करत। रूढ़िगत कथा अबस्से छोड़बाक थिक। एकर अर्थ एहिमे लेबाक थिक जे साहित्यक कोनो विधा होअय

रूढ़िपना त्याज्य थिक। तेँ हड़बड़ी-धड़फड़ीमे कथाकार कहयबाक लोभेँ कथा-मूलक सौन्दर्यकेँ अबस्से क्षति पहुँचबैत अछि।

ई हम जनैत गछैत छी जे कथा लिखबाक अव्यक्त दबाव अबस्से कथाकारक मनोमस्तिष्कमे तनाओ उत्पन्न क' बेचैनीक अनुभूति करबैत अछि। तेँ कोनो घटना अबस्से कथानकक अभिन्न हिस्सा बनैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे कथामे घटना होयबाके थिक वा कथामे घटना होयब कथाक अनिवार्य अंग थिक। जँ घटित घटना नहियो होयत वा नहिये उभरत तँ तैयो छोट-छोट अनुभूति बलेँ चिक्कन-चुनमुन नीक कथा लिखल जा सकैत अछि।

कोनो कथामे भावुकता आ कल्पनाशीलता आब ततेक नहि रहल अछि जतेक कि यथार्थक विकास पर जोर देल गेल अछि। इहो यथार्थ अतिवादी नहि होअय। कथाक मांगक अनुकूल अभिव्यक्तिक आजादी भेटयसे कथा मूल्यबोधक स्वरमे होयबाक थिक। जाधरि जीवन्त परिवेश ओ वातावरणमे कथाक सर्जना नहि होयत अर्थात् कथा आ पाठकक बीच कथाकार नहि होयत तखने सामाजिक यथार्थ उभरिक' निस्सन डेगेँ आगाँ आओत। एक तँ यथार्थकेँ देखबाक-परेखबाक अपन-अपन ढंग होइत अछि जे कलात्मकतामे होयबाक थिक। कारण, कथाकार अपना-अपनी ढंगे कौशल अर्जित करैत अछि।

कथा मूर्त्त आ अमूर्त्त दुनू भ' सकैत अछि आ दुनूक अपन-अपन ढंगक महत्ता अछि। एतेक तँ अबस्से देखबाक थिक जे जटिल यथार्थकेँ उद्घाटित करबामे कथाकार पात्रक मनोभूमिकेँ ताहि ढंगे व्यक्त करथि जे अभिव्यक्तिमे बयानबाजी मात्र नहि भ' क' रहि जाय प्रत्युत सूक्ष्मातिसूक्ष्म ढंगक प्रस्तुत भ' जाय। तेँ अन्त:जगत आ बाह्यजगतकेँ एकमेव होयबाक थिक।

उपर्युक्त बात राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथाकार नीक जकाँ जनैत-बुझैत छथि आ दीर्घकालिक अनुभवक आधार पर कैक दशक अर्थात् लगभग पचास वर्ष सँ कथा लिखबामे तल्लीन छथि। ई हिनक देखल-भोगल यथार्थक तेसर कथा-संग्रह थिक। ओ अपन कथामे विचारकेँ रखैत छथि आ वैचारिक विचारधारासँ सामाजिक व्यवस्थाकेँ बदलबाक हेतु आफन तोड़ैत कथामे आनैत छथि।

आजुक मनुक्खक जीवन अबस्से संश्लिष्ट भ' रहल अछि। फलत: बचल-खुचल मनुक्खक संवेदना आ कही तँ जिनगी जीबा पर संकटक बादरि घुड़मुरिया रहल अछि। ओ कथाक कथ्य अपन सामाजिक जीवनसँ खोजैत छथि। खासक' पारिवारिक पृष्ठभूमिमे उठाओल गेल कथामे जँ कल्पनाशीलताक चाशनी अछियो

तँ सामाजिक विडम्बना उभरिक' अबैत अछि। कथाकार कथा तँ कहिते छथि जे एहि बहन्ने ओ छीजैत सम्बन्धकेँ जोगाक' रखबाक हेतु शुभ सन्देश दैत छथि।

हिनक कथा अछि 'एंटीवायरस'। निस्सन्देह ई कथा मानवीय सम्बन्धकेँ जोगायबाक उदाहरण बनैत अछि। कारण, आपसी सम्बन्ध जे पति-पत्नीक बीचक अछि से बनल रहय तेँ एहि पृष्ठभूमि पर आधारित कथा थिक। कहब जे पत्नीक खौंझाहटि चरम पर अछि तँ से अछिए। मुदा, विविध कोणसँ देखैत-परेखैत पत्नीक मनोव्यथा उभरितो ओ अपन शक्ति भरि काजमे लगल-भिड़ल रहैत छथि। यैह विशेषता टूटैत सम्बन्धकेँ बचा लैत अछि। ओ वयसाहु भेलाक फलस्वरूप काजसँ हन-छिन करितो पुन: काजमे लागल-भिड़ल रहैत छथि। हुनक आक्रोश अपने पर रहैत छनि। ओ काज कयनिहारि महिलासँ दूर रहैत छथि। कारण, एकटा शंका आ भय रहैत छनि। किएक तँ 'जवानीमे कएक घाटक पानि हुनक पति महोदय पीबि चुकल छथि से हुनका आरोप रहैत छनि। बुढ़ारियोमे कतहु फेर किछु करताह कोन ठेकान...(6)'। ओ मोनक भरास निकालैत छथि से स्वाभाविके थिक। जखन बेटी, नातिन अर्थात् धीया-पूतासँ भरल-पुरल परिवार रहैत छनि तँ मूरसँ बेसिए पियरगर सूदिकेँ बुझि अनमनामे अपन रोग-व्याधि धरिकेँ बिसरि जाइत छथि। ओना ओ कैक ठामक चिकित्सकसँ सलाह लैत छथि, दबाइ-पथ्य करैत छथि तैयो ओ बेचैनीमे खौंझाइते रहैत छथि। कखनो ओ तामस-पित्त चिकित्सक पर झाड़ैत छथि तँ बेसिये काल पति पर। पति जखन हुनक बात पर टोक नहि दैत छथि। अर्थात् 'जँ किछु समय हुनक बातकेँ उपेक्षा क' देल जाय तँ ओ सहज भ' जएतीह (7)' से ठीके तामस हेठ भ' जाइत छनि। तात्पर्य जे पत्नीक रोषक प्रभाव पति पर नहि पड़ैत अछि तेँ कोनो वायरसक प्रकोप हुनक कम्प्यूटर पर कहियो आबि सकल अछि। आइयो नहि आओत से हुनका विश्वास छनि (8)'। एहि प्रकारेँ सांसारिक मूल्यबोधक प्रति पारिवारिक सम्बन्धक निष्ठा-भाव जे जीवनक प्रति अछि से बनल रहब अबस्से कथाकारक वैचारिक प्रतिबद्धताकेँ जगजियार करैत अछि। सहज जीवनमे व्याप्त आस्था-भाव आत्म सजगतामे उभरि अबैत अछि। सोझ-साझ ढंगें कहल गेल ई कथा अपन अन्तर्निहित सत्यक फलस्वरूप बेस प्रभावोत्पादक अछि। ई आत्मपरिवारक पृष्ठभूमिक अछैतो जनसामान्यक जेँ पारिवारिक पृष्ठभूमिक कथा बनि गेल अछि तेँ कथाकार भ्रमरक कला-कौशल अबस्से स्थिति-परिस्थितिक अंकनमे एकटा ऊँचाइ प्रदान करैत अछि।

'हमर बौआ' हयबाक हक छीनल जा रहल अछि (12)' एहि भाव भूमि

पर 'आई.सी.यू.' कथाक सर्जना भेल अछि। रक्तसम्बन्ध पर आधारित एहि कथामे घटनाक भीतरक घटित घटनाकेँ पाठकक समक्ष परसल गेल अछि। सम्बन्ध की होइत छैक तकर संवेदनात्मक प्रभावकेँ उद्घाटित क' कथाकार पारिवारिक पृष्ठभूमिकेँ उधेसबाक सचढ़ प्रयास कयलनि अछि। छटपटाइत मोनक व्यथाकेँ बाहर करैत निश्चेष्ट पड़ल जेठ भाइक दशा देखि कथाकारक सदिच्छा जे करुण-भावेँ आप्लावित अछि सैह स्वजनक कठिनतम रुग्णावस्थाकेँ देखिक' संवेदनाक रसमे तेनाक' प्रवाहित कयल अछि जे पाठकीय मनोमस्तिष्ककेँ मथैत अछि। ई संस्मणात्मक कथा होइतो आत्मीयबोधकेँ व्यक्त करैत अछि। विश्वासपरक भावनात्मक सम्बन्ध एहि कथामे अछि।

तिला संक्रान्तिक माध्यमे तील-गुड़क महत्ताकेँ देखबैत कथाकार परम्परापरक संस्कृतिक वैशिष्ट्यकेँ देखयबाक प्रयास 'अमृतपान'मे कयल अछि। नेनपनक स्मृतिकेँ मोन पाड़ैत, मधेश आन्दोलनक प्रति खिन्नता प्रकट करैत व्यवस्थापरक चोट अबस्से भेल अछि। युगक अन्तरालपरक सकारात्मक आ नकारात्मक खेलकेँ बेकछाबैत अपन परम्परा संस्कृति कोना कटि रहल छैक (14)' से दर्शाओल गेल अछि। माय-बापक संग बूढ़-बुढ़ानुसक स्नेहकेँ सहेजबाक भाव अबस्से मोन पर गहींर प्रभाव छोड़ैत अछि। सांस्कृतिक स्वरूपक खोज होयब आह्लादपरक अछि।

'द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा' कथामे नवविवाहिता वर-कनियाँक क्रिया-कलापकेँ सभ केओ जेना-तेना देखिए लैत अछि। एहि दुनूक बीचक अनमन सेहो प्रेमालापमे विलीन भ' जाइत अछि। प्रोफेसर साहेब सन बुद्धिजीवी जे चमचाक घी-छालही लगाओल सुधारवादी दृष्टिकोण सुनि मग्न-मस्त छथि सेहो किछु कालक बाद दुनूक प्रेमालाप देखि पस्त भ' जाइत छथि। जनकपुरक रेल डिब्बामे चढ़ल एहि द्वितीय श्रेणीक लोककेँ घुरि-फिरिक' एक नजरियेँ ओहि जोड़ीक क्रिया-कलापकेँ देखबाक हेतु व्यग्र की भ' जाइत छैक जे नयन-सुख लैत अछि। एहि कथामे परिवार नियोजनक शत्रु पर चोट अछि तँ वर-वधूकेँ खजुरी टीशन पर एकटा सिपाहीक देल विघ्न पर तामस उठैत अछि। कथाकारक भसिआइतो मोन एक खेप देखलाक उपरान्त अपने-अपनेमे भसिआइत अन्ततोगत्वा एहि डिब्बामे चढ़ल यात्री सभक नजरिकेँ तौलि रहल अछि। छोट-छोट घटनानुभूतिकेँ कथाकार कथा बनाक' परसैत छथि।

'क्वार्टर नं. एफ-तीन'मे विगत स्मृतिक माध्यमे कथाकार प्रेमानुभूतिकेँ परसि देलनि अछि। तीन गोट बेटा आ तीनटा बेटीक बाप विसनपुर गामक घरधनी देवामंडल एकटा बचिया विद्याक विवाह रमौल करैत अछि। विद्या सासुर नहि बसय

चाहैत अछि आ सासुरक लोक नैहर ने आबय देम' चाहैत छैक। एहि विषम स्थितिसँ गुजरैत देवामंडल कथाकारक सहयोग ल' विद्याकेँ घर ल' आनैत अछि आ कथाकार स्वयं पहिने विद्याक आ तकर बाद रीताक प्रेमजालमे फँसैत अछि। विद्याक बेटा होइत छैक तँ लाँछना कथाकार पर मढ़ल जाइत अछि। मुदा, विद्या साँच बात कहि ओहि फानीकेँ सोझरा दैत अछि। रहल रीताक बात तँ कालक्रममे लोकलाज, सामाजिक प्रतिष्ठा, घर-व्यवहार आदिकेँ देखैत एक-दोसरसँ फुटकैत अछि तैयो उनतीस-तीस वर्षक बादो पश्चातापक पीड़ासँ दबल चन्द्रनगरक क्वार्टर नं. एफ-तीनमे कथाकार हाल-चाल बुझबाक लेल अबैत अछि। एहि कथामे आत्मालोचन करैत कथाकारक आत्मसजगता देखार भेल अछि। मर्मान्तक पीड़ा अछैतो परिवर्तित समय आ समाजकेँ देखाओल गेल अछि।

महाभूकम्प पर आधारित 'पराकम्पन' कथा अछि। एहिमे अस्सी लाख खर्च क' तीन वर्षक अथक परिश्रमक फलमे चारि तल्ला घर अछि तँ दोसर दिस दू लाख तिरसठि हजारमे कीनल गेल राजूक बजाजक पल्सर मोटर साइकिल। एही दुनूक द्वन्द्व मध्य कथाकारक शब्देँ- 'महाभूकम्प द्वारा छहोछित भेल मानवीय संवेदनाक प्रतिनिधित्व हमर चारि तल्लाक ई घर बेसी क' रहल अछि वा राजूक मोटरसाइकिल (28)। वस्तुत: जखन भूकम्प होइत छैक तँ लोक जी-जान हाथ ल' घरसँ सुरक्षित स्थानमे पड़ाइत अछि। ओहि काल सभटा सुधि-बुधि हेराय जाइत छैक। कोहुना जान बाँचैक यैह लक्ष्य होइत अछि। पराकम्पनक डर सभकेँ होइते छैक। तैयो लोककेँ अन्ततोगत्वा घरक आसरा रहिते छैक। चर-चाँचर वा निर्जन स्थानमे ताधरि रहैत अछि जाधरि भूकम्प समाप्त नहि होइत छैक। ओना भूकम्प अयलाक दिन-रातिमे दहशति भग्नावशेषक नीचाँ राखैत अछि जखन कि सभ घरेमे वास करैत अछि। स्पष्टत: एहि कथामे मानवीय संवेदना जगजियार क' संवेदनाक विस्तारसँ कथाक रचनात्मक स्वरूप प्रस्तुत कयल गेल अछि। घर जँ खसल तँ मोटर साइकिल गेले घर अछि तेँ सुरक्षित जगह होइतो आशंका बनल रहैत अछि।

'परिवर्तन' कथामे मानसिक परिवर्तनक बात भेल अछि। पति-पत्नीक बीच कतबो झगड़ा किएक ने होअय, मुदा प्रेम व रघुवीर आ हुनक पत्नी एक दोसराकेँ एतेक प्रेम करैत छलखिन्ह जे की कहल जाए। हिनक सभ पथ-परहेज आ दवाइ पर हुनक नजरि रहैत छलनि (32)। मुदा, पत्नी रहथिन तँ 'घर काटए दौगनि आ नहि छथिन तँ तैयो वएह बात। तात्पर्य जे जहिया पत्नी रहथिन तहियाक सम्बन्ध कनेक डाँट-दबार सभ अखरनि, मुदा आजुक पत्नीक नहि रहला पर खलैत अभाव

आ खसैत स्वास्थ्य बहुत किछु रघुवीरकेँ मोन पाड़ि देने छनि। ई परिवर्तन स्वाभाविक थिक जे जीवनमे घटित होइत अछि। तेँ कथाकार सेहो सजग भ' चौकन्न छथि आ अपना पर लगाम लगबैत पत्नीसँ फोन पर बात करबाक क्रममे सम्हरि जाइत छथि। ताहिमे चरित्रगत शंका अबस्से सन्देह बनि मोनमे उमड़ैत छैक। निष्ठाक पोल खुजब किनसाइत गलत अवधारणामे आओर घातक बनैत अछि। वैचारिकी आ दृष्टिक फलस्वरूप मतभिन्नता होयब एहि कथाक उद्देश्य बनल अछि। नव भावबोध नेने ई कथा आयल अछि।

'मुनियाँ टी स्टॉल'मे मुनियाँक रामधन प्रेमीक संग पति राजकुमार आ दूटा टेल्हकेँ छोड़ि भागि पड़यबाक कथा अछि। कारणमे पति चिलममे दम मारयबला आ रातिमे रंगताल मचबयवला अर्थात् मारि-पीट करयवला। जे किछु, सभटा गहना गुड़िया, लत्ता-कपड़ा ओ टाका-पैसादि ल' रामधनक संग भागि पड़ायलि। मोनमिलानी छलैक। केओ-केओ बजैक तिमनचिक्खी। जे किछु, प्रेम केहनो बन्हनकेँ तोड़ि फेकैत अछि। कथाकार कथ्य, भाषा आ शिल्प तीनू स्तर पर अपन-अपन ढंगें जीवन जीबाक जे रूप कथामे कयलनि अछि जे समाज ओ जीवनगत परिवर्तन दिस इंगित करैत अछि।

'अन्न-धन लक्ष्मी' कथामे नामर्द इंजीनियर पुरुषकेँ पत्नी छोड़ि जेबाक आ एकटा युवतीकेँ कार्यालय प्रमुख कुमारे युवक प्रेमजालमे बझाक' गढुआरि क' देबाक व्यथामे भुतही नदीमे कुदि मरबाक व्योंत धरयबाक बात आयल अछि। पुरुषकेँ स्त्री एहि कारणें छोड़ैत अछि जे धन-दौलतिक सुख भेटलोपरान्त ओकर कोखि नहि भरैत छैक तँ ओ टाका, गहना सभ किछु ल' अधेड़ विधुरक संग सभ भौतिक सुखकेँ तीलांजलि द' भगैत अछि। मुदा, एकटा पढ़लि-लिखलि मैट्रिक पास युवतीकेँ बिनु दहेजे विवाह नहि होयबाक फलस्वरूप आ बापक दयनीय स्थितिकेँ देखैत घरखर्ची हेतु एकटा ऑफिसमे नोकरी धरब तँ कार्यालय प्रमुखक हेम-छेम विवाहक बातमे तीन-चारि मासक पेट ल' मृत्युक विकराल गालमे समयबाक लेल बाध्य क' देने छल। मुदा, अन्तिम परिणतिमे दुनूक आवश्यकतानुसारें मिलन अबस्से अन्न-धन लक्ष्मी आनि देलक। एहिमे स्त्रीक दु:ख पतित पुरुष समाज दिस इंगित अछि जे कामी पुरुष आ सामाजिक व्यवस्थासँ अभिशप्त अछि। मुदा ओहि पुरुषक? धन-दौलति कमायब आ पतिक कामेच्छाकेँ पूर्त्ति नहि करब, विदेशमे रहब आ डाक्टरी चिकित्सामे नामर्द घोषित होयब अबस्से कोनो नारीक लेल विवशताक जिनगी जीबाक आ भोगबाक लेल बन्हन बुझाइत छैक जकरा ओ नारी तोड़ि फेकैत अछि। अन्तमे एहि

दुनूक मिलन अबस्से एक-दोसर पूर्त्तिमे सहायक होइत अछि। तेँ अनायासे दुनूकेँ मान-सम्मान मर्यादा आ सन्तान प्राप्त भ' जाइत अछि। मिला-जुलाक' ई कथा चरमानुभूतिपरक आनन्द-सुख दैत सामाजिक बन्धनमे पति-पत्नीक मर्यादाक डोरमे एक-दोसरकेँ बन्हैत पारिवारिक पृष्ठभूमिकेँ मजगूती प्रदान करैत अछि। कथामे बातकेँ कहबाक ढंग आ जीवन जीबाक लिलसा अबस्से कथाकार कथ्य आ शिल्पक वैशिष्ट्य थिक। जिनगीकेँ जड़िसँ जीबाक आ प्रेम डोरमे बान्हल रहबाक सार्थकता अबस्से एहि कथाकेँ मूल्यबोधक दृष्टिएँ प्रभावी बनबैत अछि। एहिमे आत्मपरिष्कारक संगहि गहनतम प्रेम संवेदना विश्वासक न्यों पर जाग्रत भेल अछि। यैह संस्कार स्त्री-पुरुषकेँ मजगूत डोरीमे सम्बन्ध-सूत्रकेँ आरो प्रगाढ़ करैत अछि।

'गंगा प्रसादक स्वायत्तता'मे सुग्गाक माध्यमे स्वतंत्रताक छवि लौकैत अछि। 'जय गणतंत्र' कथाकारक मूल उद्देश्य थिक जकर अभिव्यक्तिमे सार्थकता अछि।

'प्रतीक्षामे' सैद्धान्तिक आ व्यावहारिकताक एकमेव होयब पर बल देल गेल अछि। पत्नीक अनुपस्थितिमे पतिकेँ भोजन-भातसँ ल' क' किताब सैंतबाक धरिक चिन्ता व्याप्त अछि तँ पत्नीक खौंझाहटिक संग पारिवारिक चिन्ता आ पतिक सेवा-भाव निहित अछि। जतय पति अपन सपना अर्थात् लेखन-कार्य हेतु फिरिशान छथि ततय पत्नीकेँ घर-परिवारक संगहि पतिकेँ प्रगति क्षेत्रमे आगाँ बढ़ैत देखबाक उत्कंठा। जे किछु, सम्बन्ध निर्वाह कलाक उदाहरण बनि आयल अछि।

'दहेज' कथामे नवविवाहिताक स्थिति-परिस्थितिकेँ उधेसैत बिना लाइसेंन्सक मोटर साइकिल पकड़ायब तँ पाइक अभावमे पतिक विवशता जाहिर होयबाक कथा अछि। 'रंजू' कोना अपन गुप-चुपमे राखल एक हजार टाका द' दहेजक कीनल मोटरसाईकिलकेँ प्रशासनसँ छोड़बैत अछि तकर व्यथा-कथा अछि। दहेजमे मोटर साइकिल से नीकहा चाहबे करी, मुदा ओकर रख-रखाव? पैघत्व बनबा पर नव धनाढ्य वर्ग पर छींटाकस्सी क' यथार्थ आ भोगल रूप कही तँ समाजगत चेतनामे प्रतिफलित अछि।

'उड़ान' कथामे धनक पाछाँ बेहाल, विदेशमे कमाइत राजनन्दनक विवशताक संगहि ओकर पत्नी मुनियाँक राजूक संग मोन मिलानी पर भागि पड़यबाक कथा अछि। कही तँ दस दृश्यमे आबद्ध ई एकांकी (नाटक) थिक। एहि प्रेम-भाव पर हिनक कथा 'मुनियाँ टी स्टॉल' कथा अछि जकर नाटकीय रूप कहब प्रासंगिक होयत।

'आ आब होरी आबि गेलै' मे 'आशीष' आ 'वीणा' होरीक दिन 'फगुआक उमंग रहैक आकि जवानीक आन्हर जोश, दुनूकेँ एहन रंग चढ़लै जे धोअयलोसँ सफाई

भेनाइ कठिन भ' गेलै।' (70) 'आशीष' तँ पाहुन छल आ वीणा बहन्ना बनाक' एकान्तमे आशीषक संग हँसी-मजाक संगहि चोरि मोनमे नेने प्रेम देखौने छल। यैह कारण छलैक जे वीणाक विवाहोपरान्तो आशीष जे आब साठि टपि चुकल छल तैयो एकटा पाश्चातापमे छटपट करैत छल। ओकर फगुआ रूसि गेल छलैक। मुदा, आइ फगुआक दिन ओ खूजिक' रंग खेलत। कारण, ओकर मोनक विकार छँटि गेल छलैक। किएक तँ किछु मास पहिने बुझने छल जे वीणाक आब भरल-पुरल परिवार छैक। ओकर खखरी बनल देह-मोनमे नव प्रेमानुभूमि होयब अबस्से नवजीवनक संचार थिक। मानवीय चरितमे भूल-चूक, लेनी-देनीक संगहि जीवन अनमोल थिक तकर सार्थकता अछि।

'सपना' एहि संग्रहक अन्तिम कथा अछि ताहिमे पहाड़ी आ 'मधेशीक अर्थात् शोषक आ शोषितक बीच द्वन्द्वकेँ उभारिक' 'मधेशी एकता जिन्दाबाद' पर बल अछि 'अयोधी' मास्टरक माध्यमे दुनू ठामक वैषम्य स्थितिकेँ विभिन्न दृष्टिएँ उठबैत एहि कथामे मधेशीक संग होइत दुर्व्यवहारकेँ उठाक' पहाड़ी पर जमिक' प्रहार कयल गेल अछि। जनचेतनापरक ई कथा मधेशीक जागरूकता पर केन्द्रित अछि। क्रान्तिक स्वर नेने ई तत्कालीन समाजक कही तँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ल' आयल अछि।

एहिमे 'इजोरिया रातुक सपना', अन्ततः, 'भेलेन्टाइन डे आ गुलाब', 'मार्निंग वाक', 'सीमापरक भूत' कथा सेहो अछि जाहि पर हम पूर्वमे पत्रिकाक माध्यमे विचार लिखि चुकल छी। आरो लिखबाक अछि से बादमे।

हम कथाकार भ्रमरक कथाक पाठक छी। हिनक कथा नीक लगैत अछि तेँ अपन विचार व्यक्त करैत आयल छी। किछु कथामे ओ अपनाकेँ दोहराबैत छथि ताहिसँ बँचबाक थिक। नेपालक मैथिली कथा-साहित्यमे ओ नवीन दिशाबोध नेने कथामे प्रवृत्त होइत।

एकटा बात स्पष्ट क' देब आवश्यक अछि जे आजुक कथाक समीक्षा शास्त्रीय अर्थात् परम्परागत समीक्षा पद्धति पर करब ततेक वांछनीय नहि रहल अछि। तेँ घटना-प्रधान, चरित्र प्रधान आदिक दृष्टिएँ मात्र आलोचना करब ततेक युक्तिसंगत नहि अछि। कथाकेँ परेखबाक कसौटी आब रचना-प्रक्रिया, कलात्मक रचाव, संश्लिष्टता, आधुनिकता, आन्तरिक संघटन, अनुभूति आ अभिव्यक्तिक अभिन्नता आदि कथानक आ चरित्रक परम्परागत चौकठिकेँ नांघि देल अछि। तेँ कोनो आलोचकक लेल नव भाषा, गहन अध्ययनशीलता आ पाठकसँ संवाद स्थापित करबाक हेतु प्रतिबद्धता,

विचारबोध आ मूल्यांकन करबाक हेतु मूल्यबोधक कसौटी चाहबे करी। पहिनेसँ वा पूर्वपरम्परापरक निर्धारित मापदण्ड नहि होइत अछि। कथाकारकेँ समयसँ संवाद करैत नव भाषा जीवनक यथार्थ आ शिल्प ओ कथ्य यथार्थक कसौटी नेने जेँकि राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथामे जीवनानुभूतिपरक अभिव्यक्ति अछि, शोषण-विरूद्ध आवाज गूँजैत अछि आ विशेष क' प्रेमाभिव्यक्तिमे रसास्वादन होयब बेस विकसित अछि तेँ हिनक कथा कही तँ युगचेतनापरक मानववादी अछि। मानवीय करुणासँ ओत-प्रोत संवेदनात्मक कथ्य नेने हिनक कथा जीवनानुभूतिक छोट-छोट खण्ड नेने मर्मस्पर्शी अछि तेँ जीवन्त भ' आयल अछि। उपभोक्तावादी संस्कृति पर चोट करैत यथार्थक संश्लिष्ट आ जटिल रूपक छिलकोइया जेँ परत-दर-परत छोड़ाक' संकेतक माध्यमे आयल अछि से अबस्से कथाकेँ छोट आकारमे कही तँ सुविन्यस्त करैत अछि। जेँ हिनक कथा सम्प्रेषणीय आ जीवनपरक मूल्यबोध नेने आयल अछि तेँ हृदयसँ हम कथाकारक स्वागत करैत छी। संगहि भविष्यमे आरो नवसंचेतनापरक कथा देखबाक-पढ़बाक अभिलषित छी। कारण, हिनक कथा साहित्यक संगहि आनो रचनापरक भूख एखन बाँचल अछि। ओ नेपालक मैथिली कथा-साहित्यमे अपन फरिच्छ स्थान ठमियौने मूल्यबोधक कथाक संवाहक बनल अछि।

भ्रमरक नाटक : भैया अएलै अपन सोराज विहगंम दृष्टि

डा. योगानन्द झा

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत ओ सामूहिक जीवनक चुनौती सबहक प्रत्युत्तरक रूपमे सुस्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वप्नलोकसँ क्रमश: दूर भेल जा रहल अछि। आजुक साहित्य शैली विशेषमे मानव जीवनक व्याख्या किंवा लोकरंजनक साधनाटाक रूपमे सीमित नहि अछि। अपितु ई निरंतर लोकजीवनक हितक हेतु नव नव-विकल्प ओ दिशा-निर्देशक प्रति प्रतिबद्ध अछि। तेँ आजुक साहित्यकार लोकजीवनक भविष्यक हेतु चिन्तनशील देखि पड़ैत छथि आ लोकजीवनमे व्याप्त मलिनता, असमानता, निष्ठुरता ओ अहंकारक उन्मूलनकेँ अपन हथियारक रूपमे प्रयोग करैत देखि पड़ैत छथि।

आधुनिक साहित्यक गतिविधिक ई चेतना अपन बहुआयामी स्वरूपमे श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर जीक सद्य: प्रकाशित 'भैया अएलै अपन सोराज' पोथीमे संकलित दसो एकांकी नाटकमे अत्यन्त प्रस्फुटित भेल अछि। एहि सबमे एकांकी नाटकक समस्त मर्यादाक पालना करैत लोकमंगलक जे चित्र रुपायित भेल अछि ताहिसँ ई स्पष्ट अछि जे नाटककार समाज, राष्ट्र ओ विश्वमानवक उन्नयनक हेतु प्रतिबद्ध लेखनसँ संपृक्त छथि तथा विभिन्न अमंगलकारी तत्वकेँ ताहि रूपमे उपस्थिति करबामे सक्षम छथि जाहिसँ दर्शक स्वयं ओकर निदानक मार्ग हेरि सकथि।

एहि संग्रहक दूटा नाटक लोकगाथापर आधारित अछि क्रमश : 'भैया, अएलै अपन सोराज' आ 'लोक-नाट्य जट-जटिन।' 'भैया, अएलै अपन सोराज' मे दीना-भद्रीक गाथाकेँ आधार रूपमे ग्रहण कयल गेल अछि। गाथाक अनुसार दीना-भद्री नामक दुई गोट मुसहर भाइ छलाह जे कनक धामि नामक सामन्तक एहि हेतुएँ विरोध कयने छलाह जे ओ लोकसभसँ बेगारी खटबैत छल। दीना-भद्री कनक धामिकेँ मारि

क' बेगारी प्रथासँ लोककेँ उबारने छलाह आ जन-जनमे पूजित भेल छलाह। आइयो ओ मुसहर जातिक लोकदेवताक रूपमे पूजल जाइत छथि। कनक धामि तँ मारल गेल, मुदा सामन्ती व्यवस्था एखनो कोनो रूपमे जीवन्त अछिए। सामन्त लोकनि नहि केवल दलित वर्गक श्रमक शोषण करैत रहलाह अछि अपितु एहि वर्गक नारी लोकनि यौन शोषणक हेतु सेहो बदनाम रहलाह अछि। क्रमश: युगचेतना बदललैक अछि आ शोषित वर्ग एहि अनीतिपूर्ण व्यवस्थाक प्रति असन्तोष, विरोध ओ विद्रोहक भावनासँ संबलित होइत गेलाह अछि। एकरे परिणाम थिक जे आब बेगारी प्रथा इतिहासक वस्तु भ' गेल अछि। तथापि नाटककार एहि प्रसंगक पुनरावृति क' वस्तुत: शोषक ओ शोषित वर्गक ऐतिहासिक संघर्षक गाथाकेँ संरक्षित करैत समसामयिक जीवनमे पर्याप्त शोषण चक्रक अभिव्यंजना ओ तकर निदानक मार्ग संकेत क' देलनि अछि।

एहि एकांकीमे पुरुष-1 आ पुरुष-2 कृष मजदूर अछि जे जोरावर सिंह सामन्तक जमीन्दारीमे रहैत अछि। ई सभ बेगारसँ तँ अकछल अछिए, अपन बहु-बेटीक इज्जतक रक्षाक हेतु कोनो त्राताक बाट ताकि रहल अछि। जखन एकरा दुनूकेँ विदीत होइत छैक जे दीना आ भद्री नामक दूटा पहलमान एकरे जातिक छैक आ ओ दुनू जोरावरक अत्याचारसँ लोककेँ त्राण दिएयबाक हेतु तत्पर भेलैक अछि तँ दुनू बेस प्रसन्न होइत अछि। जोरावरक लठैतसभ गाम-गमातिमे अत्याचार करैत छैक। तत: पर दीना भद्रीक संग जोरावरक मल्लयुद्ध होइत छैक आ ओ मारल जाइत अछि। एहन अनाचारीक मृत्युपर जनता-जर्नादन प्रसन्न होइत अछि। वस्तुत: ई एकांकी लोकपरम्पराक प्रति नाटककारक व्यामोहटाक निदर्शन थिक। एहिमे युगिन चेतनाक सम्यक उपस्थापन नहि देखि पड़ैत अछि। जट-जटिन मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनाटक थिक। ई लोकनाट्य महिला लोकनिद्वारा अभिनीत होइत छल। कहल जाइछ जे जखन वर्षा ऋतु समाप्त भेलाक बादो वर्षा नहि होइत छलैक, तँ ग्राम्य नारी लोकनि इन्द्र भगवानकेँ प्रसन्न करबाक हेतु टोना करैत छलीह। एहि टोनाक क्रममे जट-जटिन लोकनाट्य महिला लोकनि दू दलमे विभक्त भ' खेलाइत छलीह। मान्यता ई रहैत छलनि जे कुटल जाइत बेंगक करुणापूर्ण आवाज सुनि इन्द्रदेवता पघलि जाइत छलाह। आ वर्षा होम' लगैत छलैक। कुटल बेंगक अवशेष कोनो हड़ाहि माउगिक आंगनमे फेकि देल जाइत छलैक जे अपना संग कयल गेल एहि व्यवहारक हेतु महिला लोकनिकेँ गारि पढ़ैत छलीह। ओ जतबे खौंझा-खौंझा क' गारि पढ़ैत छलीह। लोक मान्यताक अनुसार वर्षा ताहि वेगसँ होइत छल।

कृषि-कर्मक हेतु वर्षाक महत्ता जगजाहिर अछि आ ताहि हेतु जट-जटिनक लोकनाट्य खेलयबाक परम्परा अति प्राचीन कहल जाइत अछि। एहि नाट्यक दुनू पात्र जट आ जटिन लोक जीवनक शुद्ध दम्पति अछि। जकर नोक-झोंक एहि नाट्यमे युगल गीतक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि। नाटककार मिथिलाक एहि लोकसाहित्यकेँ संरक्षित क' लेबाक दृष्टिएँ एकर संकलन कयलन्हि अछि आ एकर मूल रूपकेँ यथावत रखबाक प्रयास कयलनि अछि। एहि नाट्यमे जट-जटिन प्रयोग प्राचीन नाट्य परम्पराक अनुसरणमे भेल अछि। 'महिषासुर मुर्दाबाद' एहि नाटक संग्रहक एकल नाटक थिक। जाहिमे एकेटा युवक अपन आत्माक संग गप्प करैत देखल जाइत अछि। नाट्य प्रयोगक दृष्टि जे ई एब्सर्ड प्रकृतिक एकांकी अछि। जाहिमे व्यंग्य, आक्रोश ओ श्रव्यद्वारा युगीन यथार्थक चित्रांकन कयल गेल अछि। समसामयिक जीवनक ई यथार्थ थिक जे आइ समाजमे आनक बहु-बेटीक इज्जति लुटनिहार, दहेजलोभी अभिभावक, गरीबक मखौल उड़ौनिहार, महाजनी वृत्तिसँ समाजक शोषण कयनिहार, अनाचारी भ्रष्टाचारी लोकनिक चलती छनि आ ओ लोकनि कानूनकेँ अपना कब्जामे क' निर्द्वन्द्व विचरण करैत छथि, जखन कि अन्यायक विरोध कयनिहारकेँ इएह कानून फाँसीक फन्दा धरि पहुँचा दैत छैक। नाटककार शोषण होइत वर्गपर शोषित वर्गक विजयक पक्षघाती छथि आ ई संकेत दैत छथि जे कोनो एकटा शोषककेँ हलाल क' देने शोषण समाप्त होम'बला नहि छैक किएक तँ एकटा शोषक मरैत देरी दोसर शोषक तैयार भ' जाइत छैक। अवश्य, जँ शोषित लोकनि सभकेँ सेहो समाप्त कयल जा सकैत छैक।

तहिना 'पेटक खातिर' सड़क नाटक किंवा नुक्कड़ नाटक थिक जे बिना अधिक नाटकीय उपकरण ओ रंगशालाक सुनियोजित व्यवस्थाक कतहु खेलल जा सकैछ। आजुक व्यस्त जीवनमे नाटक आ रंगमंचके सामान्य दर्शक लग स्वयं पहुँचबाक चाही, ताहि दृष्टिसँ जे एहि कोटिक नाटक अभिनव प्रयोग थिक। एहि नाटकमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विभिन्न आयामपर कड़गर चोट कयल गेल अछि आ दर्शक लोकनिकेँ समाज ओ राष्ट्रमे व्याप्त विसंगतिसँ परिचय करा ओकर निदान सोचबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कयल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे कोना तस्करीक माल तस्कर ओ नेता लोकनि बलें एक देशसँ दोसर देश पहुँचि जाइत अछि, कोना प्रशासकलोकनि भ्रष्टाचारक शृंखलासँ आबद्ध छथि आ जनसामान्यक शोषणमे लागल छथि, कोना नेता लोकनि टिकट पयबाक लेल कुत्सितसँ कुत्सित कर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि। कोना जनताक रखबार लोकनि जनताक कल्याणक मददिक

अंश अपने खा गेल करैत छथि आ शिक्षाजगतमे माफिया लोकनि पाइक बलपर मेधावी छात्र लोकनिक स्थानपर कमजोरो छात्रकेँ मेधा सूचीमे आगाँ बढ़ा देबाक धंधामे लिप्त रहैत छथि।

'नेता जी आबिरहल छथि' एकांकी सेहो प्रजातन्त्रीय शासनक विभिन्न विसंगतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि नाटकमे नाटककार जनताक समस्याक मूलकेँ स्पष्ट करबाक उद्देश्यसँ कथा-सूत्र जोड़लनि अछि। नाट्यारम्भमे सूत्रधार ओ नटी कलाकार लोकनिक हड़तालसँ सदति देखि पड़ैत छथि। ई लोकनि कथानक तकबाक प्रयासमे छथि। ताबत एकटा जुलूसक स्वर सुनि पड़ैछ। जाहिमे महँगीक समस्या अत्यन्त सामान्य बुझना जाइत छनि आ चूँकि लोक एकरा तेना क' क' अङेजि लेने अछि जे ई नाटकक विषय रूपमे ज्वलन्त नहि बुझना जाइत छनि। तत: पर भ्रष्टाचारक विरुद्ध जुलूस देखि पड़ैत छनि। आ भ्रष्टाचारक समस्याकेँ कथानकमे ल' नाटक खेलबाक मानसिकता बनबैत छथि। मुदा, ईहो आब ज्वलन्त समस्या नहि बुझना जाइत छनि। कारण लोक कोनो प्रकारक सरकारी काजक हेतु घूसक लेन-देनके अङेजि क' एकरा स्वीकृति द' चुकल छैक। तत:पर शान्ति-सुरक्षाक हेतु प्रशासनक विरोधमे जुलूस देखि पड़ैत छनि। तखन ओ अपन नाटकक हेतु शान्ति सुरक्षाक समस्याकेँ कथानक रूपमे ग्रहण कर' चाहैत छथि। किएक तँ इहो समस्या जड़िआयल बुझना जाइत छनि। मुदा, तखने बेरोजगार लोकनिक एकटा जुलूस देखि ओ बेरोजगारीएकेँ ज्वलन्त समस्या मानि कथानकक सृजन करबाक ब्यौंत कर' लगैत छथि। मुदा, पुन: एकटा सरकारी जुलूसपर नजरि जाइत छनि। जाहिमे विरोधी सबहक विरोधक समस्या, कर्मचारी लोकनिक हड़तालक समस्या, शान्ति-सुरक्षा भंगक समस्या आदिक प्रतिरोधात्मक स्वर सुनि पड़ैछ आ एहि समस्या सबकेँ नाटकीय स्वरूप प्रदान करबाक मन बनबैत छथि। एहि तरहें एहि एकांकीक माध्यमे नाटककार प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे उत्पन्न विभिन्न समस्यासबहक सङोर क' ई प्रदर्शित करबाक प्रयास कयलनि अछि जे आइ ततेक समस्या अछि जे सबपर फूट-फूट क' नाटक खेलल जा सकैछ। कानो समस्या ककरोसँ कम नहि अछि, मुदा सबसँ बड़का समस्या थिक जुलूस जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक देन थिक। एहि समस्याक कारणे लोकजीवन अस्त-व्यस्त रहैत अछि। मुदा, ई कोनो समाधान प्रस्तुत नहि क' पबैत अछि। अवश्य जुलूस कयनिहारकेँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैक। जे ओ अपन अधिकारक प्रयोग क' पाबि रहल अछि। आ एहि जुलूसक समस्याक मूलमे छथि राजनेता लोकनि जे मूल समस्यासँ जनताकेँ भ्रमित क' अपन स्वार्थ साधनमे लागल छथि। तेँ प्रजातन्त्रमे जाहि

एकमात्र चरित्रक चारूकात सबटा समस्या घुमैत अछि, से थिकाह नेताजी लोकनि। यावतधरि हिनका लोकनिक चरित्रमे सुधार नहि होयत, ताधरि प्रजातन्त्र लोक कल्याणकारी नहि भ' सकैछ आ ने कोनो समस्याक समाधान भ' सकैछ। एहि तरहेँ एहि नाटकमे वास्तविक जीवनक उद्घाटन क' अभिनव कलाक माध्यमे एकटा विशिष्ट विचारधाराक अभिव्यक्ति भेल अछि जे लोकजगतकेँ प्रेरित-प्रभावित करबाक दृष्टिएँ सफल अछि।

'हम घुरि अयलहुँ मीत' क्षेत्रवादसँ ग्रस्त नेपालक लोकजीवनक अन्त:कथापर आधारित अछि। क्षेत्रक आधारपर नेपालक लोक दू भागमे बँटल अछि। पहाड़ी आ मधेशी। पहाड़ी लोकनि पहाड़पर रहैत छथि आ मधेशी लोकनि तराइमे। पहाड़ी लोकनि, मधेशी लोकनि प्रति नीक भाव नहि रखैत छथि। जकर कारणे नेपाली मानस दू भागमे बाँटि गेल अछि। स्वभावत: पहाड़ी ओ मधेशीक राष्ट्रीयता एक रहलाक बादो दुनूक बीच दूरी बढ़ल अछि। जे पारस्परिक सर्घषक रूप ल' लेलक अछि। एहि संघर्षक कारणे पहाड़ी लोकनि मधेशी लोकनिक बीच आ मधेशी लोकनि पहाड़ी लोकनिक बीच उत्पीड़ित होइत छथि। उत्पीड़नक अतिरेक तखन होइछ जखन मधेशमे बसल कोनो पहाड़ीकेँ अपन चल-अचल सम्पति अल्प मूल्यमे बेचि प्रव्रर्जन करबाक स्थिति बनैत छैक। रामेश्वर पहाड़ी अछि, मुदा बहुत दिन सँ मधेशी लोकनिक बीच बसल अछि आ ओकरासभक संग आत्मीयता बनौने अछि। मुदा, राजनीतिक षड्यन्त्रक कारणे ओकरा प्रव्रर्जित होयबाक स्थिति बनैत छैक। मुदा, ओकर मधेशी मीतकेँ ई पसिन्न नहि छैक। दुनूक बीच अन्तरंग सम्बन्ध छैक। अन्तत: ओ पहाड़ी अपन जन्मभूमिक परित्याग नहि क' पबैत अछि आ पुन: अपन वासस्थलपर घुरि अबैत अछि। छहोछित राष्ट्रीयता बीच मानवीय संवेदनाक उपस्थान एहि नाटककेँ अत्यन्त स्तरीय बना देलक अछि।

'शूलीपर ईजोत' प्रतीक नाटक थिक। एहिमे इजोत प्रतिनिधित्व करैत अछि मानवक सुखी, सम्पन्न, सुन्दर ओ आकर्षक जीवनक, अन्हार प्रतिनिधित्व करैत अछि ओहि समस्त विसंगतिक जे मानव जीवनकेँ दु:खमय बना देने अछि। शूली थीक ओ स्थान जत' विसंगति सभसँ संघर्षक क' शूली धरि पहुँचबाक आवश्यकता छैक। आइ गरीबी, बेरोजगारी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूटि, बलात्कार, चीत्कार, दहेज-प्रथा, चोरी, डकैती, अनाचार, आदि विभिन्न समस्या मानव जीवनकेँ दूभर कयने छैक। ई समस्या सब यावत दूर नहि हयत मानव नीक जकाँ जीबि नहि सकैछ। मुदा, ई समस्या सब दूर हयत कोना, ताहि हेतु हाथपर हाथ ध' बैसलासँ काज नहि चलि

सकैत छैक। एकरा लेल चाही कर्मण्यता आ साहस। ई साहस ने तँ ओहि सुविधाभोगी समाज लग छैक जे कानमे तूर ठुसि अपनामे मस्त अछि आ ने क्रान्तिदर्शी ओहन लोक लग जे समाजिक जड़ताकेँ तोड़बाक स्वांग मात्र रचैत अछि। वस्तुत: जखन मजदूर आ किसान अपन आजीविकाक प्रति वफादार रहैत संघर्षशील हयत तखने सामाजिक विद्रुपता सबपर विजय प्राप्त क' अन्हारकेँ परास्त क' सकत आ सम्पन्न जीवन जीबि सकत। नाटककार श्रमिक वर्गक प्रतिष्ठा करैत पुरुष 2 सँ कहबैत छथि हर आ पालो सीढ़ीक दुनू ठाढ़ हैत। बड़का पैना पौदान। आ पालोमे जे बान्हल अछि ताहि जौरसँ पौदान बान्हल जाइत। एना क' चहरि पहुँचि जाएब इजोत धरि। वस्तुत: इ नाटक समाजिक राजनितिक जगतमे व्याप्त विद्रूपतासँ संघर्ष करबाक आवाहन करैत अछि। आ बौधु बाजु उठल ग्राम्य जीवनमे चलैत कूटनीतिक पर्दाफाश करैत अछि। एकर नायकमे अछि बौधु जे एकटा चाहक दोकान चलबैत अछि। एहि दोकानक कारणे ओ गामक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत अछि। अयोधि चौधरी ग्राम प्रधान अछि। जकरा समयमे गाममे सुख-शान्ति व्याप्त छैक। मुदा, किछु लोककेँ ओ नहि सोहाइत छैक। एहन स्वार्थी तत्व ग्रामक प्रधानविरुद्ध षड्यन्त्र करैत अछि। ओसभ ग्राम प्रधानक एकटा मित्रकेँ ग्राम प्रधान बनबाक हेतु चुनावमे ठाढ़ करबा दैत अछि। परिणामत: दुनू मित्रक टोलमे वैमनस्य भ' जाइत छैक। मुदा, बौधु षड्यन्त्रकारी सभक पोल खोली दैत अछि आ गाम पसाही लगबासँ बचि जाइत अछि। एहि तरहें नाटकमे ग्राम्य जीवनक विद्रूपता विरुद्ध उभरैत जनचेतनाकेँ साकार कयल गेल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक पैघ एकांकी अछि **सुरज उगवासँ पहिने**। ई सात दृश्यमे विभाजित अछि। ई एक गोट रोमानी अर्थात स्वच्छन्दवादी नाटक थिक। एहिमे प्रेमक स्वच्छन्दतापर बेस बल देल गेल अछि। आ ओकर मार्गमे उपस्थित होब'बला विघ्न-बाधाक सामना अत्यन्त सहज ढंगसँ होइत देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे नायक ओ नायिका विवाहमे विघ्न-बाधा होइतो अत्यन्त हर्ष आ उल्लासक वातावरण प्रदर्शन भेल अछि।

एकर नायक अशोक पढ़ि-लिखि क' नोकरी कर' लगैत अछि, मुदा एहि हेतुएँ नोकरी छोड़ि दैत अछि जे ओकर मालिक अवैध व्यापारमे लागल रहैत छैक। आ तकरे ताकछेम करबाक लेल ओकरा नियुक्त कयने रहैत छैक। नोकरी छोड़लाक बाद ओ बेरोजगार भ' गामक संगी सभक कुसंगतिमे रह' लगैत अछि आ व्यक्तिगत रुपें स्वच्छ रहितो अपन नरेश मित्रसभक कारणे बदनाम होइत चलि जाइत अछि जाहिसँ ओकर माता पिता दु:खी रह' लगैत छथिन। बेर-बेर कोशिश कयलाक बादो अशोककेँ

नोकरी नहि भेटि पबैत छैक आ ओ अपन पेंशनधारी पिता पर आश्रित रह' लगैत अछि।

अशोकक पिता अपन सकल अचल सम्पति अशोकक पढ़ाइमे बिलहि देने छलाह। आ किछु कर्जा भ' गेल छलनि जकर कारणे गोराइत हुनका आ हुनका पत्नीक संग दुर्व्यवहारपर उतरि जाइत अछि। अशोककेँ ई नहि नीक लगैत छैक आ ओ गोराइतसँ भीड़ि जाए चाहैत अछि। ओ मूलक कतोक गुणा सुदि जोड़ि क' ओकर पैतृक घराड़ी हड़पबापर तूलल छैक। युवा वर्ग एहि महाजनी वृतिक प्रतिरोध कर' चाहैत अछि मुदा, अन्धविश्वासमे जकड़ल ओकरासभक माता-पिता अत्याचारी महाजनकेँ बेरपर ठाढ़ होयबाक कृपा करबाक कृतज्ञताक कारणसँ नहि कर'दैत छैक। मुदा, अशोककेँ अपन माता-पिताक अपमान नहि सकल जाइत अछि। ओ गोराइतक डेउढ़ी जा जुमैत अछि। मुदा, ओत' गोराइतक बेटी ओकरा गोराइतसँ भेट होब' दैत छैक। आ अपन गहना सब प्रदान क' ओकरा ऋणमुक्त भ' जाए कहैत छैक।

गोराइतक बेटी लक्ष्मीसँ अशोक गहना नहि लैत अछि। लक्ष्मी अशोककेँ अपन पिताक महाजनी वृत्तिक विरुद्ध संघर्ष करबाक हेतु संगठित प्रयास करबाक मन्त्रणा दैत छैक आ ओहिमे आवश्यकता पड़लापर अपनो सहयोग देबाक वचन दैत छैक। अंतत: अशोक लक्ष्मीसँ विवाह क' लेबाक निर्णय लैत अछि आ लक्ष्मीयो ताहि हेतु तैयार भ' जाइत अछि। दुनूक विवाहमे गोराइत विघ्न-बाधा उत्पन्न कर' चाहैत अछि मुदा कन्याक बालिग रहबाक कारणे आ ओकर स्वीकृतिसँ विवाह होयबाक कारणे आ विवाह रोकि नहि पबैत अछि। आ एहि तरहें महाजनक अन्यायी वृत्तिक अन्त होइत छैक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर ओ सजीव उपस्थापन भेल अछि, ततेक ओकरा विरुद्ध संघर्षक नहि आ ने फलदायी प्रेरक। लक्ष्मी आ अशोकक प्रेममे ततेक असहजता अछि जे वस्तु विन्यासे पर प्रश्न उठि सकैत अछि। तथापि रंगमंचीय दृष्टिसँ ई नाटक सिनेमा शैलीक साफ नाटक थिक।

मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक अन्तमुम्तिकेँ जँ मैथिली नाटकक इतिहास मानी तँ आठ सओ वर्ष पुरान अछि। नेपाल मैथिली नाटक ओ रंगमंचक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्रक रूपमे सत्रहम अठारहम शताब्दी धरि जानल जाइत रहल। मुदा, परवर्ती कालमे ओहिठामसँ मैथिली नाटकक स्रोत जेना सुखा गेल छल। मुदा, श्री भ्रमर जीक प्रयाससँ बुझना जाइत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक अपन सकल सम्भारक संग नेपालमे

पल्लवित-पुष्पित भ' रहल अछि आ युगानुरुप अन्यान्य भाषाक समकक्ष लेखनक प्रतिस्पर्धामे लागल अछि। एहि नाटक संग्रहसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे भ्रमरजी प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, नाट्यशैलीक विविध प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि खाहे ओ पारम्परिक शैली हो किंवा अत्याधुनिक।

भ्रमरजीक एकांकी नाटक सबमे अधिकांश वस्तु विन्यास प्रासंगिक अछि। एहि सबमे वर्तमान जीवनक विभिन्न समस्या दिस लोकक ध्यानाकृष्ट करबाक सामर्थ्य छैक। ई सबटा रंगमंचीय दृष्टि सफल एकांकी अछि। नाटककार रंग प्रभावकेँ उत्कर्ष धरि पहुँचएबाक हेतु रंगभाषाक प्रयोग कयलनि अछि, जे हुनक निर्देशकीयताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक प्रयोग कयलनि अछि जे हुनक निर्देशकियताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक व्यवहारसँ एकांकीमे कतहु असहजता ओ भारीपन बुझना जाइत छैक। लोकानुरंजनक अपेक्षा गम्भीर वैचारिक अभिव्यक्ति प्रदान क' भ्रमरजीक एकांकी सब लोक जीवनक समस्त नकारात्मक पक्षक विद्रूपताकेँ उद्घाटित करबामे सफल सिद्ध अछि तथा नव निर्माणक पक्षघाती अछि। अवश्ये हिनक ई साहित्य समाज आ देशक हेतु कल्याणकारी अछि जाहिमे सस्त लोकप्रियता आ बाजारुपनक अभाव तँ अछिए, प्रचार आ उपदेशकक थोपल बौद्धिकता नहि अपितु कलात्मक लोकोपदेश अछि। समग्रतामे हिनक संग्रह, समाज ओ राष्ट्रक प्रति हिनक प्रतिबद्ध लेखनक विशिष्ट नमूना थिक।

जीवन-मूल्यक पक्षमे ठाढ़ 'भ्रमर'क गजल

अजीत आजाद

अनेकानेक लांछनाकेँ सहैत मैथिली गजल अपन आगूक बाटपर अग्रसर अछि। किछु वर्ष पूर्व धरि मैथिली गजलक प्रति अधिसंख्यक धारणा अन्हरजालीसँ ग्रसित छल, ताहि अन्हरजालीसँ अपनाकेँ, अपना बुते बाहर अनैत किछु बेसिये पकठोस भेल अछि मैथिली गजल। एहि सन्दर्भमे नेपालीय मिथिला आ भारतीय मिथिला, दुनू एक-दोसराक परिपूरक अछि। साहित्य सदैवसँ भौगोलिक आ राजनीतिक सीमाक अतिक्रमण करैत आयल अछि। ताहि अर्थमे नेपालीय अथवा भारतीय मैथिली गजल कहबाक पक्षधर हम नहि छी। तखन इहो तथ्य अंशत: अथवा पूर्णत: सत्य अछि जे हमरा लोकनि सीमा-रेखाकेँ ध्यानमे रखैत एकटा निश्चित परिपाटी विकसित कयल अछि। एहिसँ मिथिला-मैथिलीक नुकसाने भेल अछि, लाभ नहि।

भाषा आ विधा एक रहितो हमरा लोकनिक दृष्टिकोण एकांगी रहल अछि। एहि पर गंभीरतापूर्वक विचार करबाक खगता अछि। बर्लिनक देबाल टूटब आ सुगौली सन्धिकेँ तोड़ब, दुनू अलग-अलग मामिला थिक। एहि मामिलाकेँ बुझय पड़त। एकर अछैत, सुगौली सन्धि टूटय अथवा नहि टूटय, साहित्यिक-सांस्कृतिक एकताक लेल अनिवार्य रूपसँ हमरा लोकनिकेँ प्रयास करय पड़त। एहि एकताक प्रयासक मार्गक एकटा प्रमुख अवरोध अछि—एक भाषा मैथिलीक रहैत नेपालीय अथवा भारतीय मैथिलीक रूपमे विभाजन-रेखा खींचब। वरिष्ठ कवि-कथाकार-नाटककार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल-संग्रह '**अन्हरियाक चान**' पर विचार करैत प्रथमत: यैह विचार मोनमे आयल अछि जे ई संग्रह मैथिलीक गजल-संग्रह थिक ने कि नेपालीय मैथिलीक गजल-संग्रह। एहि संग्रह पर विचार करैत हमरा मैथिलीक अनेक गजलगो मोन पड़ि रहलाह अछि। प्रथमत: कलानन्द भट आ राजेन्द्र विमल।

मैथिली गजलकेँ अपन पयर पर तनिक' ठाढ़ करबामे हिनका लोकनिक महत्त्वपूर्ण योगदान छनि। कलानन्द भट्ट जतय विचारक गुम्म सँ चकबिदोर लगबैत

छथि ओतहि राजेन्द्र विमल मोनक तन्नुक अनुभवकेँ लयकारीक संग प्रस्तुत करैत विस्मित करैत छथि। एहीठाम धीरेन्द्र प्रेमर्षि विडम्बनापूर्ण स्थितिसँ ढाही लेबाक साहस देखबैत छथि। जखनकि रोशन जनकपुरी सोझे-सोझ आक्रमणक मुद्रामे ठाढ़ भेटैत छथि। रविन्द्र नाथ ठाकुर जीवन-जगतक पथकार उथल-पुथल आ मनुष्यताक विचलनकेँ अपन विषय बनबैत छथि। सोमदेव, विभूति आनन्द, तारानन्द वियोगी, रमेश आदि यद्यपि आब गजलकेँ अपन पूर्ण समय नहि द' पाबि रहल छथि, किन्तु हिनका लोकनिक रचल गजल सार्थक विपक्षक भूमिकामे देखाइत अछि। अरविन्द ठाकुर गजलक क्षेत्रमे विलम्बसँ अयलाक अछैत अपन जोरदार उपस्थिति दर्ज करौलनि अछि। गजल कहबाक हिनक ढंग अनुकरणीय अछि। सुरेन्द्र नाथक गजल शिल्पक आग्रही नहि रहितो मार्मिक बात उठबैत अछि जखन कि राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' समयक संत्रासकेँ अपन वर्ण्य-विषय बनबैत आशावादी दृष्टिकोण सोझाँ रखैत छथि। ई प्रसन्नताक विषय अछि जे मैथिलीमे एखन अधिसंख्य नवतुरिया गजलमे एहि संग सक्रिय छथि। एहि मे आशीष अनचिन्हार, चन्दन कुमार झा, रुपेश त्योंथ, अमित मिश्रा, दीप नारायण विद्यार्थी, कुन्दन कुमार कर्ण, विंदेश्वर ठाकुर आदि प्रमुख छथि। किछु वरिष्ठ गजलगो जे लगातार गजल लिखि रहलाह अछि, एहिमे रामेश्वर पांडेय 'निशांत', सतीश साजन, कमल मोहन चुन्नू, प्रीतम निषाद, विनय विश्वबन्धु, हरिश्चन्द्र हरित, अशोक कुमार मेहता अग्रगण्य छथि।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क गजल संग्रह '**अन्हरियाक चान**' हमरा अनेक अर्थमे प्रभावित करैत अछि। अपना आपकेँ गजलक बुनियादी ज्ञानसँ अनभिज्ञ मानैत भ्रमर जी अपन मोनक बातकेँ सोझ-साझ रखबाक आग्रही छथि। एहि सन्दर्भमे ओ संग्रहक भूमिकामे अत्यन्त सहजतासँ गछलनि अछि जे गजलक आदि-इत्यादि मे पड़बाक अपेक्षा ओ जे देखलनि अछि से लिखलनि अछि। मोन मे जे भाव अयलनि, जाहि रूप मे अयलनि तकरा ओ लिखि बैसलाह। हुनक ई स्वीकारोक्ति हुनका अनेक ठाम कठघरामे ठाढ़ होयबासँ बचबैत छनि किन्तु एतय हमर अभिष्ठ हुनका कठघरामे ठाढ़ करब अछिये नहि। एकर दू गोट प्रमुख कारण अछि। पहिल कारण ई अछि जे, गजल अथवा अन्य विधा सभ सेहो व्याकरणक छान-पगहा तोड़िक' बहुत आगाँ धरि चलि आयल अछि। स्वयं गजल मे सेहो बुहत तोड़-जोड़ भेल अछि आ ई प्रक्रिया एखनहुँ चलिये रहल अछि। फारसी सँ अरबी, अरबी सँ उर्दू, उर्दू सँ हिन्दी आ हिन्दी सँ मैथिली धरिक यात्रा मे गजल अनेक पड़ाव पार कयलक अछि। राज-दरबार सँ दरगाह भाया कोठा तक अबैत-अबैत ई जन सामान्यक ठोर पर चढ़ैत चलि

गेल अछि।

एहि क्रम मे कहियो कथ्य हावी रहल तँ कहियो विचार। एक समय एहनो छल जहिया शब्द केवल लयकारि मात्र उनटैत-पुनटैत रहल। किन्तु ई स्थिति बेसी दिन नहि रहल। लगले दू टा धारा गजलमे अपन पहिचान बना लेलक—इश्किया गजल आ इन्कलाबी गजल। एखनो मोटा-मोटी यैह दू गोट धारा गजलक प्रतिनिधित्व क' रहल अछि। मोटा-मोटी शब्द एहि लेल खर्च कयल जे एहि दुनू धाराक बीच किछु छारनि सभ सेहो छैक जकरा अवडेरल नहि जा सकैत अछि। मोनक छटपटाहटि, घुटन, अवसाद, विचलन, विडम्बना, संत्रास, विकलता, औनाहटि, पराजय-बोध, किंकर्तव्यविमूढ़ता आदि यैह लक्षण-प्रकरण थिक जाहि पर मारिते रास गजल सभ आयल अछि, आबि रहल अछि। '**अन्हरियाक चान**' मे यैह सभ मनोभाव व्यक्त करैत अछि। एहि भाव सभक अभिव्यक्तिक लेल व्याकरणक बन्हेजक मांग करब, अतिश्योक्ति होयत। ई दीगर अछि जे अनचोके मे सही, मुदा भ्रमरजीक बहुत रास गजल एहि बन्हेजक प्रतिपूर्ति करैत अछि। शरीफ आ काफियाक मामिला मे सेहो ओ अनेक ठाम दुरुस्त छथि। मतला उठेबाक लूरि छनि तँ मकता पर छाप मारबाक अवगति सेहो छनि। शेर कहबाक क्रम मे हर सेहो बेसी ठाम भरिआइत नहि छनि। ई सभ एहि लेल कहल अछि जे कि ओ गछैत छथि जे हुनका गजलक व्याकरण नहि बुझल-गमल छनि। वास्तविकता ई अछि जे हुनक अन्तस मे गजल पूर्ण स्वाभाविकताक संग बास करैत छनि तेँ अपेक्षित ज्ञानक अछैत ओ सहजताक संग गजलक अनेक रास शर्त केँ पूरा करैत चलि जाइत छथि दोसर प्रमुख कारण ई अछि जे ओहि गजलक औचित्यमे प्रमुखतासँ शामिल भ' गेल अछि प्रतिकार।

भ्रमरक गजलमे प्रतिकार गहे-गहे भरल अछि। हिनक गजल कलावादक पक्षमे नहि भ' क' जनवादक पक्षमे अछि। यैह जनवादी पक्ष हमरा हिनका प्रति आस्था जगबैत अछि। गजलक एकटा प्रमुख पक्ष थिक आसक्ति। एहि आसक्तिक केन्द्रमे बहुत-बहुत दिन धरि सौन्दर्य काबिज रहल अछि किन्तु आब सौन्दर्यक स्थान पर जीवन-बोध आबि तुलायल अछि। इन्कलाबी गजल जीवन-मूल्यक गजलक रूप मे अंगेठी-मोड़ लेबय लागल अछि। एहि संग्रहक अनेक गजल जीवन-मूल्यक बात करैत अछि। एहि बात सभमे तेवर छैक, विद्रोह छैक किन्तु अनावश्यक नारेबाजी नहि छैक। प्रतिकारब एकटा मुद्रा छैक किन्तु निर्ममता नहि छैक। वैचारिक आग्रहक संग-संग एकटा संगोर छैक, आह्वान छैक, कतोक ठाम तँ केवल अनुनय मात्र छैक। एहि अनुनयमे गजलकारक अपन पक्ष सेहो छनि।

हुनक एकटा गजलक एहि मकताक संग हम अपन बातकेँ समपुष्ट करय चाहब—

मोनक भीतरमे बाँचल हो कोनो विषवृक्ष,
काटि फेकबा ले हाथ एक्के होयत मीत।

एकटा आर मकता देखय जाय—

जीवन-पथ कठिन अछि, नीक-बेजाय
अबिते समुद्र जकाँ हृदय ने कियै बनैलिऐ अहाँ।

एहि मकता पर के नहि फिदा भ' सकैछ—

मुँहक फुलझड़ी किए कठघरा मे बन्न भेलै,
पोर-पोर मुस्कीक बजार लेने ठाढ़ छी।

मैथिली गजलमे याद रखबा योग्य शेर सभ बुहलांशमे नहि अछि। एहन विपन्न सन स्थितिमे भ्रमरजीक किछु शेर अवश्ये ध्यान आकृष्ट करैत अछि। यथा—

प्रकृतिक दोष कोन, अवसर छल देने अमानुष बनि मर्म गहलिऐ ने हम।

✦✦✦✦

निर्मोहीक चुप्पी जेना कारी अन्हरिया

✦✦✦✦

बितल क्षण जिनगी केर घुरैए नहि

✦✦✦✦

रत्नक व्यापारी सँ भरल ई दुनियाँ किदहु

✦✦✦✦

कोयलाक भाओ मे एत' बिकाइत अछि हीरा।

✦✦✦✦

ककरा कहबै, दोष लगाबी हम ककरा, स्वयं केर बाघसँ नित दिन लड़ैत मन।

✦✦✦✦

संग्रहमे किछु प्रेम-भावसँ परिपूरित गजल सभ सेहो अछि जाहिमे भ्रमरक प्रेम-उछाह देखल जा सकैछ किछु तँ एहन गजल सभमे भ्रमर बहुत मोलायम नहि भ' सकलाह अछि। प्रेम-गजलक अनिवार्य तत्व थिक मोनक आवेगमे कमनीय तीव्रता। एकर अभाव देखाइत अछि किन्तु ओतहि स्थितिक जटिलताकेँ उद्घाटित करबा काल भ्रमरक विचार-वैभव आ ठाँहि-पठाँहि कहबाक हुनर चरम पर भेटैत अछि। मैथिली गजलगो मायानन्द मिश्र, मार्कण्डेय प्रवासी, गंगेश गुंजन, बुद्धिनाथ मिश्र आदिक

गजलक समानान्तर अपन गजल यात्रा गतिशील रखबा लेल भ्रमरजी प्रयत्नशील बुझना जाइत छथि।

मैथिली गजलक एकटा प्रमुख गुण एकर गीतात्मकता मानल जाइत रहल अछि किन्तु यैह गुण एकर अवगुणक रूपमे सेहो सोझाँ अबैत अछि। मायानन्द मिश्र प्राय: एहने सन स्थिति मे गजलक लेल गीतल शब्दक व्यवहार कयलनि। गीत आ गजलक मिलल-जुलल भावबला रचना भेल गीतल किन्तु बिलट पासवान 'विहंगम' प्रभृति किछु रचनाकार छोड़ि गतिलक पक्षमे कहियो नहि ठाढ़ भेलाह। भ्रमरजीक रचना सेहो गीतलक प्रतिकार करैत गजलक पक्षमे ठाढ़ अछि।

लयबद्धता गजलक एकटा प्रभावी तत्व थिक किन्तु एकर अढ़मे गजलक तन्यताक हत्या करब सर्वथा असाहित्यिक वृति थिक। आह-काल्हि किछु गजलगो एहि वृतिमे अपनाकेँ पूर्णत: संलग्न रखने छथि। फेसबुक पर तँ अनेक नवतुरिया गजलकेँ गीतल बनेबामे अपस्याँत छथि। तखल्लुस (नाम जोड़बाक प्रवृति)क चलनसारि बढ़ल अछि। किछु संग्रह एहनो अछि जाहिमे लगभग सभटा गजलमे शायर अपन नाम जोड़ने छथि। अपन नामक प्रति एहन आग्रह कतेको ठाम दुराग्रह सन लागय लगैत अछि। भ्रमरजी अपनाकेँ एहन दुराग्रहसँ बचौलनि अछि। मकतामे तखल्लुस अयबाक चाही किन्तु एकरा लेल अपेक्षित जमीन सेहो तैयार रहक चाही। मैथिली गजलक विकास-यात्रामे **अन्हरियाक चान** अपन सार्थक हस्तक्षेप करैत बुझना जाइत अछि। भ्रमरजीसँ किछु आर गजल संग्रहक अपेक्षा अछि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा' : प्रभाव आ प्रतिक्रिया

डा. राजेन्द्र विमल

कार्य-कारण-शृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवने-जगतमे अनुभव कयल यथार्थकेँ कल्पनासँ रंगिकए रसात्मक विचारोत्तेजक रूपमे प्रस्तुत कयल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास '**घरमुँहा**' नेपालक मधेस-आन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलताक घोर यथार्थपरक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शन संग मर्मस्पर्शी इति पबैत अछि।

आन्दोलन जखन एक गोट ऐतिहासिक ऊँचाइ ल' रहल होइत अछि तँ ओहिमे आन्दोलनकारीक छद्म श्वेत भेष द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खोल ओढ़बामे सफल गुन्डाक सरदार कामेश्वर-सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सचक निरन्तर प्रवेश होबए लगैत छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर-धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विराट जनक्रान्तिमे शहादत दैत युवक सभक प्रत्येक दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ ओम्हर ई लुटेरा-तत्व पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि-आतंक पसारि रहल अछि। आतंक भरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइतो धोती-कुर्ताधारी मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डरे दुबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टरो साहेबक होइ छन्हि जे—अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जकाँ जुलूसमे जा जोर-जोरसँ नारा लगा आन्दोलनकेँ समर्थन दिऐक, मुदा सोचै छथि, ''जे उन्माद एखन

युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुहारकेँ पचा सकत ?'' अदंकसँ भरल मास्टर साहेबकेँ अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकेँ होइत छन्हि, मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरें अपन मधेश-आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए दैत छथि जे कतहु आन्दोलन कमजोर ने पड़ि जाइक। 1 जून 2007, 25 जुलाइ 2007, 28 जुलाइ 2007, 5 अगस्त 2007 क' वार्ता असफल भेलाक बाद 30 अगस्त 2007क' 26 बूँदापर सहमति होयब, मुदा कार्यान्वयनमे आना-कानीसँ आन्दोलनक फेर उग्र लपट ऊठब—ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, जे उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर रमेश उपाध्यायक विपत्तिक तमिस्रा तखन आओर सघन भ' जाइत छन्हि जखन हुनका पता चलैत छन्हि जे हुनकर बेटी किरण दछिनबरिया टोलक कामेश्वरक बेटा राजीवसँ प्रेम करैत अछि। ताबत ई ककरो ने बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जायबला व्यक्तित्व कामेश्वर, गाममे व्याप्त हत्या, अपहरण, चन्दा-आतंक आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महाविपत्तिक समुद्रमे उबडुब कैए रहल छथि कि बेटी किरणक अपहरण भए जाइ छन्हि आ दस लाख टाका फिरौतीक लेल फोनसँ दिन-राति धमकी आबए लगैत छन्हि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए विस्थापित होयबाक लेल बाध्य छथि ओमहर कामेश्वरक एकलौता बेटा राजीव अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किरणक मुक्तिक लेल दबाब बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ई जानि ग्लानि होइत छैक जे ई उएह किरण थिक जकरा पुतहु बना घर अनबाक मोन हुनक परिवार बना चुकल अछि। बसमे चढ़ि चुकल मास्टर रमेश उपाध्यायक ओकर परम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबयबला पीढ़ी-दर-पीढ़ी धरि सुनयबामे उत्सुक छथि। तेँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्ठा, मृत्तिका, सन्ठी, स'न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्त मूर्ति तैयारक' सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक रागमयताक रंग ढेउरल गेल अछि जे हृदयहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्त्वक दाबेदार एहू कारणे अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।

रमेश उपाध्याय, जगमोहन, कामेश्वर, राजीव, किरण, बन्ठा, लुखिया आदि सभ वर्गीय प्रतिनिधि पात्र अछि। सम्वादमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषा-शैलीक नाटकीयता आ चित्रात्मकताक कारण उपन्यास आदिसँ अन्त भरि सिनेमाक

रील जेकाँ चलैत अछि, जे पाठककेँ आरम्भसँ अन्त धरि बन्हने रहैत अछि। पहाड़ी-मधेसीक एकता संवर्द्धनक उद्देश्यसँ प्रणित एहि उपन्यासक यात्रा उबड़-खाबड़, पहाड़-जंगल, खुरपेड़ियाक जटिल यात्रा नहि, सोझ-सपाट मैदानक सरल-सरस यात्रा थिक जे सरसराकए अपन गन्तव्य धरि पहुँचैत अछि। तेँ उपन्यासक संरचनामे पेंच-पाँच आ ओझराहटि नहि अछि। मधेस-मिथिलाक आम लोकक भाषामे प्रयुक्त 'लल्हका', 'लभका', 'बढ़का', 'खुर्सी' आदि शब्दक सचेत उपयोग उपन्यासक भाषाकेँ सहज स्वाभाविकता आ अभिनवता प्रदान करैत अछि। आख्यानकार श्री 'भ्रमर'क ई सद्य: जात कृति नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपलब्धि थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

('घरमुँहा' उपन्यासक भूमिकासँ)

चीनक प्राचीरकेँ टपैत मैथिलीक यात्रा साहित्य

डा. रमानन्द झा 'रमण'

मैथिलीमे यात्रा-साहित्यक श्रीगणेश 1910 ई. मे भेल। चेतनाथ झा लिखित '**श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा**' मैथिलीक पहिल यात्रा साहित्य (पोथी) थिक। ओ 1910 ई. मे दरभंगासँ पुरी गेल छलाह आ मासाभ्यन्तरहि पोथी छपि गेल छल (सन्दर्भ : 'मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य', सम्पादक : डा. रमानन्द झा 'रमण', 2009)। निश्चिते लोक पहिनेसँ यात्रा करैत रहल होयत, किन्तु मैथिलीमे उपलब्ध नहि अछि। जखन मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेलैक, यात्रा वर्णनक लेखन एवं प्रकाशन होअए लागल। पहिने यात्राक उद्देश्य देश-दर्शन वा तीर्थाटन आ वाणिज्य-व्यवसाय छल। बौद्धकालमे धर्मप्रचार जोड़ा गेल। सम्राट अशोकक राज्यकालमे बौद्धधर्मक प्रचार-प्रचारक हेतु बेसी यात्रा कयल गेल छल। भारतक सुदूर देशसभमे बौद्धधर्मक एहि व्यापक रूपेँ प्रचार बिना यात्राक सम्भव नहि भेल होयत। कालान्तरमे समुद्र यात्रा वर्जित भए गेलैक। तकर कारण छल जे व्यवसायी लोकनि अपना संग धन-सम्पतिए टा नहि अनैत छलाह, देश-देशक धर्म, संस्कृति एवं आहार-व्यवहार सेहो आनए लागल छलाह। एहिसँ भारतक भाषा-संस्कृति एवं आहार-व्यवहारपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ए लागल छल। समाजकेँ धर्मपर किंचितो आघात स्वीकार नहि छलैक ;

(Dr. Dinesh Chandra Sen, The Folk Literature of Bengal, 1920, P.No.62 - "And, if they returned to India, they came with strange outlandish manners imitating the ways of foreigners, and fell upon their quiet homes like thunder-bolts destroying the Hindu ideas of domestic life. The Brahminical leaders, in the absence of any political power to control the situation, prohibited sea-voyages and enacted social laws for outcasting those who would be guilty of infringing them.") फल भेलैक जे समुद्रयात्रा मिथिलामे वर्जित कए देल गेल। ई बन्हेज 1930

ई. धरि छल।

प्रशासनिक एकाइक दृष्टिसँ यात्रा दू प्रकार अछि—स्वदेश यात्रा एवं विदेश यात्रा। स्वदेश यात्रा भेल अपन देशमे कयल गेल यात्रा तथा विदेशक कयल गेल यात्रा, विदेश यात्रा भेल। ओहिना यात्राक साधनक दृष्टिसँ यात्रा तीन प्रकारक अछि—जलयात्रा, आकाशयात्रा एवं स्थलयात्रा। कतेको एहन यात्रा होइत अछि, जाहिमे यात्री यात्राक सभ साधनक उपयोग करैत छथि। यात्रा साहित्यक निर्माण वास्तविक अनुभवक आधारपर होइत अछि।

अर्थात् आवश्यक जे यात्रा साहित्यक लेखक स्वयं यात्रा कयने होथि। यात्रा वर्णनक लेखन यात्राक समाप्तिपर होइत अछि। तेँ एकर मूलमे संस्मरणत्मकता अवश्य रहैत छैक। ई तत्त्व एकर विशेषता थिकैक। यात्राक विशेषता यात्राक प्रयोजनपर सेहो निर्भर करैत छैक। शिल्पक आधारपर यात्राक तीन कोटि अछि—विवरणात्मक, संस्मरणात्मक एवं कथात्मक। विवरणात्मक यात्रा साहित्यमे यात्राक विवरण विस्तारपूर्वक रहैत अछि।

देखल स्थानक इतिहास, भूगोल, पौराणिक माहात्म्य, प्राकृतिक सुषमाक चित्रण, ओहि बीचमे जीबैत लोकक उठब-बैसब, बात-विचार आदिक वर्णन विस्तारसँ रहैत अछि। एहि कोटिक यात्रा साहित्य विशेष सूचनात्मक होइत अछि। एहिसँ पाठकक ज्ञानक वृद्धि होइत छैक। संस्मरणात्मक यात्रा साहित्यमे लेखकक आत्मनिक्षेपक प्रधानता रहैत अछि। ओ भोक्ता नहि, वाचक सन प्रतीत होइत छथि। 'हम एना कयलहुँ, हमर परिवारकेँ एना भेलैक' एहि प्रकारक वर्णन अरुचिकर भए जाइत अछि।

कथात्मक यात्रा साहित्य रोचक होइत अछि। भावात्मक स्तरपर पाठक केँ ओ जोड़ैत जाइत छैक। यात्राक क्रममे प्राप्त अनुभव आ' भौगोलिक वा ऐतिहासिक यथार्थकेँ एहि प्रकारें प्रस्तुत कयल जाइछ, जाहिसँ मानवीय सत्यक साक्षात्कार पाठक करैत रहथि। एहि सभ वर्गीकरणक अछैतो लेखकक व्यतिव आ रुचिक स्पष्ट छाप यात्रा साहित्यमे रहैत अछि। यात्राक उद्देश्य भिन्न-भिन्न होइछ, तेँ उद्देश्यक प्रभावसँ यात्रा साहित्य मुक्त नहि भए सकैत अछि।

आवागमनक साधन एवं सुविधामे विस्तारसँ यात्रीक संख्यामे पर्याप्त वृद्धि भेल अछि। मुदा, ओहि अनुपातमे यात्रा साहित्यक भंडार नहि भरि रहल अछि।

तकर कारण छैक यात्रीमे भाषा-चेतना एवं सर्जनात्मकताक अभाव। जखन सर्जनात्मक प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यानुरागी व्यक्ति यात्रा करैत छथि आ अपन अनुभवकेँ

लिपिबद्ध कए लैत छथि तखनहि यात्रा-साहित्य अस्तित्वमे अबैत अछि। सम्पूर्ण मैथिली यात्रा साहित्यक लेखा-जोखा कयलापर स्पष्ट अछि जे मैथिलीक यात्रा साहित्यक भंडार पुष्ट नहि अछि। आ जँ नेपालमे लिखित मैथिली यात्रा साहित्यपर दृष्टिपात करी तँ ओ आओरो क्षीणकाय अछि, से दुनू कोटिक यात्रा साहित्य। डा. रेवतीरमण लाल लिखित **'हमर विदेश भ्रमण'** (1988 ई.) यात्रा साहित्यक पहिल पोथी थिक। मैथिलीक सम्पूर्ण विदेश यात्रा-साहित्य आंगुरपर गनल अछि। ओहिमे अछि **'प्रवास जीवन'** (डा. सुभद्र, 1950 ई.), **'सात समुद्र पार'** (डा. जगदीशचन्द्र झा, 1969 ई.), **'विदेश भ्रमण'** (उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', 1978 ई.), **'श्यामली'** (नगेन्द्र कुमार, 1980 ई.), **'यात्रा प्रकरण शतक'** (डा. सुभद्र झा), **'पृथ्वी परिक्रमा'**(डा. चेतकर झा,1992 ई.), **'विश्वदर्शन'** (मुरारी मधुसूदन ठाकुर, 2005 ई), **'परदेश'** (भाग्यनारायण झा, 2007 ई.), **'हमर इंगलैंड यात्रा'** (महेन्द्रनाथ झा, 2007 ई) तथा **'आँखिमे बसल'** (अशोक, 2013)।

जेना, चेतनाथ झा लिखित **'श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा'** मैथिलीक यात्रा साहित्यक पहिल पोथी थिक, ओहिना कुमार गंगानन्द सिंह लिखित **श्रीमान् महाराजाधिराजक सग मैथिलीक पहिल विदेश यात्रा** साहित्यक कोटिमे अबैत अछि। कुमार गंगानन्द सिंह,18 अक्टूबर 1930 केँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक संग जल जहाजसँ बिलेंतक यात्रा प्रारम्भ कयने छलाह। ई यात्रा वर्णन **'मिथिला मिहिर'** (1931 ई.) मे छपल अछि। किन्तु अद्यावधि असंकलित अछि।

मैथिलीमे चीन यात्राक साहित्य नहि अछि। अनेक चीनी यात्री भारत आयल छथि। ओहि यात्री सभमे ह्वेनसांग, फाहियानक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। हिनका लोकनिक यात्रा वर्णन तत्कालीन भारतक इतिहासक एक प्रामाणिक स्रोतक रूपमे मान्य अछि। ओहिना कर्णाटवंशी राजा रामसिंहक समयमे सेहो एक चीनी यात्रीक आगमनक उल्लेख अछि। भारतक कोनो यात्री चीन गेल छलाह, तकर उल्लेख नहि अछि, किन्तु बिना यात्रा कयने बौद्धधर्मक एतेक व्यापक प्रचार भेल होयत, से असम्भव। मिथिलामे जेना बौद्धधर्मक विरोध होअए लागल छल, एहिसँ एहि बातक कमे सम्भावना छैक जे कोनो सनातनी मैथिल बौद्ध चीनक यात्रा कयने होयताह। उपलब्ध सूचनाक अनुसार डा. अमरनाथ झा यूनेस्कोकक तत्त्वावधानमे 1950 मे चीन गेल भारतीय प्रतिनिधि मण्डलक नेतृत्व कयने छलाह। एकर अतिरिक्त एहि प्रसंग आर कोनो अभिलेख सुलभ नहि अछि। चीनक यात्रासँ सम्बन्धित यात्राक वर्णनक लेल वर्तमान शताब्दीक गत पाँच वर्ष बेस उर्वर अछि। एहि अवधिमे मैथिलीक दू

कृति रचनाकार चीनक यात्रा कए अपन यात्रावर्णन लिखल अछि। पहिल छथि प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'। ई पहिल बेर 2009 मे साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि मण्डलक एक सदस्यक रूपमे चीनक यात्रा कयने छलाह तथा दोसर बेर सितम्बर 2013 मे व्याख्यान देबाक हेतु चीनमे आमन्त्रित छलाह। हिनक चीन यात्राक वर्णन **'हमर चीनकेँ चिन्हब'** (**मिथिला दर्शन**, नवम्बर-दिसम्बर, 2013) अछि। दोसर अछि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सितम्बर, 2013 मे **प्रज्ञा प्रतिष्ठानक एक प्रतिनिधिक रूपमे चीनक यात्रा**। ई तीनू यात्रा सांस्कृतिक यात्रा थिक।

शिल्पक दृष्टिसँ यात्रा साहित्यक हम तीन खल कयल अछि। एहि दृष्टिसँ विचार कयलापर रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क चीनक यात्राक वर्णन विवरणात्मक कोटिमे अछि। एहिमे चीनक ऐतिहासिक स्थल सबहक वर्णन विस्तारसँ अछि। चीन यात्राक सौभाग्यसँ वंचित एवं चीनक सांस्कृतिक सम्पदाक जिज्ञासुक लेल ई परम उपयोगी वर्णन अछि। एहिमे लेखकक पुरातात्त्विक दृष्टि अछि, किन्तु चीनक भाषा-साहित्यक सुगन्धि नहि भेटैत अछि। सम्भव थिक जे एहि प्रायोजित यात्रामे साहित्यक स्थान नहि रहल हो। प्रो. नचिकेताक यात्रा वर्णनमे चीनक भाषा-साहित्यक सौन्दर्य महमह करैत अछि। प्रो. नचिकेता लिखने छथि जे 1984 ई.क पूर्व चीनमे यातायात सुबिधगर नहि छल। किन्तु सम्प्रति से स्थिति नहि अछि। कापड़िक वर्णनसँ सेहो ई बातक पुष्टि होइत अछि। गत दू दशकमे चीनमे भेल विकासक ई द्योतक थिक। चीनक क्रान्ति राजतन्त्र आ राजा द्वारा कयल जाइत शोषणक विरोधमे भेल छल। बादमे सांस्कृतिक क्रान्ति सेहो भेलैक। मुदा, ओहि राजा सबहक प्रसाद आदिकेँ ओ लोकनि नष्ट नहि कयलनि। ओहि सबहक संरक्षण करैत पर्यटन-स्थलक रूपमे विकास भेल अछि। सम्प्रति ओ स्थल सब विदेशी मुद्रा अर्जनक स्रोत सिद्ध भए रहल अछि। ई एहि बातक प्रमाण थिक जे एक महाशक्तिक रूपमे चीनक उदयक पृष्ठभूमिमे ओकर संस्कृति छैक। आ ओहि संस्कृतिक संरक्षणक प्रति ओ पूर्ण साकांक्ष अछि। अपन इतिहास एवं संस्कृतिक प्रति चीनी जनताक ई दृष्टि अनुकरणीय अछि।

हमरा विश्वास अछि, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क चीन यात्राक वर्णन चीनक प्रसंग पाठकक अनेक भ्रमकेँ तोड़त आ मैथिली यात्रा साहित्यमे एक अभावक पूर्ति करत।

(02 जनबरी, 2014)

सम्पादन : पत्र-पत्रिका

अपन इतिहास अपने बनबैत 'आँगन'

चन्द्रेश

नेपाल राजकीय प्रतिष्ठानक तत्वावधान आ प्रधान सम्पादक श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पादकत्वमे '**आँगन**'क वर्ष-1, अंक-1, अखाढ़ 2062 प्रकाशित भेल तँ राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय दुनू स्तरपर मिथिला-मैथिली जगतमे हर्षक व्याप्ति लहरि दौड़ि गेल। एहि अंकक कार्यकारी सम्पादक छथि श्री धर्मेन्द्र विह्वल। मैथिली भाषाक वार्षिक पत्रिका **आँगन**-1क आवरण पृष्ठ पर मिथिला चित्र सहजहि आकर्षित क' लैत अछि। प्रो. डा. वासुदेव त्रिपाठी, उपकुलपतिक अभिव्यक्ति जे '**आँगन को माध्यम बाट एक थप नयाँ मैथिली अध्याय को पनि प्रारम्भ भएको छ।**' 'सम्पादकीय'मे भ्रमर अपन बेबाक विचार प्रकट करैत पत्रिका प्रकाशनक व्यथा-कथा सुनबैत स्पष्ट कयलनि अछि जे 'बुन्ने बुन्न जेना समुद्रक निर्माण होइत अछि, तहिना पत्रिकामे प्रकाशित रचना सभ आब'बला समयमे कोनो ग्रन्थक आकार नहि लेत से कोना कहल जा सकैछ।'

एहि अंक-1 मे भाषा सम्बन्धी तीन गोट आलेख अछि। डा. रामावतार यादव जतय विभिन्न रचनाकारक किछु रचना उद्धृत क' नवमसँ एक्कैसम सदी धरिक उल्लेख क' स्पष्ट कयलनि अछि जे 'मैथिली भाषा-साहित्यक वर्तमान युग निर्धारण पद्धति अनिश्चित, अतार्किक एवं बलधकेल अछि (23)।' डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव- 'नेपालक भाषिक स्थिति'क सम्बन्धमे विचार व्यक्त कयलनि अछि तँ डा. सुनील कुमार झा 'मैथिली भाषाक विकासक गति बढ़ब'बला भावी दिशा आ तकर आधार तत्व' पर प्रकाश देलनि अछि। ई तीनू निबन्ध कमबेस सलाहे पर आधारित अछि जाहिमे उद्धरणक लादल बोझ कनेक बेसिए ओजनकेँ बढ़बैत अछि। तारानन्द मिश्र '**नेपाल उपत्यकाक मैथिली हस्तलिखित ग्रन्थक विशेषता**'मे सेहो अनके बात कहलनि अछि तेँ मौलिकताक अभाव दिग्दर्शित होइत अछि। हरिकान्त लाल दास

'**सप्तरी जिलाक पुरातात्विक स्थल एकागढ़**' पर उद्धरण विशेष दैतो छान्हि-बान्हिक' अपन बातकेँ रखलनि अछि। डा. रेवतीरमण लालक '**मिथिलामे पावस**' संक्षिप्त अछि जे छात्रोपयोगी थिक। नमो नारायण झाक '**डोम सभक सांस्कृतिक जीवन**'के छोट-छीन झलकी प्रस्तुत कयलनि अछि। डा. रामदयाल 'राकेश'क '**हमर जापान भ्रमण**' देशाटनक अन्तर्गत अछि। एहि यात्रा-वृतान्तमे लेखकीय उद्‌गार अबस्से जापानक किछु अंशकेँ झलकबैत अछि। गोपाल झा '**मिथिलाक्षरक प्रयोग : विगत, वर्तमान आ भविष्य**'मे बंगला आ उर्दूभाषीक प्रयत्नक अनुसरण करबा पर जोर देलनि अछि। बदरी नारायण वर्मा '**दू चारि शब्द मैथिली लिपिक मादे**'मे लिपिक किछु विशेषता, एकर उपयोगिता की? पर प्रकाश दैत अस्मिताकेँ जोगयबा पर बल देल अछि। कालीकान्त झा 'तृषित' 'प्राचीन मिथिलाक अनुपम धन ज्योतिष एवं वास्तु' विषयक आलेख प्रस्तुत कयलनि अछि जे ज्योतिष आ वास्तुशास्त्रक बुझी तँ इति-वृत्ति थिक। परमेश्वर कापड़िक '**मैथिली बाल साहित्यक सोरपोरक उत्खननक उपक्रम**' आयल अछि। एहिमे बाल साहित्यकेँ आदिम साहित्य कहल गेल अछि। बाल साहित्यक दू गोट धारा—(क) बाल साहित्य ओ (ख) लोक बाल साहित्य कहल गेल अछि। विशद ओ सूक्ष्म विवेचनक अभाव परिलक्षित होइत अछि। डा. पशुपतिनाथ झा '**मैथिली शिक्षणक समस्या ओ समाधानमे**' समस्या तँ उठाओल गेल अछि, मुदा समाधान तेना भ' क' नहि आयल अछि जे होयबाक चाहैत छल। रामनारायण देबक '**डाक एवं घाघक योगदान**'मे हल्लुक ढंगे विवेचन-विश्लेषण कयल अछि। '**पं. जीवेश्वर मिश्रक व्यक्तित्व ओ कृतित्व**'केँ राजेश्वर नेपाली उभारिक' पहचान कराओल अछि। डा. राजेन्द्र विमलक गीति नाटक थिक '**सीता**'। ई अवस्से एहि अंकक उपलब्धि थिक जे 'हेरायल जनकपुर भेटि गेल।' वस्तुत: 'तरहत्थीपर संकल्पक, सुरुज टा उतारि लिय' (95)। तात्पर्य जे परम्परा ओ आधुनिकताक मिश्रणमे समसामयिक स्वर अवस्से देश ओ कालक चिन्तनमे नवीनताबोध दिग्दर्शित करैत अछि जे पाठकीय मोनपर गहींर प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। एहिमे विभिन्न धुनि आ स्वरकेँ सजाओल गेल अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क कथा रिपोर्ताजक अंतर्गत 'उड़ान' आयल अछि। 'कतार' दिस उड़ान भरबाक आ मोनमे सुखक कल्पित सपना संजोगने कर्जक तरीमे दबैत आ ठकाइत लोक तैयो सुख-सुविधाक लेल अपस्याँत लोकक चित्रणमे कथाकार विचार-भूमिकेँ विस्तार देल अछि। एहिमे जीवनक अभिव्यक्ति अछि। अयोध्यानाथ चौधरीक कथा अछि 'थरथराइत किरणक लहरि पर'। एहिमे 'रंजन'क विचार-तन्द्राकेँ भंग करैत देश-दशाक स्थितिक

चित्रणमे संतोषक आभा जे छवि-छटा पर लौकैत अछि सैह आशावादी स्वर मनुक्खक जिजीविषाक द्योतक बनैत अछि। डा. सुरेन्द्र लाभक कथा अछि '**भागिक' जाएब कत**''। एहिमे कथाकार 'महेश बाबू'क माध्यमे तनाओग्रस्त जीवनक उल्लेख करैत भाव-मूल्यकेँ रेखांकित कयल अछि। एहिमे देश, समाज आ संस्कृतिक बदलैत मूल्यकेँ रेखांकित क' डेराओन परिवेशकेँ कथाकार उभारल अछि। मुदा, चिन्तनक प्रवाहधर्मितामे जटिल यथार्थक चित्रणमे अन्तर्द्वन्द्वक ओ रूप तेना भ' क' नहि उभरि पड़ल अछि जे गहनतामे अयबाक थिक। तैयो कथाकारक चिन्ता अवस्से कथामे फलित भ' विसंगति ओ विकृतिकेँ देखार करैत सकारात्मकताक खोज करैत अछि जे प्रशंसनीय थिक। '**माल्हो**'मे वृषेशचन्द्र लाल नैसर्गिक प्रेमक उदात्त भावेँ चिन्ता ओ चिन्तनकेँ संवेदनशीलताक संग उपस्थापित कयल अछि। कथाक शिल्पगत कलात्मक बुनावटिमे कमीक अछैतो 'दाइ'क तीक्ष्ण बुद्धि आ 'माल्हो'क निश्चछलतामे जे प्रेम-भाव प्रकट भेल अछि से बेस 'सुन्दर सहनी'क भविष्यकेँ सँवारबाक दिशामे उज्जवल थिक। एहिमे प्रतिदानक भाव नहि, यथार्थक चिक्कन-चुनमुन रूप उभरि आयल अछि। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक 'खीराक बीया' कथा अवास्तविक ओ यथार्थसँ दूर अछि। कारण, सन्तान-सुखक हेतु ओ जाहि ढंगे दारु नहि, प्रत्युत्त ह्वीस्कीक माध्यमे कथाकेँ अन्तिम परिणति पर अनलनि अछि ताहिमे कल्पनाक संगोर अवस्से हीनताबोधकेँ प्रदर्शित करितो कोनो पुरुषक लेल अविश्वसनीय कहल जायत। सपाटबयानीमे बुनल ई कथा सतहीपनाक द्योतक थिक। डा. योगेन्द्र झाक 'दू पत्र : दू पात्र' कथा कहिक' आयल अछि। एहिमे बेटी 'सुलोचना' ओ 'माय' माध्यमे उतराचौरी अछि। बेटीक पत्र जे 'बेटी दायित्व मात्र होइत छैक (123)' तँ मायक प्रत्युत्तर जे 'माय-बाप कतौक सन्तान प्रतिक दायित्वसँ मुक्त भ'सकैत अछि (124)'? तेँ 'अपनाकेँ समावेश करबाक चेष्टा करैत रहनाइ बुद्धिमता हएतह। तात्पर्य जे सिद्धान्त जे व्यावहारिक जीवनकेँ सफल बनबय से उतारबाक थिक। मुदा, कथाकार अपन बातकेँ कहबाक हड़बड़ीसँ मुक्त नहि छथि। चन्द्रकिशोरक समालोचना 'मैथिली समकालीन स्वरकेँ यथातथ्य उभारितो, आशावादी स्वर फलित होइतो विवेचनापरक भावमे अभाव परिलक्षित होइते अछि। उपेन्द्र भगत नागवंशीक रंगमंच कहि 'मैथिलीमे चौबटिया नाटक : कतेक सार्थक आ कतेक निरर्थक' आयल अछि। एहिमे चौबटिया नाटकक अतीतक स्वरेँ वर्तमान स्थितिक आकलन करबाक भरिसक प्रयास 'नागवंशी' कयलनि अछि। कथामे नाटक नहि भ', नाटकमे कथा होयबाक थिक पर बल देल गेल। तैयो जाहि ढंगसँ उपस्थापित कयल गेल अछि ताहिमे गम्भीरता चाहबे करी। निमिष झाक 'प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आ

मैथिली' नौ गोट पुस्तकक झलकी थिक संगहि आन-आन कार्यक्रमक विवरणी प्रकट होइत अछि। चन्द्रेशक गतिविधिमे 'समसामयिक मैथिली कविताक स्वर : एक अन्तर्यात्रा' द्विदिवसीय वृहत् कवि-गोष्ठी ओ सम-सामयिक मैथिली कविताक स्वर विषयक गोष्ठीक विमर्शपरक रिपोर्ताज थिक। धर्मेन्द्र झा 'विह्वल' अनूदित नेपाली कथाकार ध्रुवचन्द्र गौतमक 'दू सूत्र कथा' आयल अछि। कविताक क्षेत्रमे लोकधर्मसँ जुड़ल जीवनक त्रासदीकेँ उभारैत कतिपय कविता आयल अछि। किछु कविता हल्लुक स्तरक अछि तँ किछु कविता अवस्से सहज गति ओ सरलतामे रचल प्रश्नानुकूलतामे अछि। किछु कविता आत्मबल ओ आत्मविश्वासमे जन संवेदनाकेँ व्यक्त करैत अछि। धर्मेन्द्र विह्वलक कविता 'जागि उठल अछि मुर्दा सभ'मे जीबैत लोक पर छींटाकशी करैत युगीन विसंगति पर चोट अछि। श्याम सुन्दर शशि तँ सहजहि 'होरी : एक शब्दचित्र'मे ध्रुवीय ताकतिसँ लड़बा-भिड़बाक ओरियाओनमे आत्मसंघर्षी चेतना जगबैत अछि। रमेश रंजनक 'जातीय प्रवृत्ति' अवस्से अरण्यरोदनमे छटपटाइत-कुहरैत सूतल संवेदनाकेँ जगयबाक प्रयास भेल अछि। अन्त: संघर्षक ई कविता चेतनाकेँ समुन्नत करबाक दिशामे सार्थक प्रयास थिक। पिसाइत भावना आ थकुचाइत कल्पित स्वप्नक बीच अशोक दत्तक 'उद्वेग' कहल-अनकहल दबावगत प्रश्नमे नवनिर्माणक आकांक्षी छथि। तेँ जीवनकेँ मूल्यवान ओ सार्थक बनयबाक दिशामे आहत मोने उत्प्रेरकक भूमिका निमाहैत छथि। एहिना सामाजिक समस्या ओ राजनीतिक स्वर नेने आनो-आन कवि-कवयित्रीक कविता सभ आयल अछि।

आंगनक दोसर अंक वैशाख 2067 वर्ष-2, अंक 2 थिक। तिरहुतिया गाछीमे भेल मिथिला महोत्वक बहन्ने डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', कुमार अभिनन्दन ओ ई. सत्यनारायण साहक तीन गोट आलेख अछि। लोकगाथाक परिकल्पित मूर्तिक प्रशंसा नीक अछि तँ गांगोक संग भेल अन्यायक प्रतिरोध सेहो भेल अछि। सलहेसपरक दूटा आलेख डा. मौन ओ निमिष झाक अछि, तारानन्द मिश्र 'ललितपुरवासी मैथिल विद्वान कुनू शर्मा तथा हुनक तीनटा ग्रन्थ'क चर्च कयलनि अछि। नमोनारायण झाक 'मिथिला, छठि पर्व आ सूर्योपासना' छठि पर्वक महत्ताकेँ जनबैत अछि। डा. राजेन्द्र विमल 'मिथिलाक संस्कृतिमे सह अस्तित्वक चेतना'मे स्पष्ट कयलनि अछि जे 'कृषि व्यवस्थापर आधारित सांस्कृतिक जीवनकेँ दकोटैत रहने हमरा लोकनि साइबर संस्कृतिक एहि युगमे पाछाँ त' ने पड़ि जायब (53)'? विश्व संस्कृति व्याकरणक खोजमे संस्कृतिक ह्रासक चिन्ता व्याप्त अछि। चन्द्रेशक 'जीवनक अर्थक खोजमे पाथेयक कथा संसार' कथाकार पाथेयक कथाक विविधता ओ व्यापकतामे आत्मसंघर्षी

चेतनाकेँ प्रतिफलित करैत समालोचना थिक। कथामे भुवनेश्वर पाथेयक 'लाल स्वीटर', अयोध्यानाथ चौधरीक 'मद्धिम', रा.ना. सुधाकरक 'महाशयजी', विभा रानीक 'धाधा धिन्ना ता धिन धिन्ना' आ वृषेश्चन्द्र लालक 'गोलबा' आयल अछि। 'मद्धिम' कथामे अपनत्वक खोज अछि। अमेरिकन मित्र 'बौब लेजर'सँ भेँटक बाते नहि जे पहाड़ी परिवारक खोज कथाकारक अन्तर्मनकेँ बेचैन करैत छैक। मनुष्यता पर दानवता कतेक हाबी अछि जे 'शोषक रहए केओ आ पड़ाए पड़ैछ ककरो (67)'। अपनत्वक दूटैत डोरमे छूटैत सम्बन्ध अबस्से छिलमिला की देने छैक जे संवेदनात्मक स्रोत सुखा दैत छैक। भाषाक सहजता ओ शिल्पक विशिष्टतामे शिल्पित ई आधुनिक कथा अवस्से कथाकारक सोच आ अनुभवकेँ वाणी दैत अछि। 'महाशयजी' कथामे रा.ना. सुधाकर मैथिलीक विकासमे बाधक तत्वकेँ देखार करैत लोकक करतूत आ किरदानीकेँ प्रकट कयल अछि। पद आ प्रतिष्ठाक मद-मोहमे एकटा क्यूटिम इन्जीनियर कोना दोसरकेँ उपदेश दैत अपने माँछक गंधमे अपन औकादि देखबैत अछि आ रचना ओ अर्थक नाम पर 11 टाका दैत विद्वताक अहं प्रदर्शित करैत अछि तकर चित्रण भेल अछि। रामसुन्दर चौधरीक 'लेटर पैड' अवस्से सोचबाक लेल विवश करैत अछि जे कोना हीन मानसिकताबोधमे पलित लोक आइयो महम्मन्यताक शिकार अछि। कथा रोचक ओ मनलग्गू अछि। सहजता ओ स्वाभाविकतामे वृशेषचन्द्र लालक कथा 'गोलबा' आयल अछि। एहिमे कथाकार 'गोलबा' माध्यमे जतय ओकर माय चितकबरी'क ममताकेँ प्रकट कयल अछि, ततय पोसनिहार बड़की माइ आ धीया-पूताक क्रिया-कलापमे गोलबाक भूमिकाक चित्रण अछि। इच्छा, मनोरथ आ पूजा-पाठमे पालल-पोसल गोलबाक कटब अवस्से मानवक भूखक प्रतीक थिक। आइ एकटा गोलबा कटायल अछि जे स्वाभाविक प्रक्रियामे अछि, मुदा चितकबरीक लेल ? यैह भूख तँ समाजमे आदंक पसारैत अछि जे प्रेम ओ ममता निघटल जा रहल अछि, पेट बढ़ल जा रहल अछि आ सामाजिक सत्यतामे हश्र की लोकक भ' रहल अछि से छपित नहि अछि। जँ मासिक नियंत्रणकेँ अवहेलित होयत तँ की गत होयत से अनुमान योग्य अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' '**भैया एलै अपन सोराज**' नाटकमे दीना-भद्री लोकगाथाक माध्यमे शोषकक अन्त ओ शोषितक विजय देखाओल अछि जे प्रजातांत्रिक परिवेशक उपजा थिक। समयक सत्यतामे मुक्त समाजक परिकल्पना अवस्से नव भाग्योदयक प्रतीक थिक। संवेदनाकेँ खुरेचैत ई नाटक श्रमक गरिमाकेँ प्रदान करैत आम लोकक स्वरकेँ प्रकट करैत अछि। द्वन्द्वसँ घेरल-बेढ़ल ई नाटक शोषण ओ अत्याचारसँ मुक्त करबैत जनताक सोराज पर विराम लैत अछि जे लोकक

स्वाधीनचेता ओ संघर्षक प्रतिफल थिक। ई नाटक रंगमंचक अनुकूल प्रयोगमे फलित अछि। डा. रामदयाल राकेशक '**हमर भियना भ्रमण**' देशाटनक अन्तर्गत यात्रा वृतान्त थिक। डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ राष्ट्रकवि माधवप्रसाद घिमिरेक संग **आंगन** गपशपमे अन्तरवार्ता अछि जाहिमे मौन मिथिला राज्यक प्रसंग मिथिलाक सीमा पूर्वमे महानन्दा तिष्ठा (झापा)सँ पश्चिम बागमतीक बीच होयबाक बात स्वीकारलनि अछि। राष्ट्रकवि घिमिरेक कथन जे 'मैथिली पुरान भाषा सबमेसँ एक अछि (105)'। एहना आरो तथ्यगत बात सभ उभरल अछि। भोजपुरी कथाकार गोपाल अश्कक 'नैहरक चुनरी' कथाक अनुवाद विनीत ठाकुर कयल अछि तँ डा. गंगाप्रसाद अकेला रामस्वरुप किसानक अंग्रेजी कथाक अनुवाद 'दलाल' कयल अछि। डा. रमानन्द झा रमणक समालोचनाक अन्तर्गत 'मैथिली कथाक विकास : किछु नव तथ्य' आयल अछि। अनमोल झाक दू गोट लघुकथा अछि। एहिना कतिपय कविता आ आनो आन रचना अछि। सम्पादकीयमे सम्पादक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क दृष्टि अछि जे 'एहि पत्रिकाकेँ मैथिलीक झनक स्वरूपमे आगाँ बढ़ेबाक हमरा लोकनिक सोच अछि'। मुदा सोचल-विचारल काज नहिए होइत अछि। तेँ की? जतबे भेल अछि तँ सैह कोन कम थिक? मिला-जुलाक' अंक नीके कहल जायत।

आंगन, अगहन 2067, वर्ष-2, अंक-3क प्रधान सम्पादक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' आ कार्यकारी सम्पादक छथि अयोध्यानाथ चौधरी। 'विद्यापति विशेष'क संगहि आनो आन रचना ल' ई अंक आयल अछि। एहिमे अछि डा. देवशंकर नवीनक 'गीतिकाव्यक रूपमे विद्यापति', डा. रमानन्द झा 'रमण'क 'मिथिलाक संगीत व विद्यापति', चन्द्रेशक 'विद्यापति पदावलीक लोकरंग', डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क 'नेपालमे विद्यापति' अछि। साक्षात्कारमे पं. गोविन्द झाक 'अपना समयमे विद्यापति एसगरे कवि नहि छलाह' आयल अछि। कुमार अभिनन्दनक 'विद्यापतिक कतेको रचना उद्धारक प्रतीक्षामे अछि'। विद्यापतिक नाम लगाक' आरो लेख सभ अछि। यथा- कालीकान्त झा तृषितक 'अभिनव जयदेव विद्यापति आ बौआइत मैथिल सन्तति' ओ प्रा. परमेश्वर कापड़िक 'भनहि विद्यापति अपन मिथिला राज'। प्रो. रामनारायण देवक, 'काठमाडौं उपत्यकामे महाकवि विद्यापतिक साहित्य आ संगीत'। संगहि, प्रो. डा. रामावतार यादवक 'समकालीन मैथिलीक वर्तनी : संक्षिप्त वर्णन विश्लेषण' अछि। भाषा विज्ञानसँ सम्बन्धित ई सारगर्भित लेख थिक। एहन निबन्धक उपयोगिता ओ उपादेयता अवस्से सार्थक महत्व रखैत अछि। 'मिथिलाक लोकनायक : दीनाभदी' पर देवेन्द्र मिश्रक आलेख अछि जे जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक 'गीत

दीनाभद्री' पर आधारित अछि। रामलोचन ठाकुर 'ब्रजबुलि, कवीन्द्र रवीन्द्र आ मैथिली'मे स्पष्ट कयलनि अछि जे 'मिथिलाक भाषा ब्रजबुली बंगला साहित्यक एक सम्पूर्ण अध्याय पर अधिकार कयने अछि (8)'। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक 'डा. धीरेन्द्र : रचना आ स्मृतिमे' आयल अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क 'निकास' नाटक आयल अछि। एहिमे स्पष्ट भेल अछि जे अंकुरैत प्रेमकेँ कतबो झाँपि-तोपिक' राखल जाय, मोन-मिलानी भेलापर जगजियार भैये जाइत अछि। तेँ पुरुष 1क स्वरेँ 'गलती बुझी, अपराध बुझी, दुनूक बराबर छै (113)'। नाटकीय आवेगसँ युक्त एहि नाटकमे चाहक दोकान कयनिहार फुलगेनमाक बेटी 'सीलिया' आ पैघ घरक पलटु मालिकक बेटा 'रविबाबू'क साँठ-गाँठमे प्रेमक रंग की घोरा गेलैक जे दुनू एक दोसरकेँ ल' उड़न छू भ' गेलैक। पात्रोचित भाषामे नव प्रयोग अवस्से शिल्पगत सौन्दर्य नेने आयल अछि। नाटकक संवाद योजना छोट-छोट कीअछि जे जीहे पर आओत। ने वेश-भूषाक चिन्ता आ ने रंगमंचक। कनेके संरजामक' वाचिक अभिनयमे कोनो ठाम प्रस्तुति भ' सकैत अछि। सामाजिक जीवनमे घटित ई घटना समाजक लोकक विवेचन-विश्लेषण करैत मानसिक उहापोहमे युगीन यथार्थकेँ अभिव्यक्ति दैत एकटा चेतौनी दैत अछि। मूल्यबोधकेँ स्वीकारब सचेतनताक लक्षण थिक से चेतनाबोध जाग्रत करैत अछि। डा. शेफालिका वर्माक 'नारी ओ समाज' निबन्ध थिक जाहिमे ओ महिला सशक्तीकरण पर जोर दैत स्पष्ट कयलनि अछि जे 'नारी उठैत अछि तँ आकाशक ऊँचाइकेँ स्पर्श क' लैत अछि, खसैत अछि तँ पातालक छातीकेँ विदीर्ण क' दैत अछि (116)'। डा. रामदयाल राकेशक 'सार्क लेखक सम्मेलन' आयल अछि जाहिमे प्रस्तुत हाइकू जे पाँच गोट अछि से आधुनिक विडम्बनाकेँ जगजियार करैत व्यवस्था पर चोट करैत अछि। दू गोट कथा राजाराम सिंह 'राठौर'क 'कमला स्नान' ओ डा. रेवतीरमण लालक 'आघात' आयल अछि। चन्द्रेशक पुस्तक समीक्षाक अन्तर्गत 'संवेदनशील मोनकेँ छुबैत हुगलीउपर बहैत गंगा' आयल अछि। आचार्य सोमदेवसँ साक्षात्कार 'विश्वभाषाक केन्द्र बनओ नेपाल' चन्द्रेशक अछि। डाक्ट्रोलक व्यंग्य 'धर्मक घोल घमर्थन'क संगहि कतिपय कविता प्रकाशित भेल अछि।

सलहेस विशेष ल' क' **आंगन** वर्ष 4, अंक 4, वैशाख 2069 आयल अछि जकर कार्यकारी सम्पादक धर्मेन्द्र विह्वल छथि। एक संग सोलह गोट सलहेसपरक आलेख डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', नथुनी सिंह दनुवार, तारानन्द मिश्र, डा. रमानन्द झा 'रमण', डा. रामदयाल राकेश, डा. मोहित ठाकुर, डा. बुचरु पासवान, रमेश रंजन, डा. रेवतीरमण लाल, डा. गंगा प्रसाद अकेला, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रामनारायण

देव, डा. अरुण कुमार कर्ण, डा. मेघन प्रसाद, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, चन्द्रेश आ 'सत्यक जय असत्यक क्षय' नाटक मीना ठाकुरक अछि। डा. रामदेव झासँ चन्द्रेशक साक्षात्कार आ पुस्तक परिचयक अन्तर्गत डा. योगानन्द झाक 'मैया अएलै अपन सोराज : विहंगम दृष्टि' आयल अछि। डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवक 'मैथिलीमे कारकीय व्यवस्था एवं व्याकरणीक प्रकार्यक बीच अन्तरसम्बन्ध' शोधपरक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। अयोध्यानाथ चौधरीक 'पेण्डुलम' कथा आ धर्मेन्द्र विह्वलक 'डायग्नोसिस' कथा आयल अछि। संगहि कतिपय कविता ओ आलेखमे डा. विद्यानाथ झा 'विदित'क 'नेपाली, मधेशी ओ मैथिली' आ अतुलेश्वर झाक 'आधुनिक नेपालीय मैथिली साहित्यक कालविभाजन आ अवधारणा' अछि।

आंगन वर्ष 5, अंक 5, वैशाख 2070 मुदा आवरण पृष्ठ पर **आंगन**-6क कार्यकारी सम्पादक छथि अयोध्यानाथ चौधरी। ई अंक लोक गायन विशेष ल' क' आयल अछि। लोक गायन विशेषमे अछि —डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क 'मैथिली संस्कृतिमे लोक गायकीय परम्परा', डा. महेन्द्र नारायण रामक 'लोकगाथा आ हुनक स्थिति', डा. बुचरु पासवानक 'मैथिली लोक गायनक अवस्था एवं भविष्य', चन्द्रेशक 'विस्मृत होइत लोकगायन एवं गीत सभ' आ विष्णु कुमार मंडलक 'मिथिलांचलक लोकगायन आ एकर अवस्था'क संगहि डा. रेवतीरमण लालक 'मैथिली लोकगाथा जय विसहरि', डा. नील रेखाक 'मिथिला लोक चित्रकलामे सलहेस : संक्षिप्त इतिहास', डा. मोहनानन्द मिश्रक 'सलहेस मिथिलाक प्राचीन लोक सांस्कृतिक विरासत' आ प्रो. डा. रामदयाल राकेशक 'लोक पर्वक विशिष्ट पक्ष'। चन्द्रेशक दू गोट रिपोर्ताजमे 'मैथिली संस्कृतिमे लोकगायन परम्पराक अन्तर्दृष्टि' आ 'लहानमे लोकनाटक सलहेसक चर्चा-परिचर्चा' अछि तँ पुस्तक-समीक्षामे अछि 'आधुनिक लोकधर्मी : एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक'।

प्रो. डा. रामावतार यादवक शोधपरक आलेख 'ग्रिअर्सनक पुनर्मूल्यांकन की आधुनिक मैथिलीमे उपान्त्यपूर्व-लघुता नियम अछि?' आयल अछि। एहिमे स्पष्ट भेल अछि जे ग्रिअर्सन द्वारा प्रतिपादित नियम SAV क' विस्तृत विश्लेषण ओ मूल्यांकनक पश्चात् निष्कर्षत: ई कहल जा सकैत अछि जे ग्रिअर्सनक नियम SAV अनेकहु दृष्टिएँ त्रुटिपूर्ण अछि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क यात्रा संस्मरण 'हमर देखल-सुनल कोलकाता : डायरीक पन्नामे' अछि। एहिमे भ्रमरक कोलकाता प्रवासक जीवननुमा अछि। अमरनाथ झा (पुरी)क 'मिथिला-मैथिल-मैथिलीक अखिल भारतीय महोत्सव आ महाकुंभ - रायपुर (छ ग.)' विषयक आलेख गोष्ठीपरक

अछि। कथा तीनटा—अयोध्यानाथ चौधरीक 'ओ दिन', रमेश रंजनक 'रेडी' आ विजेता चौधरीक 'छत्ता' आयल अछि। कवितामे करुणा झाक 'भ्रूणक चीत्कार', श्वेतारानी चौधरीक 'एको गज भूमि नहि', कुमार अभिनन्दनक 'दू गोट गजल', प्रेम विदेह ललनक 'भूकम्प' आ आलेखमे निक्की प्रियदर्शिनीक 'सर्जनात्मक साहित्य : एक भावनात्मक कला' मनीष कुमार झाक 'हम मिथिला, मैथिल, मैथिलीक धूजा विश्वमे फहराब' चाहैत छी' आयल अछि।

एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे '**आंगन**'क प्रकाशित अंक अपनामे खास महत्व रखैत अछि। एहिमे प्रकाशित विभिन्न विधापरक आलेख अवस्से नेपालक मैथिली पत्रकारिता जगतमे क्रान्ति आनय चाहैत अछि। किएक तँ मैथिली-मिथिलाक नवजागरणमे निस्सन्देह ई पत्रिका अपन विशिष्ट स्थान ठमिऔने अछि। खासक' महाकवि विद्यापतिपरक होअय वा सलहेसपरक संगहि आनो आन भाषा विषयक दृष्टि विशेषमे जे मानसिक विकासक रसायनिक घोल प्रस्तुत कयलक अछि से पाठकीय मनोमस्तिष्कमे वैचारिक आद्रतामे सोचबाक लेल नव जमीन दैत अछि। मानवीय मूल्यबोधकसर्जनामे निरन्तर ऊँचाइ दिस बढ़ैत एहि पत्रिकाक यथार्थ संवेदनात्मकतामे अछि। समय आ समाजसँ जुड़ैत कतिपय रचना विषय-विविधताक दृष्टिएँ एकटा नव सामाजिक जनचेतनाक प्रसारमे अहम भूमिका निमाहैत अछि। अन्याय ओ अत्याचारसँ जूझैत, संघर्ष-चेतनाकेँ फलीभूत करैत अपन चरित्र बलेँ ई पत्रिका सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिएँ साहित्यकेँ सबल बनबैत अछि। यथार्थबोधक संग सहज ओ सरल शब्दावलीमे परम्परा ओ आधुनिकताक मिश्रण जे प्रयोगमे छिटकि आयल अछि से पत्रिका जगतमे ई पत्रिका एकटा खास अहमियत रखैत अपन इतिहास रचैत अछि। जेँकि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' कतिपय पत्रिकाक सम्पादन पूर्वहुमे क' चुकल छथि, तीक्ष्ण दृष्टिक सफल सम्पादक छथि, अपन शोणित सींचिक' साहित्यकार ओ पत्रकार छथि तेँ देखल-सुनल बल-बुत्तापर ओ जतबे जे किछु अंककेँ सजौलनि से हिनका लोक जागरणक योद्धाक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। एहिमे प्रकाशित किछु रचना दबो अछि तँ किछु श्रेष्ठ रचनाक गुणात्मकताक फलस्वरूप अलगट्टे नकारल जा सकैत अछि। तेँ संघर्षमे तपैत रूप-स्वरूप नेने '**आँगन**' अपन इतिहास अपने बनबैत अछि।

विवेच्य अंक **आंगन** वर्ष छ, अंक छ, पूस 2070 दीनाभद्री विशेषांक भ' आयल अछि। दीनाभद्रीक हेतु ई अंक सम्पादकीय ध्वनि एहि अंकक प्रधान सम्पादक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क अछि। ओ लोकगाथाक महत्ताकेँ प्रकट करैत एहि प्रति उदासीनताकेँ खिन्न भावें स्पष्ट कयलनि जे मैथिली लोकगाथाक क्षेत्रमे अंग्रेज

बहादुरक कर्मचारी लोकनि क' गेलाह ताहिसँ आगाँ बढ़यबाक काज हम सभ नहि कयने छी। ई बात सवा सोरहो आना सत्य अछि। हम तँ एतेक दूर धरि कहने छी जे मैथिली भाषा साहित्यमे हमरा लोकनि जे धनिक छी से लोकगाथाकेँ ल' क'। लोकगाथाके जँ फराक क'देल जाए तँ हाथमे आओत शून्य अर्थात फोंक। सेहो गौरवक बात अछि जे बेसिए लोकगाथा नेपाल परिसरक देन थिक। तेँ सम्पादकीयमे उल्लेख अछि से धन नेपाल तँ मैथिलीक प्राचीनता आ विपुल समृद्ध, साहित्य। जखन कि ओ स्वयं स्वीकारने छथि जे प्राचीन मैथिलीक बहुतो सामग्री विदेश अर्थात जर्मनी आदि ठाम चल गेलैक। एहिमे आक्रोश संग खौंझाहटि बेस प्रबल भ' आयल अछि। आब जे किछु सामग्री बाँचलो अछि तैयो महत्वपूर्ण अछि। मिथिलाक लिखल गेल इतिहासपर व्यंग्य करैत ओ कहलनि अछि जे दस प्रतिशत वर्गक लोकक इतिहास नब्बे प्रतिशत लोकपर थोपल गेल अछि। अर्थात सुन्ना इतिहास लिखबाक बेगरता अछिए। जेँकि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सम्पादक, पत्रकार आ साहित्यकार छथि तेँ ओ सम्पादकीय दायित्व बोधकेँ नीक जकाँ जनैत-बुझैत शानसँ राज-काजकेँ सम्पादित करैत छथि। कोना ने करताह? सम्पादन कार्य बड़ दुखद अछि जे सौखवश नहि सम्पादित होइत अछि। सम्पादन हेतु आवश्यक अछि (1) नीति-निर्धारण (2) रचनाभारसँ सम्पर्क आ रचनामे संशोधन (3) अभिव्यक्तिक प्रति सम्पूर्ण उत्तरदायित्व (4) जन्मजात प्रतिभा (5) जन्मजात प्रतिभा पत्रिकाक स्तरक अनुकूले रचनाक चयन (6) सन्तुलित सामग्री होयबाक थिक (7) संकीर्ण राजनीति अर्थात कुत्सित मानसिकतासँ पत्रिकाकेँ बचबैत आ अपनाकेँ बचैत गोलसी वा दलवादीसँ फराक रचनाक चयन गुणवत्ताक आधारपर होअय। (8) रचनाक्रम निर्धारण होअय। जे किछु, सम्पादन कार्य श्रमसाध्य आ दायित्वपूर्ण चुनौती थिक जे जूता सियाइसँ चण्डीपाठ धरि करबाक लूरि सम्पादककेँ होयबाक थिक। एहि सम्पादकीय कला-कौशलकेँ निमाहबामे भ्रमर स्वयं सचढ़ छथि। ओ स्वप्रेरित आ स्वस्फुरित अपन अर्जित विवेक, उर्जा आ सामर्थ्यबोध एहि कार्यकेँ सम्पादित क' सफल सम्पादक रूपमे भूमिका निमाहैत छथि से निमाहलनि अछि। ताहिमे एहि तरहक अंक? अस्पृश्य वर्ग मुसहरक प्रतिनिधि नाम दीनाभद्री जे समाजमे नव क्रान्ति अनलथि आ नव जागरणक सनेस खासक' बेगार-प्रथाक समेटि यानि शोषितक संबल बनि संवाहक बनि ठाढ़ भेलाह। ताहिसँ प्रेरित भ' ई अंक प्रकाशित करब अवस्से दुर्लभ रत्नकेँ समाजक बीच आनब थिक जे ओ विभिन्न रचनाकारक माध्यमे अनलनि।

एतदरिक्तो आनो सामग्री जेना-कथा, कविता, साक्षतकार, रिपोर्ताज, यात्रा

स्मरण पुस्तक, पत्रिका, समीक्षा आदि अछि। भारत ओ नेपाल दुनू ठामक मैथिलीक प्रतिनिधि साहित्यकारक संगम भेल अछि। अन्तर्वार्ताक क्रममे प्रो. डा. चुड़ामणी बन्धुसँ साक्षात्कार विजेता चौधरी लेलनि अछि। एहि साक्षात्कारमे स्वयं डा. चुड़ामणी बन्धु स्वीकारलनि अछि, जे लोक नायक सलहेसकेँ राज्यमे उचित सम्मान भेटबाक चाही। ओ इहो स्पष्ट कयलनि जे त्रासदिक मानसिकतामे हिन्दी भाषाकेँ मैथिलीसँ उपर राखिक' देखल जाइत छैक (9)। मध्यकालमे कोनहु भाषा-साहित्य सभक विश्वासमे अप्रतिम योगदानकेँ स्वीकारैत ओ स्पष्टत: व्यक्त कयलनि जे लोक साहित्य ज्ञान केर रूपमे स्थापित भ' चुकल छैक (4)। ओ तँ इहो कहलनि जे देशक सम्पूर्ण विभूति आ जननायक सभकेँ राज्यमे उचित सम्मान भेटबाक चाही (7)। एहि अन्तर्गत जातीय परम्परा, इतिहास, भूगोल, संस्कृति आदि सम्बन्धी बात सभकेँ उठाओल गेल अछि। दोसर भेट वार्ता पं. गोविन्द झासँ स्वयं प्रधान सम्पादकक अछि। एहिमे पं. झा मुक्त कण्ठेँ नेपालक गुण-गौरवकेँ झलकबैत स्पष्ट कयलनि अछि जे मिथिलाक असली इतिहास नेपालसँ प्रारम्भ होइत अछि (8)। ई साक्षात्कार छोट होइतो गुरु गम्भीर, चिन्तनापरक आ ज्ञानवर्द्धक अछि। ओ भारतक राजदूत नेपालक साहित्यिक जगतमे डा. रमानन्द झा 'रमण'केँ कहलनि तँ भारतमे नेपालक राजदूत रूपमे रामभरोस कापड़ि भ्रमरकेँ स्वीकारलनि। जे किछु, टटका लेखक अनुभूति एहिमे अछि।

दीनाभद्री विशेषमे दस गोट दीनाभद्रीक विभिन्न पक्षपरक आलेख अछि जाहिमे पाँच गोट नेपालक विद्वानक आ पाँच गोट भारतक अछि। एक ठाम विभिन्न विद्वान सभक सामग्रीसे नव-पुरान दुनू कोटिक आयब अवस्से दीनाभद्रीक महत्ताकेँ स्थापित करैत अछि। एतदरिक्त खासक' लोकगाथा परक दीनाभद्री आ सलहेस जे ऋषभदेव शर्माक 'दीनाभद्री आ सलहेस' अछि तकर सारगर्भित चित्रणक' स्वयं भ्रमर लोकधर्मिताक निर्वाहमे लेखकीय योगदानकेँ अमूल्य स्थान देलनि अछि। यात्रा प्रसंगक अन्तर्गत चीनक सांस्कृतिक राजधानी सियोनमे आयल अछि। एहिमे चीनक संस्कृतिकेँ झलकबैत यात्रा प्रसंगक अनुभूतिसँ पाठककेँ दिग्दर्शित कराओल गेल अछि। बादमे उक्त लेखक भ्रमरक पोथी 'चीन जे हम देखल' प्रकाशित भ' आयल अछि। चन्द्रेशक **आंगन**क पहिल अंकसँ ल' क' पाँच अंकक समीक्षा आ लोकनायक सलहेस परक संगोष्ठीक दू गोट प्रतिवेदनसँ अछि। दिनेश गुप्ताक निबन्ध लगाव अनूदित विनीत ठाकुर द्वारा आयल अछि। विजेता चौधरीक '**बैर**' पोथीक समीक्षा अछि। पाँच गोट कविक कविता, गजल आ दू गोट कथा आयल अछि।

एहि प्रकारें देखैत छी जे भ्रमरक सम्पादकत्वमे प्रकाशित छओ अंक विपुल सामग्री नेने हिनक सूक्ष्म दृष्टिक फलस्वरूप विशिष्ट भ' आयल अछि। पाठकीय रुचिकेँ परिस्कृत विकसित करैत बहुत हद धरि मानसिक भूखकेँ शान्त करैत अछि। सम्पादकक मेहनति, लग्नशीलता आ निष्ठाभाव यैह जे पठनीय ओ ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रस्तुत क' पाठकीय संवेदनाकेँ जागृत कयलनि अछि।

संघर्ष-चेतनामे फलित 'आंजुर'

चन्द्रेश

विगत दू वर्षसँ मैथिली जगतक तँ जैसे, आनो भाषाक स्थिति कोरोना कालमे की रहल अछि से छपित नहि अछि। कही तँ संक्रमणक स्थितिसँ गुजरैत सभ भाषाक स्थिति प्राय: कृष्णपक्षक रहल अछि। लॉकडाउनक स्थिति आरो डेराओन परिवेश उत्पन्न क' देने छल। लोकसँ लोक कटि रहल छल। अस्पताल जेबासँ लोक अपनाकेँ बचा रहल छल। कही तँ काज करबाक उहि जेना-तेना घरेमे समेटिक' रहि गेल छल। सार्वजनिक काजक गपे कोन जे नवागन्तुक लेल ठौर-ठेकान बेठेकान बनल छल। एहनो विषम परिस्थितिमे जेना-तेना '**आंजुर**'क अंक प्रकाशित भ' रहल छल से अबस्से मैथिली भाषा-साहित्यक लेल गौरवबोध विषयक थिक।

ई सत्य अछि जे संक्रान्तिकालीन उपजामे '**आंजुर**'मे किछु रचना अबस्से अपन पूर्व प्रकाशित रचना ल' क' दोहराओल गेल जकर संख्या तेहनाहे सन अछि। समय तेहन विकट स्थिति-परिस्थिति उत्पन्न क' देने छल जे जखन लोकक जान बाँचब कठिन छल तखन के पोथी आ पत्र-पत्रिकादि से नवका झट द' उनटाबय? प्रेस-कार्य सेहो प्राय: बन्दक स्थितिमे आयल छल। दैनिक समाचार पत्र धरिक प्रकाशनक संगहि वितरणक समस्या सेहो बनल छल। एहि अवधिमे मैथिलीक इनल-गिनल पोथी आ पत्रिकादि प्रकाशित भेल। '**आंजुर**' अपन टेक धरि रखने रहल। एकर किछु अंक जे हमरा भेटल से विवेच्य अछि।

वर्ष 30, अंक 2, क्रमांक 51, आसिन-कातिक 2076, अक्टूबर-नवम्बर 2021 आयल। उपरी आवरण पृष्ठ पर चक-चकाइत 'उगह सुरूजदेव अरघ के बेरिया'क संगहि 'सामचको-सामचको अबिहा हे!' 'जरए दीप भागे अन्हरिया' ओ 'विराटनगरक छठि आराधना'मे आदि प्रमुख भ' आयल अछि। ई हम पहिने स्पष्ट क' दी जे '**आंजुर**'मे सम-सामयिक पावनि-तिहार अर्थात् सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक आदिक प्रमुखता रहिते अछि। स्वयं सम्पादक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

सम्पादकीयमे स्पष्ट कयलनि अछि जे 'पर्वक पतियानीमे हुकरैत संस्कृति'। ओ स्पष्ट कयलनि अछि जे हमर सम्पदा वैश्विक धरातलमे पहुँचए से खुशीक बात, मुदा उपभोक्ता संस्कृति वा कही बजारबादक अतिक्रमणसँ सहज, स्वाभाविक आ समावेशी ई पाबनि सभ कहीं अपने लोकसँ दूर नहि जाए लागए (2)' छठि पाबनि अबस्से अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण क' चुकल अछि आ आब सामा-चकेबामे सेहो रुचि लेब' लागल अछि पश्चिमी दुनिया। सम्पादकीय दृष्टि अपन माटि-पानिसँ जुड़ल लोक हितक चिन्तामे व्याप्त अछि से बहुसंख्यक जनसमाजक लेल। शास्त्रीयताक चिन्ता अबस्से शास्त्रीय विधि-विधानमे दम-खम रखैत अछि। मुदा, बहुसंख्यक वर्ग शास्त्रीयतासँ अबूझ कृषि-कर्म पर आधारित पाबनि-तिहारक महत्ताकेँ बुझलनि आ एही मे संस्कृतिक अक्षुण्णताकेँ तकैत अछि। एहि अंकमे छठिपरक आलेख विशेषे आयल अछि जे लौकिक आ शास्त्रीय दुनू दृष्टिकोणें अपन उपस्थितिबोधक महता दर्शबैत अछि। यथा-चन्द्रेशक 'आस्थापरक लौकिकतामे लोकसंस्कृतिक संरक्षा आ संवाहक छठि महापर्व' अछि। एहिमे स्पष्ट भेल अछि जे 'छठि महापर्व' थिक। ई जीवन जीबाक कला सिखबैत सामाजिकताक निर्वाहमे अपन अहम भूमिकाक निर्वाह करैत अछि (28)। सुधा मिश्रक 'काठमाण्डूक छठि', करुणा झाक 'प्रकृतिक अनुपम पाबनि छठि', पं. भवनाथ झाक 'मैथिली छठि व्रतक मैथिल साम्प्रदायिक कथा', दिनेशचन्द्र मिश्रक 'लोक आस्थाक पावनि : छठि' आदि आयल अछि। सामा-चकेबाक सम्पूर्ण कथा' पं. भवनाथ झाकअछि तँ डा. श्रीशंकर झाक 'दुर्गा संस्कृतिक वर्त्तमान रूप' आयल अछि। राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क भनहि विद्यापतिमे मैथिली मंचक समावेशी नहि होयब पर चिन्ता व्यक्त कयल अछि। कालिन्दी ठाकुरक 'काठमाण्डूक दीयाबाती' आयल अछि। 'चनमा' कार्यक्रमक आयोजिका विभा झासँ विनीत ठाकुर साक्षात्कार क' हुनक मनोव्यवस्थाकेँ स्पष्ट कयल अछि। विभा विमर्शक 'झुमका' कविता जाहिमे प्रीति अछि आ प्रेमक रसधार। मुन्नाजीक दू गोट बाल बीहनि कथा 'सरकारी शिक्षा' आ 'परिणाम' आयल अछि। प्रो. डा. टुनटुन झा 'अचल'क 'प्लास्टिक-मृत्यु रथ' अबस्से नवचेतना जगयबाक प्रयासमे अछि। मिसिदाक चारि गोट बाल कविता आ शत्रुघ्न पासवान सहयात्रीक 'भगवती वन्दना' आ 'पहिने छल' कविता सम-सामयिक अछि। विनीत ठाकुरक 'भोला' कथामे 'रमा'क सहयोग पाबि लोक सेवा आयोगक परीक्षामे दलित आ महिला कोटामे उत्तीर्ण भ' पद पयबाक व्यथा-कथा अछि। सुधा मिश्रक 'फूटि गेलै टेस्ट-ट्यूब' कथाक माध्यमे सिनेह आ प्रीतिकेँ जोगाक' वियोगक जे वर्णन भेल अछि से सुखे-दुःख संगे रहबाक आनन्दानुभूति

करबैत अछि। सागे-भात खाएब तँ हैतेक? संगे-संग तँ रहब (19)।' अर्थात् 'अनुपा'क कहल स्वर विजयकेँ यर्थाथानुभूति करबैत अछि। शिल्पक ढंगे कथाक बुनाबटिकेँ कनेक आरो साधल जइतय तँ पति-पत्नीक बीचक रागात्मक प्रेम आरो उभरिक' सोच आ दृष्टिएँ मार्मिक भ' उभरि अबितय।

'लकडाउनमे नया वर्ष 2077' कहि अप्रैल-मइ 2020 आयल अछि। सम्पादकीय 'संक्रमित नयावर्ष 2077' मे स्पष्ट भेल अछि जे अन्ततः नवका वर्षके रोगमुक्त हयबाक प्रतीक्षा करी (2)'। तात्पर्य जे कोरोनासँ मुक्ति होयब। एहिमे पूर्व प्रकाशित डा. नरेन्द्र सिंह निरालाक 'तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकासमे सलहेसक योगदान' विषयक रचना आयल अछि। ई शोध निबन्ध थिक आ विभिन्न विद्वतजनक उद्धरण दैत सलहेसपरक महत्ता ओ विशेषताकेँ उल्लेख कयल गेल अछि। डा. रमानन्द झा 'रमण'क 'मैथिलीमे लेखन पद्धति' विषयक आलेख अछि। एहिमे भाषाक विकास, जटिलता, पात्रक आ लेखकीय भाषाक अन्तरकेँ फुटकाबैत दूटा बात पर जोर देल गेल अछि जे भाषाक विकासमे सहायक अछि—1. प्राचीनताक रक्षाक संग विकासक पक्षधर होइत अछि तँ दोसर लोकप्रियताकेँ महत्व दैत अछि (27)। ई लेखकक सोच आ दृष्टिपरक परिचायक थिक जे कतिपय उद्धरणक माध्यमे सुपुष्ट कयलनि अछि। हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क लिखल 'सीतानवमी'क पुनर्प्रकाशन भेल अछि। ई दस्ताबेज थिक। पं. गोविन्द झाक आ पं. भवनाथ झाक जूड़शीतल विषयक आलेखक संगहि लकडाउन पर कालिन्दी ठाकुरक आ सुधा मिश्रक विचारक संगहि विनोद चन्द्र झाक 'रे कोरोना' कविता आयल अछि। विनीत ठाकुरक दस गोट हाइकु कविता अछि तँ डा. महेन्द्र नारायण रामक 'दाढ़ी' सेहो। पाँच गोट पोथी समीक्षा मनमीतक अछि।

आंजुर वर्ष 33 अंक 07 क्रमांक 95, अगस्त-सितम्बर 2020 आयल अछि। ई अंक आवरण पृष्ठ पर 'पावनि, वर्षा, बाढ़ि आ कोरोना' कहिक' आयल अछि तँ 'भसियाइत जिनगीक मुस्की पतबार'! सम्पादकीयमे कोरोनाक कहरसँ सावधान करैत आत्मविश्वास पर जोर द' सुरक्षित दिनचर्या चलयबा आ स्वस्थ रहबाक उपक्रम पर बल देल गेल अछि। एहि अंकक विशिष्ट उपलब्धि थिक भाषा वैज्ञानिक डा. रामावतार यादवक अनुसन्धानपरक आलेख 'मध्य मैथिलीक भाषा वैज्ञानिक वर्णन विश्लेषण मध्यकालीन नेपाल मण्डलक नेवार नृप लोकनि विरचित ओ नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखालयमे अनुरक्षित मैथिली नाट्य तथा गीति-कृति सभक हस्तलिखित नेवारी पाण्डुलिपिक परिप्रेक्ष्य मे'। ई हिनक गहन अध्ययन ओ शोधवृतिक परिचायक थिक।

एहिमे भाषाविद् जमिक' मेहनतिक' विभिन्न लेखकक पोथी ओ रचनाकेँ आधर बनाक' प्रस्तुत कयलनि अछि। कविताक क्षेत्रमे राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क बरिसैत मेघक नाम एकटा अपील आयल अछि। अपन जिनगीकेँ देखैत, वैषम्य जिनगीक चित्रण करैत अपन संस्कृति भाषाकेँ पुष्ट करैत बरखा-बुन्नीक माध्यमे जे गामकेँ मोन पाड़लनि अछि से आह्लादित करैत अछि। खासक' सौन्दर्य-भाव आ संवेदनामे कविताक सूक्ष्म दृष्टि अबस्से प्रभावित करैत अछि। जतेक दूर धरि ई कविता किछु कहबाक ढंगमे सपाटता ल' क' आयल अछि से व्यंजनाबोधमे कमीक आभास करा दैत अछि। डा. धीरेन्द्रक 'शतरूपा आ मनु' पोथीसँ प्रकाशित कथा 'पहाड़क फूल' आयल अछि। एकटा दैन्य परिवारक अभिशप्त जिनगीक व्यथा-कथाकेँ उभरैत आवेश, आवेग ओ संवेदनाक तरलतामे यथार्थक अनुभूति प्रकट भेल अछि। आनि-अपगरानि आ निकम्मापनसँ त्राण पयबाक हेतु 'वीर' अपन पहाड़ ओ फूलकेँ छोड़ि मोगलान जाय चाहैत अछि से धर्म बहादुरक संग। ओतय जाक' धन कमाओत आ माय ओ बहिनक काज आओत। कारण ई पहाड़ जतय ओ मात्रा भूख आ असुविधा देखलक ताहि विवशताक जिनगीसँ उबियाक' ओ व्यवस्थित जिनगी जीबाक आशामे ई जगह छोड़ि रहल छल। मुदा, ओकरा अपन जन्मभूमि छोड़बो कालमे पियरगर लागि रहल छैक। तेँ की ? परिवेशक प्रति सजग भ' जीवन्तमे जे जिनगीक सत्यता संवेदनात्मक ढंगे प्रकट भेल अछि सैह एहि कथाक सौन्दर्य थिक। कही तँ मानवीय संवेदनाक पारिवारिक सम्बन्धकेँ दर्शबैत मार्मिकतामे गहनतम पीड़ाकेँ झलकाबैत यथार्थपरक कथा थिक। पुस्तक-समीक्षाक अन्तर्गत चन्द्रेशक 'जीवनक यथार्थ आ यथार्थक त्रासदी एंटीवायरस' आ दिनेश यादवक 'मैथिली कथा आ कथाकारक मनोदशा' आयल अछि। एतद्रिक्त किछु आरो रचना सभ अछि।

आंजुरक अक्टूबर-नवम्बर 2020 प्रकाशित भेल अछि। सम्पादकीयमे मनोव्यथा प्रकट करैत सम्पादक स्पष्ट कयलनि अछि जे मैथिली एहिना खण्ड-खण्ड बँटैत रहत आ पहुँचल लोक एकरा अपना लेल उपयोग करैत रहत (2)'। ओ स्वार्थी तत्व पर जमिक' प्रहार कयलनि अछि। एहिमे दू गोट कथा अछि- चन्द्रेशक 'काल कोरोना' आ लक्ष्मण आ 'सागरक' कनसोह'। **कनसोह** पोथीक रूप ल' प्रकाशित भ' गेल अछि। संस्था बनाक', चन्दा उगाही क' कोनाक' जीवन-यापन क' सकैत छी आ लोककेँ ठकि-फुसिया क' अपन काज सुतारि सकैत छी ताहिकेँ प्रकट कयल गेल अछि। चन्द्रेशक 'काल कोरोना'मे कोरोनाक डेराओनपनक उल्लेख करैत स्पष्ट भेल अछि जे 'जाति-धर्म जतेक हानिकारक होइत अछि ताहिसँ विशेष राजनैतिक विभेदस्वरूप

व्यवस्था द्वेष दैत पीड़ित करैत अछि। ई साम्प्रदायिकताक द्वेषमे दुर्गन्धि पसारैत अछि। आ कोरोनासँ बेसिये क्षति पहुँचबैत अछि (8)'। परिवेशक प्रति सजगता आ मानवीय सम्बन्धक प्रति रागात्मकता एहि कथामे अछि। एहि अंकमे अश्विनी कुमार आलोकक भ्रमरसँ साक्षात्कार आयल अछि। एहिमे नेपाल-भारत साहित्यिक सम्बन्ध अदौसँ रहबाक बातकेँ स्वीकारैत मैथिली भाषा-साहित्य आ खासक' नेपालक मैथिली साहित्य ओ साहित्यकारकेँ भारतमे कतिया देबाक रोष प्रकट कयल अछि। मनमीतक 'जीवनीदायिनी शक्तिपूजक' 'छठि महापर्व' अछि तँ दिनेश यादवक मैथिली पोथी पर समालोचत्नात्मक विवेचना आयल अछि। प्रेम विदेहक मैथिली (आल्हा लय) कविता अछि जाहिमे मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक प्रति प्रेम झलकैत अछि। ई अंक कही तँ मैथिलीपुत्रा प्रदीप विशेषांक बनिक' आयल अछि जाहिमे कतिपय रचनाकारक रचना अछि।

'आंजुर'क अप्रैल-मइ 2021 अंकमे सम्पादकीय कविता अछि 'कोन मुँहे करू स्वागत हे नववर्ष अहाँके (2)'। एहिमे सम्पादक भ्रमर नववर्षमे जनसमाजकेँ चेतबैत स्वर्णिम जिनगीक प्रति आकांक्षा-भाव व्यक्त कयल अछि। चन्द्रेशक 'कोरोना कालमे कलमक नोंक पर बसल दर्द'मे कोविड-19केँ उल्लेखक' ओहि कालमे आयल पत्र-पत्रिका ओ पोथीक संगहि मिथिला-मैथिलीक गतिविधिक चित्रण भेल अछि। प्रो. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवक 'समकालीन-मैथिली भाषा : परिवेश आर विशेषता' आयल अछि जे हिनक गंभीर अध्ययन ओ सोचक परिचायक थिक। खासक' भाषा-विभाजनक दृष्टिएँ ई आलेख विशेष उपयोगी अछि। एहिमे पं. गोविन्द झासँ भ्रमरक पूर्व प्रकाशित साक्षात्कार अछि तँ कृष्ण कुमार कश्यपक सेहो। पर्व-विशेषमे जूड़शीतल' अछि तँ भ्रमरक 'देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुरक प्रसंग' आयल अछि। गाम जत्त' विस्मृत भ' रहल पड़ोसिया संस्कृतिमे भ्रमर चिन्तन-मननक माध्यमे 'इन्टरनेटी प्रेमी' सभ पर चोट करैत पड़ोसिया संस्कृतिक कटैत स्वरूप पर प्रश्नचिन्ह् ठाढ़ कयल अछि। मनमीतक 'मुक्ति दस्तावेज कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी' भ्रमरक पुस्तक-समीक्षा आयल अछि तँ डा. रामदयाल राकेशक उपन्यास 'कोरोना' पर डा. रेवती रमण लालक विचार उभरिक' आयल अछि।

'आंजुर'क जून-जुलाइ 2021 अंक मुख्यत: 'एकटा आओर वसन्त: नाटकसँ फिल्म धरि' पर केन्द्रित अछि। चेतना समितिक इतिहासक झलकी 'चेतनाक समिति पटनाक हमर सचिवत्व कालावधि' रामकिशोर झा 'विभाकर'क आयल अछि। ई आलेख चेतना समितिक अशुद्धि इतिहासकेँ शुद्धक' पाठकक सोझाँमे रखैत अछि।

चन्द्रेशक 'विमर्शक नव जमीन प्रस्तुत करैत 'राज' आयल अछि जाहिमे राजक जनवादी अवधरणा पर प्रकाश देल गेल अछि। अशोक झाक 'बाबू हम मोची' कविता अछि। सम्पादकीयमे अभिजनक अभियानक चर्चक माध्यमे 'एकटा आओर वसन्त' नीक बेजाए अनुभूतिक क्षण' आयल अछि।'दस्तावेज'मे चन्द्रेशक सोमदेवक संग साक्षात्कार अछि। डा. कमलकान्त झाक 'एक झूठ सय झूठ' यथार्थ पर आधारित अछि।

आवरण पृष्ठ पर 'निष्ठाक पावनि छठि' ल' **आंजुर**क अक्टूबर नवम्बर 2021 आयल अछि। सम्पादकीय पाबनि-तिहारक संग हुलसैत मोनमे स्पष्ट भेल अछि जे 'आनन्द जरूर उठाउ, मुदा अपना वा आनकेँ दुख द' क' नहि (2)'। तात्पर्य जे कोरोनाक लहरि कम होइतो कोरोनाक कहरसँ बाँचियेक' पर्व-तिहार मनयबाक चतौनी अछि। एहिमे पावनि-तिहारक क्रममे 'मिथिलांचलके छठि निष्ठाक पाबनि' भ्रमरक आयल अछि तँ मनमीतक '**आदिशक्ति दुर्गाः नमस्तस्यै नमो नमः**' अछि। डा. जयधारी सिंहक **विद्यापति कृत दुर्गाभक्ति तरिगिंणी : दुर्गापूजा पद्धति** जे पूर्व प्रकाशित अछि तकर पुर्नप्रकाशन भेल अछि। चन्द्रेशक '**दलित चिन्तनः विमर्श आ चेतना**' आयल अछि। एहिमे स्पष्ट भेल अछि जे सर्वोपरि आत्मचेतना जागृति होयबाक थिक जे आत्मविश्वास बलें संघर्ष पथ पर डेग आगाँ उठाक' दलित वर्ग महत्तम आसन पर आसीन होयत (32)'। कुमार अभिनन्दनक '**सलहेस गाथाक बदलैत स्वरूप सतीमामा**' आयल अछि। भ्रमरक '**भानुभक्तीय रामायणमे सीताचरित** अछि। मुन्नाजीक '**बीहनि कथा : मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष**'मे लेखकक विचार अछि।

डा. उषा चौधरीक 'मिथिला ओ मैथिली साहित्यमे नारी जागरण आयल अछि जे विभिन्न पोथीक आधार पर प्रस्तुत अछि।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे 'आंजुर' अपन टेक रखने समयबद्ध ढंगे प्रकाशित भ' रहल अछि। सुविज्ञ साहित्यकार, सम्पादक ओ पत्रकार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अपन दम-खम बलें ई पत्रिका प्रकाशित क' रहल छथि। हुनक पत्रिका प्रकाशित करबाक अपन ढंग छनि। ओ पत्रकारिताकेँ खेल-तमाशा बुझि नहि प्रकाशित करैत छथि। ओ सदति ठोस आ मूल्यबोधक पत्रिकाक आकांक्षी छथि। ई सत्य अछि जे एहिमे किछु कमजोरो रचना प्रकाशित भ' जाइत अछि तँ सेहो स्वाभाविक अछि। कारण, रचनाक अनुपलब्धतामे एहन रचना आबि जाइत अछि। मुदा, **आंजुर** मे अंजुरी भरि जल पीबि आछौं नहि होम' चाहैत छथि। ओ देशसँ अन्तर्राष्ट्रीय धरिक लेखकसँ सम्बन्ध साधैत रचना प्रकाशित करय चाहैत छथि। जेँकि सामाजिक सरोकारसँ

रचनाकारक रचनात्मक सम्बन्ध कटि रहल अछि तेँ जँ कतहु जनजीवनक जटिलताक गेंठ खोलबामे पछुआ किएक ने जाइत होअय, मुदा ओ स्तरीय पत्रिका बनयबाक भरपूर प्रयास करिते छथि। कोनो सम्पादककेँ मनोग्रन्थिसँ सदति पत्रिकाकेँ बचायबे उद्देश्य रहबाक थिक।

आइ जखन कि मैथिलीक पोथी ओ पत्र-पत्रिकाक बिक्रीक दु:स्थिति अबस्से चिन्ताजनक रहल अछि। ओना, किछु प्रकाशक अहम्मन्यतामे हजार-बजार पोथी बिकयबाक बात करैत छथि। वास्तविक स्थिति यैह अछि जे आंगूरे पर प्रकाशित जखन होयत तखन हजारक हजार बात करब कतेक उचित अछि? किछु रचनाकार तँ अपन मोनक कुण्ठा बहार करबाक हेतु रचनामे अपन महत्वाकांक्षाकेँ जगजियार करैत अछि। स्वार्थी तत्त्व तँ अपन स्वार्थ साधिते अछि। मुदा, भ्रमर एकटा मिशन जकाँ पत्रिकाकेँ प्रकाशित करैत छथि। एहिसँ मैथिली भाषाक सम्मान ओ मिथिलाक हितकेँ साधैत छथि। ओ सामाजिक चेतना जाग्रत करबाक उद्देश्येँ **आंजुर**केँ अपन लक्ष्य बनौने छथि। ओ पत्रिकामे प्रयोग आ चुनौतीकेँ स्वीकारैत नव ढंगे पत्रिका प्रकाशित करय चाहैत छथि। मुदा, हुनक मोनक बात मोने रहि जाइत छनि। कारण, कैकटा रचनाकार गछियोक' ससमय रचना उपलब्ध नहि क' पबैत छथि तँ ओ उदास भावें वा कही तँ खिन्न भावें मोन मारिक' कमजोरो रचनाकेँ प्रकाशित करैत छथि। ओ जनैत-बुझैत छथि जे किछु अलूल-जलूल रचना प्रकाशित भ' रहल अछि। तेँ की? ससमय प्रकाशित होयबाक चिन्तामे पत्रिका प्रकाशित कैये लैत छथि। ओ अपन पत्रिकामे कोनो ने कोनो रूपमे यथार्थक मूलवत्ताक प्रश्न उठबिते छथि।

'**आंजुर**' आर किछु करय वा नहि, मुदा लेखकक चिन्तन मनन आ संवेदनाकेँ उभारिक' यथार्थसँ साक्षात् करबिते अछि। एहिमे समयक समकालीन सत्य देखार होइत अछि। खासक' सोचबा-विचारबाक नव उर्जा प्रदान करैत विचार-शक्ति अन्त:स्फूर्त करैत अछि। अंकक सभटा रचना नीक, आरो नीक बनय से सभ केओ चाहिते अछि। आइ जखन कि मैथिलीमे पत्रिकाक आ खासक' नेपालमे अभाव अछिए ताहि संक्रमणक स्थितिमे 'आंजुर'क खगता अछिए। सम्पादकीय विवेकमे परम्पराबोध आ आधुनिकताबोधक संगहि समकालीनता निखरिक' आयब आंजुरक विशेषता थिक। मुदा, इहो नकारल नहि जायत जे शुद्ध पत्रिका प्रकाशित करबाक हेतु किछु खास मेहनतिक आवश्यकता अछिए। तेँ की? रचनात्मकताकेँ धार दैत 'आंजुर' पाठकक संग भावनात्मक सम्बन्ध बनबैत अपन इतिहास अपने बना रहल अछि।

उपसंहार आ निष्कर्ष

मध्य धनुषाक बघचौड़ामे जन्मग्रहण कयने रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' स्वेच्छासँ लेखनकेँ पेशाक रूपमे अंगीकार कयने छलाह। अधिकांश साहित्यकार अन्य पेशा संगहि लेखन आ अध्ययन-अनुसंधान करैत छथि, मुदा ओ फूल टाइमर लेखक छथि। लगभग पचास वर्षीय लेखन कालमे प्रत्येक वर्ष करीब चारि गोट पुस्तक लिखब आ प्रकाशित करब कोनो मैथिली साहित्यकारक वास्ते असम्भव अछि, मुदा भ्रमर से रेकर्ड बना चुकल छथि। मैथिली साहित्यमे सर्वाधिक पुस्तक लिखनिहार, सम्पादन कयनिहार तथा प्रकाशन कयनिहार सम्भवत: पहिल व्यक्ति छथि भ्रमर।। नेपालक सन्दर्भमे तँ छथिहे।

हुनक समग्र कृतिसभक मूल्यांकन कयलापर ओ साहित्यिक साधककेँ रूपमे देखना जाइत छथि। कारण सक्रिय लेखन-कालक करीब पाँच दशकमे ओ करीब पचास गोट पुस्तक लिखि चुकल छथि। विधागत विविधताक आधारमे देखी तँ ओ कविता, गीत, गजल, कथा, नाटक, यात्रा, निबन्धादि संगहि गहन विषयपर अध्ययन-अनुसंधान सेहो कयने छथि। एहि तरहें भ्रमर ने मात्र मैथिली साहित्यक अपितु नेपाली साहित्यमे सेहो अपन फरक पहिचान बनाबयमे सफल छथि। मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आ लोकगाथा सभक विषयमे हुनकाद्वारा कयल गेल अध्ययन-अनुसंधान संग्रहनीय अछि। आधुनिकताक संगहि लोप होइत जा रहल लोकगाथा सभक अध्ययनक अनुसंधान आ प्रकाशनमे सेहो हुनक योगदान अतुलनीय अछि।

एहि लघु शोधमे भ्रमरकेँ व्यक्तित्व आ कृतित्वक समग्र अध्ययन सम्भव नहि छल। आबयबला दिनमे एहि विषयपर शास्त्रीय अध्ययन-अनुसंधान करयबला शोधकर्ता सभ निम्न शीर्षकपर अनुसन्धान क' सकैत छथि :

क) भ्रमरक समग्र व्यक्तित्व

ख) भ्रमरक सम्पादन कला

ग) लेखनकेँ पेशा बनेबाक लाभ-हानि

घ) भ्रमरक यात्रा साहित्य

ङ) भ्रमरक साहित्यमे वर्णित नारी मनोविज्ञान आदि

सन्दर्भ–सूची

1. रामभरोस कापड़ि भ्रमर : 'घरमुँहा' मैथिली उपन्यास, जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान, जनकपुरधाम 2068
2. अजित आजाद, 'जीवन मूल्यक पक्षमे ठाढ भ्रमरक गजल' : आलेख। प्रकाशित : 'आँजुर' मासिक पत्रिका। समीक्षा अंक। वर्ष 25 अंक 9 समीक्षा अंक। चैत्र बैशाख 2072। सम्पादक : रामभरोस कापड़ि भ्रमर
3. चन्द्रेश, अस्मिता, अस्तित्व आ अभिव्यक्ति। (नेपालक अधुनातन मैथिली साहित्य)
4. जगदीश घिमिरे : 'सकस' नेपाली उपन्यास, प्रकाशक : जगदीश घिमिरे प्रतिष्ठान, रामेछाप मन्थली 2069 साल।
5. धीरज कुमार 'श्रेष्ठघुर' नेपाली उपन्यास। ऐरावत प्रकाशन बागबजार, काठमाण्डौ, प्रथम संस्करण 2064
6. डा. धीरेन्द्र, 'काव्यशास्त्रक रूपरेखा'
7. नन्ददुलारे वाजपेयी 'साहित्य विवेचन', आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली 13 जुलाई 1952
8. नयनराज पाण्डे : 'लू' नेपाली उपन्यास । सांग्रीला बुक्स, बागबजार काठमाण्डौ 2068 साल चैत
9. डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन : 'नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास', साझा प्रकाशन, पुल्चोक
10. डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, 'नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास' प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी काठमाण्डौ
11. प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह : 'भारतीय काव्य शास्त्र', लोकभारती प्रकाशन ईलाहाबाद

12. रमेश रंजन : 'कथा यात्रा', सम्पादन, प्रकाशक : रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम
13. रमेश रंजन : 'सङ्गोर' मैथिली उपन्यास, फाईन प्रिन्ट, आइएनसी, आनन्दमय मार्ग, धुम्बाराही, काठमाण्डौ
14. रामभरोस कापड़ि भ्रमर : 'सुरेन्द्र लाभ नेपालीय मैथिली उत्कृष्ट गल्प' सम्पादक : प्रकाशक : मैथिली साहित्य प्रकाशन प्रतिष्ठान

अनुसन्धान :
भक्तपुरक दरबार क्षेत्रमे एखनो तिरहुतिया संगीतक ताल सुनि पड़ैछ

कथा नव नहि अछि आ ने हमर उद्देश्य गओले गीतके फेरसँ गाबि श्रोताकेँ मोन दग्ध करबाक अछि। सभ जनैत अछि कर्नाटवंशी राजा हरिसिंह देवक राज्य पतनक बाद हुनक परिवार नेपाल (काठमाण्डू उपत्यका) आयल आ भक्तपुर राज दरबारमे शरण ल' अन्तत : एकटा शक्तिशाली आ प्रभावपूर्ण राज्य व्यवस्थाक प्रतिपालन करैत रहल।

कर्णाटवंशी सामन्त नान्यदेव (1154-1205 वि.स.) सँ ल' अन्तिम शासक आ लोकप्रिय चर्चित राजा हरिसिंह देव (1361-84) वि.स. धरिक तिरहुत राज्यक कथा आब ततेक अबूझ नहि रहल अछि। हँ, तखन खोज-बीनक काज एखनो बाँकी छैक, जाहि दिस अनुसन्धाता लोकनि ध्यान नहि द' रहल छथि। वीरगंजक बासुदेव लाल दासजी कर्नाट शासक सभक शासन व्यवस्था पर गम्भीर अध्ययन कयने छथि, मुदा हुनको प्रकाशित नहि भेने सत्य-तथ्य बुझबा योग्य नहि अछि। तथापि मिथिलाक आ नेपाली विद्वान इतिहासकार लोकनि तिरहुत राज्य (जकरा नेपालक प्रमुख प्रमाण मानल जायबला गोपाल वंशावली कार लोकनि डोय राज्य कहैत छथि) खूब लिखलनि अछि। मुदा, काठमाण्डू उपत्यका पर तिरहुत राज्यक अमिट छाप रहितहुँ तकरा किछु उपेक्षित भावें गोपाल वंशावलीकार लोकनि देखयबाक प्रयास कयने छथि। डोय शब्द तेहने तुच्छता हेतु प्रदर्शित शब्द छैक, जे कतहु ने कतहु आक्रोश आ विवशताक द्योतक अछि। आक्रोश एहि दुआरे जे जाधरि सिमरौनगढ़मे तिरहुत राज्य रहल (लगभग 228 वर्ष) ताधरि ओतुक्का राजा लोकनि काठमाण्डू पर आक्रमण करैत रहलाह। एखन धरि प्राप्त सूचना अनुसार 6 बेर ई आक्रमण भेल रहए, जाहिमे दू-तीन बेर सफलता तँ नहि भेटलै, मुदा जखन भेटलै तँ सौंसे उपत्यका दासोदास भ' गेल रहए। तिरहुत राज्य हेतु कर देबाक लेल गछि क' ओकरा अधीनता स्वीकार

क' लेने रहए। आक्रमणक अन्तिम स्वरूप हरिसिंह देवक समयमे भेटैत अछि जखन मंत्री चण्डेश्वरक नेतृत्वमे उपत्यका विजय कयल गेल रहय आ जत्त' चण्डेश्वर एक वर्ष रहि क'असुलने रहए आ अपनेसँ पशुपतिनाथक पूजा-पाठ क' बागमतीक किन्हेरेमे अपन आयोजन अनुसारक धन तुलादानमे देने रहए। गोपालवंशावलीकार एहि बातकेँ लिखबाक हेतु विवश भेल, मुदा ओ आक्रमण क' विजयी तिरहुतक भारदारक नाम उल्लेख नहि कयलक। ई तँ विवाद **रत्नाकर**मे कयल गेल चण्डेश्वरक वर्णनसँ ज्ञान होइत अछि।

''श्री चण्डेश्वरमन्त्रिणा मतिमातानेन प्रसन्नात्मना
नेपालखिल भुमिपाल जयिना धर्मेन्दुदुग्धाब्धिना''

''अदित तुलितमुच्चैरात्मना स्वर्णराशि
निधिरखिल गुणनामुत्तर: सोमनाथ''

वि.स. 1371, मार्ग शुक्लमे कयल गेल ई तुलादन जतबे महत्वक अछि, ओतबे एहिमे चण्डेश्वरके नेपालक राजा जितल कहि सम्बोधन कयल गेलासँ काठमाण्डू उपत्यकामे सभकेँ परास्त क' अपन सत्ता स्थापित कयने मंत्रीक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल देखबैत अछि। एहि तरहें कर्नाट शासक लोकनि काठमाण्डूक शासक सभक लेल आदर्श पुरुष रहल छलाह। आ बहुतो तरहक समाजिक, सांस्कृतिक रुपान्तरण उपत्यकामे तिरहुतेक देखाउसे कयल गेल।

नेपालक इतिहासकार लोकनि, अनुसन्धाता लोकनि मानैत छथि, तिरहुत राजा सभक निरन्तरत आक्रमण, काठमाण्डूमे बसोबास आ बढ़ैत प्रभावक कारणे उपत्यका बासी मैथिली भाषा, सभ्यता आ रहन सहन जानबा पर विवश भेल।[1] हरिसिंह देव द्वारा सिमरौन गढ़सँ भगैत काल अपन कुलदेवी तुलजा भवानीक संगे ल' पहाड़ दिस पड़एलाह, जकर स्थापना भक्तपुर दरबारमे कयल गेल आ जे तकरा बाद काठमाण्डू उपत्यकाक सभ राज परिवारक मान्य कुलदेवीक रूपमे प्रतिष्ठित भेलथि।

प्राप्त एकटा रिपोर्ट अभिलेखमे कहल गेल अछि—तुगलक द्वारा पराजित कयलाक बाद परिवार आ मंत्री सहित तिरहुतक राजा जंगल पैसल। पुत्र एवं पत्नी देव लक्ष्मी सहित सहायता मांगबाक लेल नेपाल प्रवेश कयल।[2]

यद्यपि विवादक विषय रहिए गेल अछि जे हरिसिंह देव की उपत्यका गेल छलाह अथवा जेना गोपाल वंशावली कहैत अछि दोलखा जयबाक बाटमे सिंन्धुली

लग टिंपाटन मे हुनक मृत्यु भ' गेलनि।[3]

विदेशी विद्वान (हडशन आ लेखक) सभक द्वारा देल उदाहरणसँ हरिसिंह देव काठमाण्डू पैसल छलाह। डी. राइट सेहो कोनो वंशावलीक आधार पर एकरा मानैत छथि। मुदा, इतिहासक अनेको प्रसंग, शिलालेख सभक प्रमाणिकतासँ ई सम्भव नहि बुझना जाइछ। भक्तपुर दरबारमे हरिसिंह देवक पत्नी देवल देवीक उपस्थिति, सत्ता विस्तार आ अन्ततः पुत्र जगतसिंहकेँ राज अधिकार बनयबाक संगहि पोती राजल्ल देवीकेँ महारानी बना अत्यन्त शक्तिशाली रूपें राज्य संचालनमे मुख्य भूमिका देखि पड़ब हरिसिंह देवक अनुपस्थिति बोध करबैत अछि। पोती राजल्ल देवीकेँ मधेशसँ (दक्षिणसँ) जयस्थितिकेँ आनि विवाह क' सत्तापर पूर्ण अधिकार, देवल देवीक राजनीतिक चतुरता दखबैत अछि। स्मरणीय रहए—तत्कालीन भक्तपुरक राजा रुद्रमल्ल देवल देवीक भाइ छलखिन्ह आ हरिसिंह देवक सार। एहन अवस्थामे हरिसिंह देवक भक्तपुरमे उपस्थिति अन्ततः राज सत्ताक केन्द्रबिन्दुमे रहितैक, देवल देवीक नहि। तेँ बाटमे हुनक स्वर्गारोहण बेसी समीचीन बुझाइत अछि।

हम अपन मूल विषय पर अयबासँ पूर्व कर्नाटवंशीय राजा लोकनिकेँ काठमाण्डू उपत्यकाक राजपरिवारसँ पुर्वोमे सम्बन्ध स्थापित रहैक ताहि दिस ध्यान आकृष्ट कर' चाहैत छी। यद्यपि एकर उल्लेख एतुक्का वंशावलीकार लोकनि दबल मुँहे कयने छथि, कानो अभिलेख आगाँ लयबाक प्रयास नहि भेल अछि। तथापि हम सभ नेपालक अनुसन्धानता सभक रिपोर्टमे देखैत छी जे भक्तपुरक रद्रमल्लक बहिन देवल देवीसँ हरिसिंह देवक विवाह भेल छल, नान्यदेवक दिआद श्याम सिंह देवक बेटी नरेन्द्रलक्ष्मीक विवाह सेहो उपत्यका राजपरिवारमे भेल छल आ भक्तपुरक राजा राजदेवक विवाह सेहो कर्णाट कुलमे भेल छलन्हि। तैयो तिरहुतक राजा लोकनि काठमाण्डू उपत्यका पर आक्रमण करैत रहलाह। ई आक्रमण आर्थिक बेसी रहैक, राज्य प्राप्ति कम। सर्वप्रथम राजा न्यायदेवक समयमे 1111 ई. मे काठमाण्डू उपत्यका पर तिरहुतिया सेनाक आक्रमण भेल रहैक।[4]

सफलता नहि भेटलैक तँ राजा रामसिंह अपने दू बेर उपत्यकामे आक्रमण कयने छलाह। वि.स. 1301-2 मे आ वि. स. 1356 मे। अन्तिममे नीक सफलता भेटल छलनि।

अर्थात काठमाण्डू उपत्यकाक राजघरानामे सम्बन्ध रहितो आक्रमणक क्रम जारी छल। तैयो दुनू प्रदेशक वैवाहिक सम्बन्ध निरन्तर चलैत रहल जे हरिसिंह देव धरि आ तकरा बाद जयस्थिति मल्ल धरि जारी रहबाक प्रमाण भेटैत अछि।

आब हम कनेक फरिछा लेब' चाहैत छी जे कर्णाट वंशक राजाक संगहि भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक जे उच्च सम्बन्ध काठमाण्डू उपत्यका, बादमे भक्तपुर दरबार सँ छल तकर पृष्ठभूमिमे आर कोन कारण सभ छलैक। यद्यपि किछु आनो अनछुअल प्रसंगकेँ राखब हम समीचीन बुझैत छी।

पहिने हरिसिंह देवक आ देवलदेवीक प्रसंग

गोपाल वंशावलीकार हरिसिंह देवक मृत्यु दोलखा जाइत तीन पाटनक जंगलमे 1325 ई. मे भ' गेलैक से बात स्पष्ट रूपें कहने छैक। वास्तवमे अपन गुप्तचरक गलत सूचनाक आधार पर बिना तैयारीक दिल्लीक बादशाह गयासुद्दीन तुगलक विशाल सेनासँ भीड़ गेल छलाह। कहबाक जरुरति नहि तखन तक हरिसिंह देव अत्यन्त शक्तिशाली सेनाक अधिपति छलाह, मुदा तकर अवसर नहि भेटल छलनि। जेँ कि दिल्लीक बादशाह पछिमसँ लुटैत घुरि रहल छल, हिनका भेलनि जे सिमरौनगढ़ सेहो लूटत आ तेँ बिना कोनो तैयारीके युद्धमे बाझि गेलाह आ नीक जकाँ परास्त भेलाह। जँ ओ चुपचाप अपन राजमे सीमिति रहितथि तँ मिथिलाक इतिहास दोसर रहितैक, हँ, पृथ्वीनारायण शाह सन राजासँ दू चारि हाथ कर' पड़ितनि। तखन कि होइतैक, के जनैत अछि। जे से गोपाल वंशावली आ आन दोसर वंशावली हुनक मृत्यु ओतहि हयबाक उल्लेख करैत अछि। किछु मे नेपाल प्रवेशक बातो कयल जाइछ। जेँ कि गोपाल वंशावली हिनके वंशक राजा जयस्तिथि मल्ल के समयमे लिखल गेल अछि। तेँ ओकर विश्वसनीयताकेँ सोमदेव अस्वीकार करबाक अवस्था नहि छैक। बादमे प्रसंग एहि बातक पुष्टि करैत छैक।

हिनक मृत्युक बाद देवल देवी कोनो तरहे अपन भैया लग भक्तपुर पहुँचैत छथि। पुत्र आ किछु मंत्री, सैनिक राजग्राममे कैद क' लेल गेल रहैत छन्हि से प्रसंग आयल अछि।

एहि तरहें देवल देवी 1325 ई. मे अपन भैया लग जा शरण लैत छथि। बादमे हिनक मंत्री चण्डेश्वर राजग्राम जीति पुत्र आ मंत्रिलोकनिकेँ छोड़ा अनैत छथि। एहिसँ लगैत अछि जे चण्डेश्वर हिनका संगे भक्तपुर आयल छलनि आ हिनका संग पुरैत रहलनि। यद्यपि बादमे कतहु ओकर चर्च नहि अबैत अछि।

राजा रुद्र मल्लकेँ युथुनिमम दरबारमे रहैत राजनीतिक घटनाक्रम एतेक तेजीसँ घटित भेल जे देवल देवी रसे-रसे शक्तिशाली होइत गेलीह। रुद्र मल्लकेँ दू गोट बालक बच्चेमे काल कलवित भ' गेल छल। एक गोट बेटी छल, जकर पालन

हुनक दाई श्री पदुमल देवी करैत छलीह, तकरा सहयोगमे देवल देवी लागि गेलीह। रुद्रमल्लक बेटी नायक देवीक विवाह बनारसक कोनो राज कुमारसँ वि.सं.1386 (1929 ई.)मे कयल गेलनि। नायक देवी गद्दीक हकदार छलीह तेँ पति सेहो हकदार भेलाह। मुदा, पति हश्चिन्द्र देवकेँ राजघरानाक षडयन्त्रमे विष द' मारि देल गेल। तकरा बाद विधवा नायक देवी आ ओही दरबारमे रहैत देवल देवीक पुत्र जगत सिंह देवक बीच प्रेम सम्बन्ध बढ़ल आ विवाह भ' गेलै।[5] राजकाजक क्रममे जगतसिंह कैदमे पड़ि गेलाह आ ओत्तहि हुनक मृत्यु भ' गेलनि। मुदा, हुनका एकटा कन्या भेल छलनि राजल्ल देवी, जकरा बड़ जतनसँ देवलदेवी पोसलनि। ओ गद्दीक उत्तराधिकारी छलीह। 8बर्षमे हुनक विवाह अपने कुलक सिमरौनगढ़े दिससँ जयस्थिति मल्लके आनि क' देलकनि। काठमाण्डू उपत्यकाक राज परिवारमे जँ लड़का नहि रहैक तँ लड़कीक विवाहक हेतु दक्षिण दिससँ लड़का खोजि लाओल जाइक आ तकरा डोलापर चढ़ा मंगाओल जाइक। बादमे ताहि युवक संग विवाह सम्पन्न होइक। एकरा 'डोलाजी प्रथा'कहल जाइत छलैक। से जयस्थिति मल्ल मंगाओल गेलाह आ 1354 ई. मे राजल्ल देवीसँ विवाह करा देल गेल। देवल देवी अपन 40 वर्षक भक्तपुर दरबारक सत्तामे उपस्थितिक सभसँ सुखद आ शक्तिशाली रूपमे तखने अयलीह जखन अपने पोतीक विवाह अपने कुलक व्यक्तिसँ करयबामे सफल रहलीह। हिनक मृत्युक (1366 ई.) धरिक ई पूर्ण राजकीय सत्ताक 12 बर्षक अवधि देवलदेवीक हेतु महत्वपूर्ण रहल। वास्तवमे यैह हुनक चालीस बर्षक एकछत्र प्रभावपूर्ण उपस्थिति आ अंततः अपने सन्तानक हाथमे काठमाण्डू उपत्यकाक शासन-व्यवस्था आबि जयबाक संयोग कर्णाटवंशी राजा लोकनिक सम्पूर्ण उपस्थिति भक्तपुर राजदरबारमे देखबैत अछि। तेँ कला, भाषा, साहित्य, संस्कृतिक विकास चरम पर पहुँचैत अछि। जयस्थिति मल्ल नेपालक इतिहासमे अपन कृतित्वसँ एकटा अमीट छाप छोड़ने छथि, जकर एत्त चर्च अप्रसांगिक हयत।

तिरहुतक कर्णाटवंशी राजपरिवारक सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्थाक अनुकरण पूर्वहुसँ काठमाण्डूक राजपरिवार, एतुक्का लोक करैत छल, जखन स्वयं राजगद्दीए भेटि गेलैक तँ तकर विकास हैब स्वभाविक रहैक से भक्तपुरक दरबार क्षेत्रमे एखनो तकर अवशेष देखल जा सकैछ। हँ, ई दोसर बात छैक जे तकरा एतुक्का इतिहासकार लोकनि, अनुसन्धाता लोकनि अबडेरबाक प्रयास करैत रहल अछि। जखन तथ्य बाहर नहि अओतैक तँ मिथिलाक अन्वेषक लोकनि बुझताह कोना?

भक्तपुर दरबारक बर्तमान स्वरूप आ मिथिला कला

काठमाण्डू उपत्यकाक प्रमुख अध्यात्मिक, सांस्कृतिक नगर भक्तपुर एखन विश्वसम्पदा सूचीमे राखल गेल अछि आ विश्वभरिक पर्यटक एत्त दरबार अवलोकनक हेतु तांती लागल रहैत छैक।

हम सभ जखन मुख्य दरबज्जासँ दरबार परिसरमे प्रवेश करैत छी तँ मंत्रमुग्ध भ' जाइत छी। लगैए कोनो पुरना दरबारमे आबि गेल होइक। नजरि पड़ैत अछि शिखर शैलीक किछु मंदिर पर। पैगोड़ा छाप मंदिर नेपालक अपन स्वरूप छैक, मुदा शिखर तँ दक्षिणक प्रारूप थिक। नेपालमे ई सत्रहम् शताब्दी अर्थात भक्तपुरक राजा भूपतीन्द्र मल्लक समयमे आयल से विद्वान लोकनि कहने छथि। वास्तवमे भक्तपुर दरबारमे भूपतीन्द्र मल्ल बड़ सुधार कयने छलाह, नव नव वस्तु खड़ा कयलनि। ई मंदिर सभ हुनके देन सभ अछि प्रायः। हँ, दरबार आ तलेजु भवानीक मंदिर दिस मुँह कयने हाथ जोड़ि प्रणाम करैत एकटा नमहर स्तम्भ पर प्रतापी राजा भूपतीन्द्र मल्लक पीत्तरिक बैसल मूर्ति ढलौटमे बनाओल जड़ित अछि। लगमे जा निहारि क' मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक प्रेमी राजाकेँ नमस्कार क' वाम कातक स्वर्णद्वार दिस बढ़ैत छी। ई स्वर्णद्वार भक्तपुरक अन्तिम मल्ल राजा रणजीत सिंह बनौने छलाह। दर्शनीय एहि दरबज्जाक उपरी घेरामे तुलजा भवानीक भव्य स्वर्णमूर्ति बनाओल गेल छैक। मंदिरमे पुजारी छोड़ि दोसर ककरो प्रवेश नहि होइछ। मात्र एक दिन विजयादशमीकेँ लोक हुनक जात्राक क्रममे दर्शन क' पबैत अछि। तेँ माँ के प्रणाम क' भीतर प्रवेश करैत छी। अंगनई, फेरसँ कोठरीक बीच द' बाट आ तखन दरबारक अंगनई जे दहिन कात घूमि, उत्तर जा फेर पछिम घूमि मूल दरबारक मूल चौकमे प्रवेश भेटैत छैक। सभ सुरक्षाक दृष्टिसँ बनाओल सन। हिन्दूक हेतु मात्र आ विदेशी नहि। भारतीय विदेशी नहि गनल जाइछ। अंगनईमे गेलाक बाद मल्ल कालक छ सय वर्ष पूर्वक इतिहास आँखिक सोझाँ नाचए लगैत छैक। चारू कात काठ आ ईंट, पाथरक भवन। काठक कलात्मक खिड़की, दरबज्जा आ महिला सभक हेतु झरोखा। आँगनमे चबूतरा। हमरा तँ लगैत अछि जे ओहि पर नाटक मंचन, गीत, गायन आ आन समयमे प्रजाक फरियाद सुनबाक काज होइत छल एत'। तुलजा भवानी मंदिर दरबारक चौघरामे अछि। दरबज्जा बन्द छैक। ओत्तहिसँ प्रणाम करी....।

आइ महज दरबार टा देखबाक अथवा घुमबाक उद्देश्य नहि रहि गेल अछि। मिथिला संस्कृतिक कोन रूपे छाप एत्त' छैक, आइ हमरा सभक विरासत कतेक समृद्ध

अछि तकरो खोजबीन हमर लक्ष्य अछि। तकरा लेल हमरा संगे छथि नेपालक गनल गुथल मैथिल पुरातत्वविद तारानन्द मिश्र आ एखन त्रि.वि.वि.मे इतिहासक प्राध्यापक आ इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्वमे अध्ययनरत डा. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ। नीक अध्ययन छन्हि। नेवार छथि तेँ मैथिल संस्कृति प्रति इमानदार छथि। कर्णाटवंशीय संस्कृति आ परम्परा सम्बन्धमे ठोस रूपमे बतबैत जा रहल छथि। हुनके अनुसन्धानसँ हम सभ चारि गोट तथ्य जानबाक आ देखबाक अवसर पबैत छी जे सम्भवत: एखन धरि अज्ञात छल।

हमरा कयक बेर डा. प्रफुल्ल कुमार मौन कहैत छलाह। भक्तपुर दरबारमे कोनो ठाम मल्लराजा सभक काठक मूर्ति छैक, जँ अवसर भेटए तँ खोजू आ फोटो उठाउ। हम अपन जिज्ञासा श्रेष्ठजीकेँ कहलिएनि आ हमरा सभके मंदिरक पछिम दिस दोसर कात ल' गेलाह जकरा नेवारी में जहंचोक, जलद्रोनी चोक कहल जाइछ। मंदिरक ई पृष्ठ भाग अछि जकर छज्जीसँ निचाँक भागमे एक पंतिमे मल्ल राजा लोकनिक चित्र काठमे खोधल बनायल अछि। दहिनकात भक्तपुरक मल्ल राजा सभक जाहिमे भूपतीन्द्र मल्ल आ हुनक बालक रणजीत मल्ल धरिक चित्र अछि आ वामकात कर्णाटक राजा लोकनिक नान्यदेवसँ ल' हरिसिंह देव धरिक। दुनूक बीचमे तलेजु भवानीक मूर्ति अछि। सभ राजा लोकनि शाही पोशाकमे हाथ जोड़ने प्रणाम मुद्रामे अछि। सभसँ खूबीक बात छैक सभ मूर्तिक उपर काठक पट्टीमे राजा सभक नामो खोधल अछि। राजा भूपतीन्द्र मल्लद्वारा बनाओल गेल उक्त चित्र ऐतिहासिक अछि जकर चर्च कतहु नइँ भ' सकल अछि। फोटो खिचबाक मनाही छैक तेँ मोन मारिक' रहि जाइ छी।

हम सभ फेर अंगनई मे अबैत छी। आगाँमे श्री खण्ड खिड़की अछि। एत्त सेना सभ मात्र रहि सकैत छल। मुदा ओहिठाम अनेको महत्वपूर्ण शिलालेख, अभिलेख सभ अछि, भीतरमे भव्य सूर्यक मुर्ति छैक। कहल जाइछ कर्णाटवंशी लोकनि सूर्यवंशी छलाह। ओसभ दक्षिणमे जा सामन्त बनि काज करैत रहथि। नान्यदेव सेहो उत्तरी भारतक एहि क्षेत्रक सामन्त नियुक्त कयल गेल छलाह चालुक्य राजक दिससँ। तुलजा भवानी आ आब ई भव्य सूर्य मूर्ति चित्रमे। ओहुठाम कर्णाट राजा आ भक्तपुरक राजा सभक रंगीन चित्र बनाओल अछि। संरक्षणक अभाव छैक। सत्रहम शताब्दीक ओ चित्र सभ बदरंग भ' रहलैक अछि। किए केओ तकरा संरक्षित सुरक्षित करत।

हम सभ दरबारसँ बहराइत छी दरबज्जा पर। आब दोसर महत्वपूर्ण घटना दिस ल' चलैत छथि श्रेष्ठजी। सिमरौनगढ़ सँ आइ धरि कोना भक्तपुरक तलेजु भवानीक

सम्बन्ध छैक तकर रोमांचक कथा कहैत छथि। ई एहन प्रसंग अछि जकरा केओ लिखबो जरूरति नहि बुझलथि आने कतहु प्रचार छैक। हम ध्यान मग्न भ' विजयादशमीक दिन तलेजु भवानीक पूजा अर्चना आ नगरपरिक्रमाक विवरण श्रवण कर' लगैत छी।

विजयादशमीक राति 9-10 बजेसँ तलेजु भवानीक पूजनोत्सव प्रारंभ होइत अछि। ई पूजा एत्त' आइ छ: सय बर्षसँ सिमरौनगढ़क प्रतिनिधि एहि दिन करैत आबि रहल अछि। मूल दरबार आ मंदिरसँ बहराइत छी तँ खुल्ला जगह छै जत्त' छोटछीन चबूतरा छैक। दशमीक रातिमे तलेजु भवानीकेँ युद्ध पहिरनक स्वरूपमे पूजारीद्वारा एहि खुल्ला ठाममे लाओल जाइछ। एत' सिमरौनगढ़सँ आयल दूगोल प्रतिनिधिक संग पुजारीक रोचक सम्वाद होइछ।

पुजारी प्रश्न करैछ—अहाँ सभ कतयसँ आयल छी?

प्रतिनिधि उत्तर दैत अछि—तलेजु भवानी देश परिक्रमा करथिन्ह से सूनि हम सभ सिमरौनगढ़सँ दर्शन कर' आयल छी।

तखन पुजारी फेर प्रश्न करैछ— ठीके? जँ ठीक छै, तँ बताउ ओम्हरक हालचाल की छैक? कुशल क्षेम केहन छैक, ओतुक्का नगरवासी के एक दामके नौ पाथी भेटि रहल छै कि नहि?

प्रतिनिधि उत्तर दैत अछि—सभ ठीक ठाक छै, कुशल मंगल छैक। पहिने जेहन छल, एखनो तेहने अछि। एक दामके नौ पाथी चाउर भेटिते छैक।

तखन पुजारी आश्वस्त होइत कहैत छैक—तखन ठीक छैक। अहाँ सभ पूजा-आजा करै जाउ।

तखन ओ सभ अपना संगे लाओल फल-फूलसँ तुलजा भवनीक पूजा-पाठ करैत अछि। पूजा कयलाक बाद भवानीक स्वर्णद्वार लग ल' गेल जाइत छैक आ चन्द्रमाक गतिकेँ देखि निचका आ उपरका भागमे भक्तपुरक बाँटि परिक्रमा कयल जाइछ।

इतिहास, संस्कृतिविद डा. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ भावुक होइत कहैत छथि एहुसँ सैयौ बर्ष पूर्वक सिमरौनगढ़ आ भक्तपुर बीचक सम्बन्ध अर्थात् तिरहुत राज्य आ भक्तपुर राज्य बीचक धार्मिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध केँ जारी रखने अछि।

मन प्रसन्न भ' जाइत अछि। स्वर्णद्वारसँ बहार भ' आब विश्व प्रसिद्ध पचपन्न खिड़की बला दरबार (पचपन्न झयाले दरबार) लग जाइत छी। दरबार परिसरमे उत्तर दिस अवस्थित ई दरबार भूपतीन्द्र मल्लद्वारा निर्मित अछि। देश विदेशक हजारो लोक दैनिक एकर अवलोकन करैत अछि। कलात्मक खिड़की जे एक्के पतिआनमे पचपन्न

गोट जड़ल छैक, अद्‌भुत नमूना छैक। मुदा हमरा सभक विषय ई खिड़की आ भवन नहि छल। डा. श्रेष्ठ अपना तेइस दिनक श्रमसँ उद्धार कयल एकटा ऐतिहासिक वस्तुकेँ देखेबाक हेतु उताहुल छथि। नीचासँ देखबैत छथि — भवनक छज्जीक निचाँक काठक कलात्मक पट्टी आ ताहि पर बनल सुन्दर चित्र सभक बीचमे रागरागनीक चित्र आ उपर तकर नाम खोधल देखि हम सभ आश्चर्यचकित भ' गेल छलहुँ। भूपतीन्द्र मल्ल एहि तरहक संगीत प्रेमी रहथि ई बात ई चित्र सभ देखला पर स्पष्ट भ' जाइछ। ओहुना मल्ल राजा लोकनि एकसँ एक गीतिरचना, राग-रागिनीक संग करैत छलाह जे अभिलेखालय सभमे प्रमाणिक रूपमे विद्यमान अछि। एत्त' तँ कमाल भ' गेल छै— रागरागिनीक विधान अनुसारक काष्ठ चित्र आ ऊपर तकर नाम...वाह, जय हो भूपतीन्द्र राजा। वि.सं.1765 अर्थात 1705 ई. मे निर्मित ई दरबार राजाक सांस्कृतिक सोचकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहि खोपा (खोधरि, मुदा समतल चौकस) सभमे 149 गोट राग रागिनीक चित्र अंकित अछि। भैरब रागसँ प्रारंभ भ' नदनबर्द्धन रागिनी धरि अंकित अछि। सभक चित्र फूट-फूट अछि। जेँ कि सभक वर्णन करब एत्त' संभव नहि अछि, भविष्यमे आने लेखमे चित्रक संग राग-रागिनीक उत्कीर्ण चित्र सभकेँ पूर्ण विवरण देबाक प्रयास करब। एत्त' चित्रमे तकर एक झलकी देखल जा सकैछ।

भक्तपुर दरबार स्क्वायरक भ्रमण आ उपलब्ध जानकारी एवं तथ्य सभक अवलोकन मोनकेँ हरियर क' दैत अछि आ मोन होइत अछि काठमाण्डू घूम अबैत मैथिल लोकनि अपन छः सय वर्ष पूर्वक जीवित इतिहासक एतेक सुन्दर संरक्षण कयल ई ठाम अवश्य देखथि। ओहुना नेपाल मैथिली साहित्यक अजस्त्र भण्डारकेँ दुनियाँक आगाँ लओने अछि, एखनो हजारो पाण्डुलिपि जे बचल छैक एत्त' सुरक्षित, मुदा अनपढ़ धयल छैक। आब तँ सांस्कृतिक सम्बन्धक जीवंत क्षण सेहो एहिठाम पड़ल अछि। भक्तपुर दरबार पर मैथिलक हक अधिकार ककरासँ कम छैक?

सन्दर्भ स्रोत:

1. डा. राजाराम सुवेदी : नेपालको तथ्य इतिहास, प्रकाशक : साझा प्रकाशन, 2065 पृष्ठ 102
2. *तुरकैदुरिकृत सपरिवार तिरहुत राजा मन्त्रिभि : सहाररायं प्रविष्टः।*
   पुत्रेण सहिता पत्नी देवलक्ष्मी च स्वकुटुम्बै सहवल याचितुं नेपाले प्रविष्टति।।
   दोलखाक टिपोट पत्र, प्राचीन नेपाल अंक 13 पृष्ठ -46
3. गोपालवंशावली (46 पत्र) जगतसिंह देवसमाहित संगृह्य कृतं नायक देवी।। (28 पत्र)
4. धनव्रज वज्राचार्य : गोपालवंशालीको ऐतिहासिक विवेचन, कीर्तिपुर, 2064। पृष्ठ-86
5. गोपालवंशावली (कर्णाटक वंशज जगतसिंह देव समाहित संगृह्य कृतं नायक देवी। (28 पत्र)

शशि प्रकाशन

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रोमिशा मिश्रा

सम्पादक

चंद्रेश

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रोमिशा मिश्रा

शशि प्रकाशन